द्वितीय संस्करण
साढ़े पाँच रुपये

प्रकाशक | पुस्तक-भंडार
पटना
लहेरियासराय
राँची

मुद्रक | श्री हिमालय प्रेस
पटना

दो शब्द

जंगली जीव-जन्तुओ के सम्बन्ध में विशेष हाल जानने की इच्छा और कौतूहल बच्चों के मन में स्वाभाविक होता है। वे बड़े आनन्द और दिलचस्पी के साथ जानवरो की कहानियाँ पढ़ा करते हैं। इस प्रकार की कहानियो से केवल उनका मनोरञ्जन ही नहीं होता, बल्कि इसके साथ-साथ वे जीव-जन्तुओं के स्वभाव, तौर-तरीके और उनकी रहन-सहन के सम्बन्ध में भी बहुत-कुछ जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

इस पुस्तक की रचना इस उद्देश्य से नहीं की गई है कि कोरे प्राणिशास्त्र के सम्बन्ध मे बच्चों की ज्ञानवृद्धि हो। जीवजन्तुओं के सम्बन्ध में एक साथ ही बहुत-सी बातें जानने के फेर मे पड़कर, जिससे विषय जटिल और बोझीला न बन जाय, इसपर पूरा ध्यान रक्खा गया है। कहानियों के साथ-साथ जीवजन्तुओं के स्वभाव और उनकी रहन-सहन की मोटा-मोटी बातें सरस ढग से बच्चों के सामने रखने की चेष्टा की गई है।

पुस्तक-रचना का यह उद्देश्य कहाँ तक सफल हुआ है इसके विचार का भार भारत के आशास्थल उन सुकुमारमति बालक-बालिकाओं के ऊपर है जिनके हाथ यह पुस्तक पड़ेगी। इसे पढकर यदि थोड़ी देर के लिये भी वे अपने मन मे कौतुक एव आनन्द का बोध करेंगे तो लेखक इससे ही अपने श्रम को सार्थक समझेगा।

पुस्तक को बहुसख्यक चित्रो से सजाकर सर्वाङ्गसुन्दर रूप मे प्रकाशित करने का एक मात्र श्रेय पुस्तक भडार के अध्यक्ष तथा बाल-साहित्य के ख्यातनामा निर्माता आचार्य श्रीरामलोचनशरणजी को है, जिसके लिये लेखक उनका हृदय से आभारी है।

—लेखक

विषय-सूची

चित्र-सूची



चिड़ियाखाना किसे कहते हैं, जानते हो? कलकत्ता, बम्बई-जैसे बड़े-बड़े शहरों में एक बहुत बड़े घेरे के अंदर एक बगीचा होता है जिसमें भाँति-भाँति के फल-फूल की क्यारियाँ लगी रहती हैं। इस बगीचे में कितने ही मकान और छोटे-बड़े घेरे होते हैं जिनमें देश-विदेश से नाना प्रकार के पशु-पक्षी, जीव-जन्तु लाकर रक्खे जाते हैं। जिन सब जीव-जन्तुओं को तुम कभी देख नहीं सकते, जो घने जंगलों और सूनसान जगहों में पाये जाते हैं वे ही यहाँ पिंजड़े के अंदर बंद करके रक्खे जाते हैं और उनकी देखभाल के लिये कितने ही नौकर बहाल किये जाते हैं। इसे अँगरेजी में जू (Zoo) और हिन्दी में चिड़ियाखाना कहते हैं। जो लोग पहले-पहल कलकत्ता या बम्बई जाते हैं वे इस चिड़ियाखाने को जरूर देखते हैं।

चिड़ियाखाना देखने के लिये जो लोग जाया करते हैं उनमें छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों की संख्या ही सबसे ज्यादा होती है। और, वहाँ पहुँचने पर बच्चों की सबसे ज्यादा भीड़ उस जगह पर देखी जाती है जहाँ देश-विदेश से लाये गये तरह-तरह के बन्दरों के अड्डे रहते हैं। इन बन्दरों में बनमानुष जाति के बन्दरों के खेल-कौतुक को देखकर बच्चों को जितनी खुशी होती है उतनी और किसी चीज से नहीं। इसलिये आओ, तुम्हें चिड़ियाखाने की सैर कराते हुए सबसे पहले बन्दर और बनमानुष के पास ले चलता हूँ।





वानर

एशिया, अफ्रिका और अमेरिका इन तीन महादेशो में वानर पाये जाते हैं। इन सब जगहो में जितने प्रकार के वानर पाये जाते हैं, उनकी कई जातियाँ होती हैं। शकलसूरत, डीलडौल और रंग-भेद के कारण हम वानरों को तीन जातियों में बाँट सकते हैं। वे इस तरह हैं—

१. वनमानुष—इस जाति के बन्दर आकार में बहुत बडे और देखने में बहुत-कुछ मनुष्य-जैसे मालूम होते हैं। आदमी की तरह ही सीधा होकर खडे हो सकते हैं, चल सकते हैं और समझ-बूझकर काम कर सकते हैं। इस जाति के बन्दरों के पूँछें नहीं होतीं। इन्हें वनमानुप इसलिये कहते हैं कि ये मनुष्य से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं। बन्दर-जाति में इनका दर्जा सबसे ऊपर है।

२ लगूर—इस जाति के बन्दर साधारण बन्दरो की अपेक्षा आकार मे कुछ बडे लम्बाई लिये हुए होते हैं। इनकी पूँछें काफी लम्बी होती हैं। मुँह और हाथ-पाँवो की हथेलियाँ और तलवे एकदम काले रंग के होते हैं। यह चालाक भी खूब होता है।

३ बन्दर—बनावट में यह और सब बन्दरो की अपेक्षा छोटा होता है। पूँछ भी होती है। मुँह से दोनों तरफ गालों के पास दो थैलियाँ होती हैं, जिनमें यह खाने की चीजों को निगलकर रख लेता है। यह भी कम चालाक नहीं होता।

१—वनमानुष

वनमानुप चार प्रकार के होते हैं—चिम्पञ्जी, गरीला, ओरंग-उतान और गिब्बन।

चिम्पञ्जी

चिम्पञ्जी को यदि तुम देखो तो तुम्हारे मन में फौरन् ही यह खयाल होगा कि यह मनुष्य से कितना अधिक मिलता-जुलता है। जितने प्रकार के बन्दर होते हैं उन सबमें चिम्पञ्जी ही मनुष्य के साथ आकार-प्रकार में सबसे अधिक मिलता जुलता है। इसका जन्मस्थान पश्चिम और मध्य अफ्रिका है। इसकी लम्बाई अधिक-से अधिक पाँच फीट होती है। यह बहुत बलवान् होता है और इसकी बाँहें बहुत बडी होती हैं। इसके कान मनुष्य की तरह बडे-बडे और कपाल पर





मनुष्य के समान ही रेखाएँ होती हैं। चित्र में देखो, इसके अँगूठे कितने बड़े-बड़े हैं। यह खासकर जंगलों में रहता है, किन्तु कहीं-कहीं पहाड़ों पर भी पाया जाता है। तरह-तरह के फल, कन्दमूल और वृक्षों की कोपलें इसके मुख्य खाद्य पदार्थ हैं, किन्तु बन्दी अवस्था में इसे मांस भी खाते देखा गया है। आँधी-पानी से बचाव करने के लिये यह वृक्षों पर डाल-पत्तों से अपना घोसला बनाता है। यह गरीले के समान ही काले रंग का होता है, किन्तु उतना बदसूरत नहीं होता। इसका स्वभाव उतना कड़ा नहीं होता और यह सहज ही पास मान लेता है। वनमानुष जाति के बन्दरों में चिम्पञ्जी सबसे बढ़कर बुद्धिमान् होता है। इसके बुद्धिमानी के काम अगर तुम देखो तो चकित हो जाओगे।



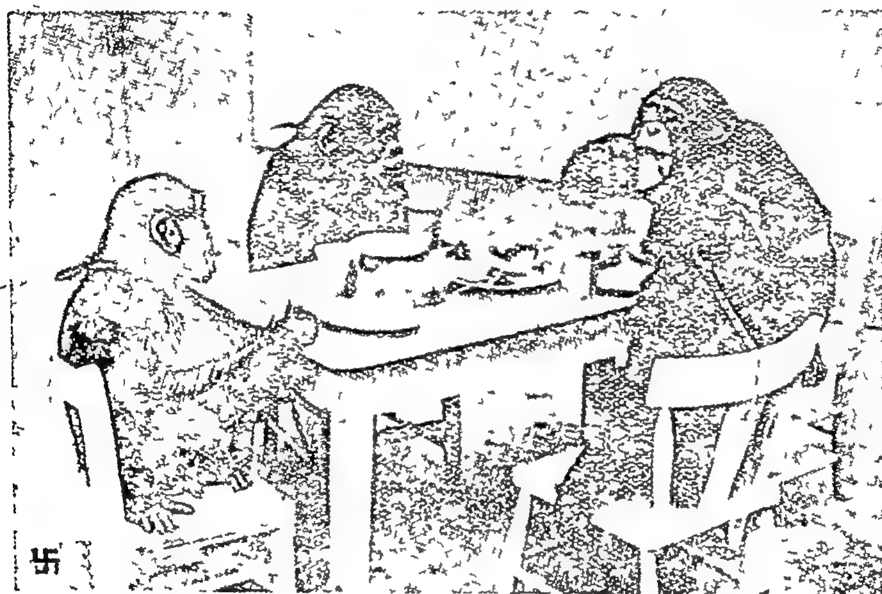
चिम्पञ्जी

सिखाने पर यह सब कुछ सीख सकता है। चिड़ियाखाने का रक्षक इसे चालाकी के बहुत-से दाँवपेच सिखा देता है। यह ठीक मनुष्य की तरह अपने रक्षक का हाथ या गाल चूमता है, खाने के



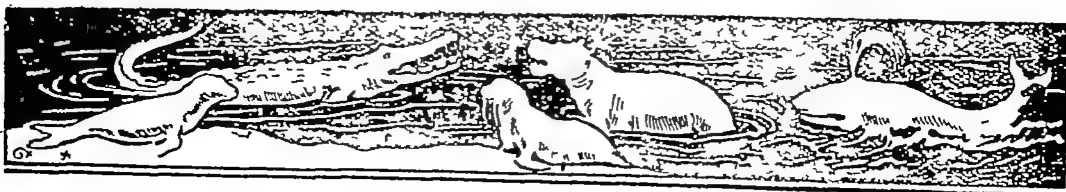


समय कुर्सी पर टेबुल के पास बैठता है और साहब-मेम की तरह काँटा-चम्मच से खाना खाता है, एक हाथ से गिलास उठाकर पानी पीता है और रूमाल से मुँह पोंछता है। खाते समय किसी चीज की जरूरत होने पर घंटी बजाकर खाना परोसनेवाले को बुलाता है। सिखलाये जाने पर यह नौकर के साथ हाथ में छड़ी लेकर सड़क पर घूमने जाता है, मोटरगाड़ी पर सवार होकर और साहबी पोशाक पहनकर सैर सपाटे के लिये निकलता है। लन्दन के चिड़ियाखाने में "सैली" नाम का एक चिम्प-



सवेरे का नाश्ता

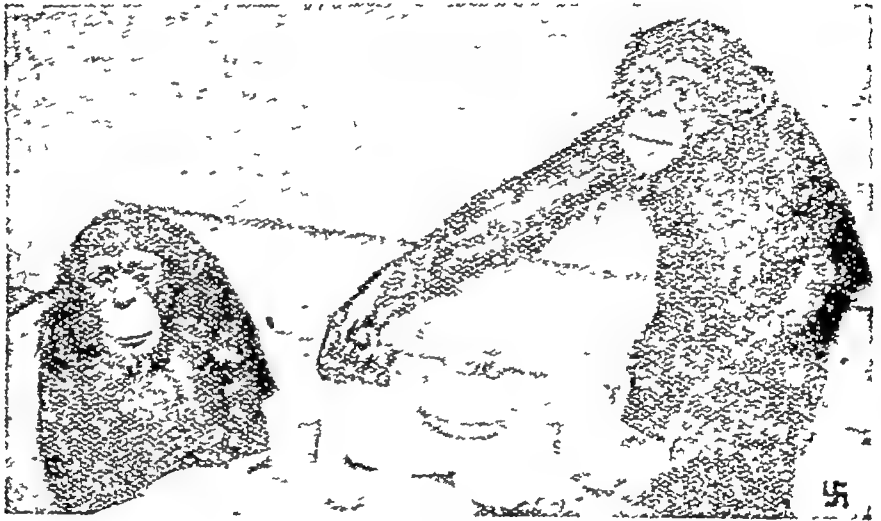
ञ्जी था जो गिनती करना सीख गया था और जब उसे एक निश्चित संख्या में अपने पिंजड़े का पुआल उठाने के लिये कहा जाता तो वह ठीक-ठीक गिनकर उठा लेता था। लन्दन के चिड़ियाखाने में इस समय एक मादा चिम्पञ्जी है जिसका नाम 'मेरी' है। इसकी बोली इसका रक्षक समझ लेता है। तुम्हे





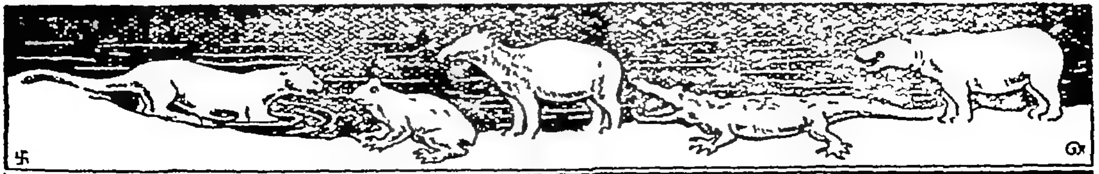
यह जानकर आश्चर्य होगा कि ये बन्दर भी आपस में बातचीत कर सकते हैं और पण्डितों ने यह पता लगाया है कि बहुत दिनों के अभ्यास से बन्दरों तथा दूसरे जानवरों की बोली भी समझी जा सकती है।

एक जर्मन साहब ने एक पालतू चिम्पञ्जी को तसवीर खींचना सिखलाया था। चिम्पञ्जी द्वारा खींची गई तसवीर को देखकर जब उसका मालिक साहब खुश होता तो बन्दर को भी बेहद खुशी होती। मालिक के खुश न होने पर चिम्पञ्जी मुँह भारी करके बैठा रहता।



साथी को अँगूर दे रहे हैं, मगर पेट भरा हुआ मालूम होता है!

विलायत की एक सर्कस कम्पनी में एक पालतू चिम्पञ्जी था जिसका चालचलन और तौर-तरीका बिलकुल भले आदमी-जैसा था। सर्कस के मालिक ने उसके लिये तीन कमरे खाली छोड़ दिये थे। बैठने के कमरे में उसके लिये टेबुल, कुर्सी, सोने के कमरे में पलंग और नहाने के कमरे में चौकी सजी हुई थी। देह में साबुन लगाकर वह नहाता और तौलिये से देह पोछता। कोई यदि उससे मिलने आता तो वह फौरन् कुर्सी छोड़कर उठता और उस व्यक्ति के साथ हाथ मिलाकर





पहले उसे कुर्सी पर बैठाता और फिर आप बैठता। बहुत बार यह भी देखा जाता है कि वह अपने मेहमान की प्याली में चायदानी से गरम-गरम चाय ढालता और इस प्रकार चाय ढालते समय वह एक बूँद भी नीचे नहीं गिरने देता।



सिरदर्द से परेशान!

एक बार सर हैरी जौन्सटन नाम के एक अँगरेज सज्जन अफ्रिका से एक चिम्पञ्जी के साथ अपने घर इंगलैंड लौट रहे थे। जहाज पर चिम्पञ्जी मुसाफिरों से खूब हिलमिल गया था और सब लोग उसे प्यार करने लग गये थे। वह सब मुसाफिरों के साथ ही टेबुल पर बैठकर खाना खाता। इसी तरह कुछ दूर तक चलने के बाद जहाज एक बंदर में आ लगा जहाँ एक महिला अपने छोटे बच्चे के साथ सवार हुई। वह छोटा बच्चा देखने में बड़ा ही खूबसूरत और भोला-भाला था जिससे सब लोग उस बच्चे को ही प्यार करने लग गये। चिम्पञ्जी को वह बहुत बुरा लगा और वह उदास रहने लगा। उसने समझा कि लोग अब मेरी खोज-खबर



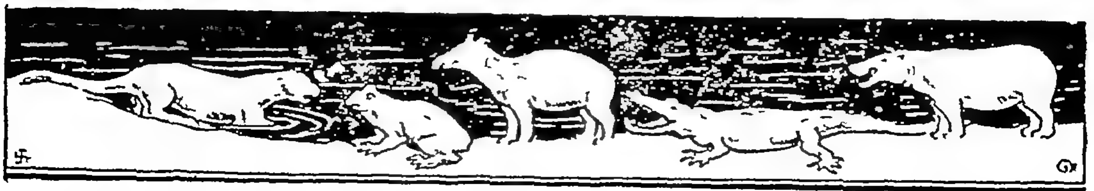


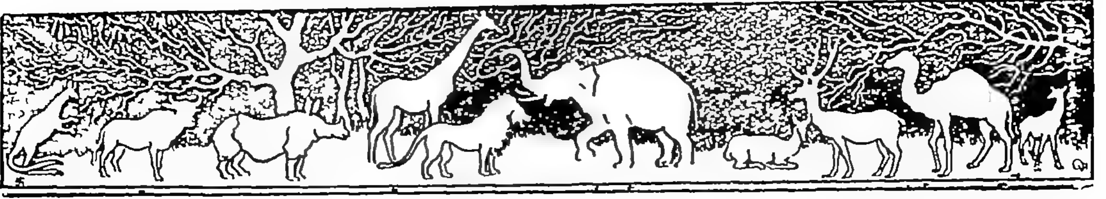
नहीं लेते और न मुझे दुलारते-पुचकारते हैं। एक दिन खाना खाते समय चिम्पञ्जी को टेबुल के पास नहीं देखा गया। सर हेरी जौन्सटन उसकी खोज करने जब जहाज के डेक पर गये तब देखा कि वह बच्चे को जहाज से समुद्र में फेंकने के लिये उतारू हो रहा है। बच्चा उस समय एक छोटे से पलंग पर सोया हुआ था। मौका देखकर चिम्पञ्जी ने सोचा कि इस बच्चे के कारण जहाज के मुसाफिर अब मुझे प्यार नहीं करते, इसलिये अगर यह बच्चा समुद्र में फेंक दिया जाय तो फिर मेरे प्यार को छीन लेनेवाला मेरा यह प्रतिद्वन्द्वी नहीं रह जायगा। यही सोचकर वह बच्चे की जान लेने जा रहा था जब तक सर जौन्सटन वहाँ पहुँच गये। उन्हें देखते ही उसने झट से बच्चे को पलंग पर सुला दिया और दौड़कर उनके पास चला गया।

अपने छोटे बच्चे के लिये चिम्पञ्जी की ममता बहुत होती है। एक बार एक मादा चिम्पञ्जी अपने छोटे बच्चे के साथ बैठी हुई बड़े गौर से एक शिकारी को देख रही थी। वह नहीं जानती थी कि बन्दूक क्या चीज है, किन्तु जब उसने शिकारी को बन्दूक ऊपर उठाये अपनी ओर निशाना करते देखा तब वह समझ गई कि वह उस पर चोट करना चाहता है। अब उस बेचारी ने एक हाथ से अपने बच्चे को अच्छी तरह ढँककर दूसरे हाथ से शिकारी को चले जाने का ठीक उसी तरह इशारा किया जिस तरह कोई स्त्री अपने बच्चे पर खतरा पहुँचने पर करेगी।

एक दूसरी घटना इस प्रकार है कि एक शिकारी ने एक चिम्पञ्जी पर गोली चलाकर उसे घायल कर दिया। गोली की चोट से उसकी अँगुलियों से लहू बहने लगा। तब उसने बड़े ही दीन भाव से अपना वह जख्मी हाथ उस शिकारी की तरफ बढ़ा दिया, मानो वह मौन भाषा में उससे कह रहा हो—"देखो तो निर्दय आदमी, तुमने यह क्या कर डाला है!" जिस शिकारी ने उसपर गोली चलाई थी, उसने लिखा है कि उस चिम्पञ्जी को देखकर मुझे मालूम पड़ा मानो मैंने कोई खून किया हो, और फिर मैंने कभी ऐसा काम नहीं किया।

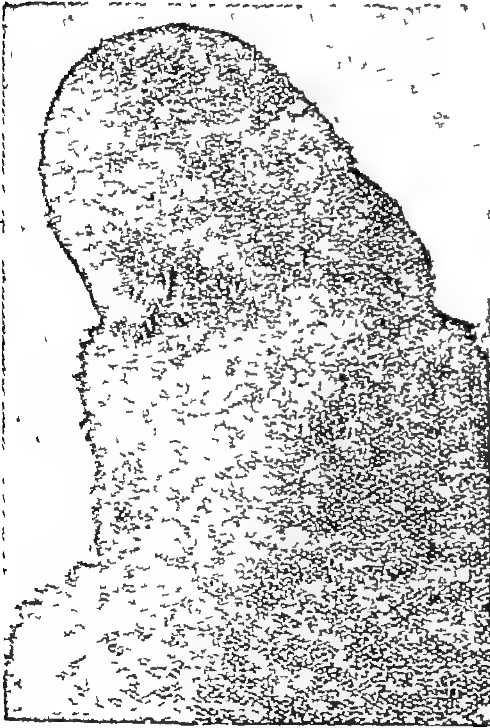
अमेरिका की राजधानी न्यूयार्क में बहुत-से पालतू चिम्पञ्जी रक्खे गये हैं जिन्हें एक साथ टेबुल पर बैठकर रकाबी और प्याली में भोजन करना सिखलाया गया है।





गरीला

अफ्रीका के पश्चिम भाग में घने जंगलो के वीच गरीला पाया जाता है। वनमानुषो में यह कद और डीलडौल से सबसे बड़ा तथा बहुत बलवान् होता है। देखने मे यह बडा बदसूरत होता है। मुँह एकदम काला, देह पर काले रंग के रोयें, चौडी विशाल छाती, चिपटी नाक और मुँह में दोनों तरफ बाघ की तरह बडे-बडे दाँत होते हैं। इसकी बाँहें भी काफी लंबी होती हैं। नर गरीला ऊँचाई में कम-से-कम ६–६॥ फीट तक और वजन में पाँच मन तक, यानी मनुष्य से तीन गुणा भारी होता है। मादा गरीला आकार में नर की अपेक्षा छोटी होती है और उतनी जबरदस्त भी नहीं होती। चिम्पञ्जी के समान गरीला भी पेडो पर रहता है और कन्दमूल, फल आदि खाना बहुत पसंद करता है। इसका मिजाज कडा होने पर भी यह जब तक नहीं चिढता, किसी को कुछ नहीं कहता। क्रोध करने पर यह बडा भयानक हो उठता है और उस समय मनुष्य के कौन कहे, एक चपेट में बाघ तक के दो टुकडे कर दे सकता है। गुस्से में आकर जब यह उत्तेजित हो उठता है उस समय यह बडे जोर से गरजता है। यह अफ्रिका के कुछ ही भागों में पाया जाता है जिससे इसके स्वभाव



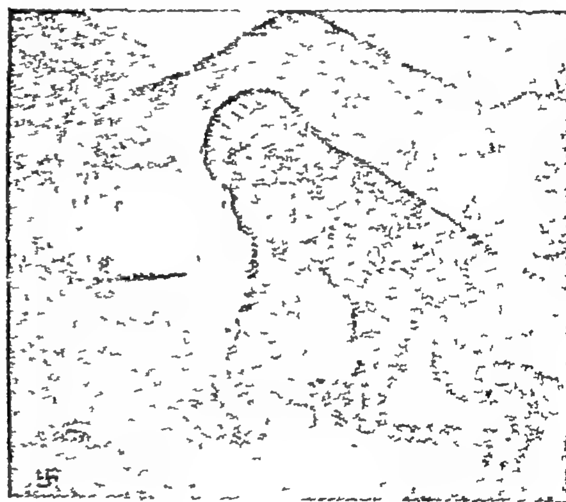
गरीला





के सम्बन्ध में लोगों को बहुत कम मालूम है। पेड के ऊपर डालों और पत्तों के बने घोसले में मादा गरीला सोती है और नर गरीला उसी पेड के नीचे उसके धड़ से अपनी बहुत बड़ी पीठ को सटाकर जमीन पर सोता है, ताकि वह अपनी स्त्री और बच्चों की चीते के आक्रमण से रक्षा कर सके।

गरीले के सम्बन्ध में नाना प्रकार की कहानियाँ सुनी जाती हैं। कहते हैं कि यह पेड़ की ओट में छिपा रहता है और मौका पाते ही शिकार पर टूट पड़ता है और उसका काम तमाम कर देता है। कोई-कोई यह भी कहते हैं कि गरीला शिकार को पकड़कर फौरन उसके टुकडे-टुकडे कर डालता है। यह भी सुना गया है कि गरीले की नजर में यदि कोई स्त्री पड़े तो उसकी खैर नहीं। यह उसे पकडकर ले जाता है और अपनी स्त्री बनाकर रखता है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि गरीला आपस में मनुष्य के समान ही बातचीत करते हैं प्रेम करते हैं, लडाई-झगड़ा करते हैं, और बूढ़े होने पर पहाड की चोटी से कूदकर आत्महत्या कर लेते हैं। किन्तु इन सब कहानियो में कितनी सचाई है, यह कहना कठिन है।



गरीला का बच्चा

इतना भयानक जन्तु होने पर भी गरीला मनुष्य से भय करता है और उसको देखकर भागना चाहता है। साथ में यदि मादा गरीला और बच्चे होते हैं तो वह इन सबको आगे करके सबके पीछे आप चलता है। अपनी जान देकर भी अपनी प्रिय स्त्री बच्चे को बचाना चाहता है।

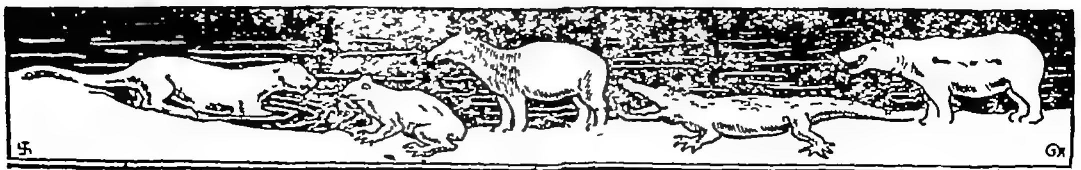


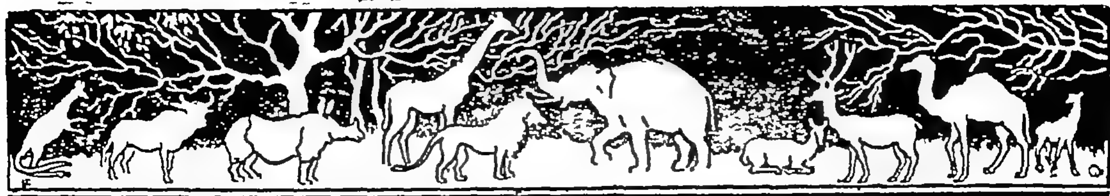


जब यह शिकारी का सामना करने के लिये निरुपाय होकर खड़ा हो जाता है उस समय इसका चेहरा घृणा और क्रोध से बड़ा डरावना मालूम पड़ता है। चौड़े जबड़ेवाला मुँह खोलकर, छाती पीट कर यह बड़े जोर से भयानक गर्जन करता है। उस समय बड़े-से-बड़े साहसी शिकारी के भी होश गुम हो जाते हैं। इस अवस्था में कभी-कभी यह चोट कर बैठता है और कभी एक ही जगह पर खड़ा रहकर अपने शत्रु के आक्रमण की बाट जोहता है। इस भयंकर अवस्था में यदि शिकारी से आक्रमण करने में कुछ भी भूलचूक हो जाय तो फिर उसकी जान की खैर नहीं।

मनुष्य के सिवा गरीले का और कोई शत्रु नहीं। हाथी, जंगली-भैंसा आदि पशुओं से यह तनिक भी नहीं डरता। बूढा होने पर यह अकेला सूनसान जगह मे रहना पसंद करता है। यह दल बाँध-कर (१० से ३० तक) एक साथ चलता है। मनुष्य के समान मादा गरीला भी एक बार में एक ही बच्चा जनती है। तुरत जन्मा हुआ गरीले का बच्चा मनुष्य के बच्चे से भी छोटा होता है, इसकी देह पर रोयें नहीं होते और वह बिल्कुल असहाय होता है। मनुष्य के बच्चे के समान ही वह भी अपनी माँ का दूध पीता है। शिकारी की गोली से माँ के मारे जाने पर रोता-कलपता बच्चा अपनी माँ की छाती से जकड़ा हुआ पड़ा रहता है।

गरीला समतल भूमि में मनुष्य से भी कम दौड़ सकता है। यह अपना आहार खोजने के लिये एक दिन में एक मील से अधिक नहीं चलता। बीच-बीच में आराम की नींद ले लेता है। खाने की वस्तु देखकर यह मारे खुशी के किलकारी देने लगता है। यह केवल दिन में ही चलता-फिरता है। रात होते ही यह पेड़ की डाली पर और पत्तों का घोसला बनाकर आराम करने के लिये ठहर जाता है। पालने-पोसने पर यह भी चिम्पञ्जी के समान बहुत कुछ सीख सकता है, किन्तु उतनी जल्दी नहीं। एक बार जो कुछ सीख लेता उसे फिर कभी भूलता नहीं। पालतू गरीला घर-गृहस्ती के बहुत-से काम कर सकता है। पानी की जरूरत होने पर यह कल खोल सकता है, गिलास में पानी भर सकता है और फिर ठीक समय पर कल को बंद कर दे सकता है। मालिक या मालिकिनी यदि दुलार करके इसे गोद में लेना चाहता है तो यह कभी-कभी दौड़कर घर के कोने से अथवा टेबुल पर से अखबार





का कोई पन्ना उठा लाता है जिससे उसे गोद में लेते समय मालिक या मालिकीनी की पोशाक गंदी न हो जाय। यह साफ-सुथरा रहना खूब पसंद करता है। भोजन करते समय यदि किसी कपड़े पर एक दाना अन्न भी गिर पड़ता तो उसे फौरन झाड़कर साफ कर देता है।

एक बार कई शिकारी मिलकर गरीले का शिकार करने घने जंगल में गये थे। वहाँ एक गरीले के करतब को देखकर वे चकित रह गये। उन्होंने देखा कि एक बूढ़ा गरीला उन शिकारियों को देखकर भागने में असमर्थ हो रहा है। इतने में एक जवान गरीला वहाँ पहुँचा और उस बूढ़े को कंधे पर उठाकर घने वन की ओट में कहीं जा छिपा। शिकारी यदि चाहते तो दोनों को बन्दूक की गोली से मार डालते, किन्तु जवान गरीले के इस अच्छे काम को देखकर उसे मार डालने के लिये उनके हाथ नहीं उठे।

गरीले के विषय में एक और कहानी सुनी जाती है। मादा के साथ जिस जंगल में वह रहता था उससे कुछ दूर पर ही एक गाँव था। गाँव के लोग भूलकर भी उस जंगल की ओर जाने का साहस नहीं करते और वह गरीला भी कभी गाँव में जाकर किसी तरह का ऊधम नहीं मचाता। इसी प्रकार बहुत दिन बीत गये। आखिर एक दिन ऐसा हुआ कि गाँव के कुछ लोगों ने जंगल में जाकर मादा को मार डाला।

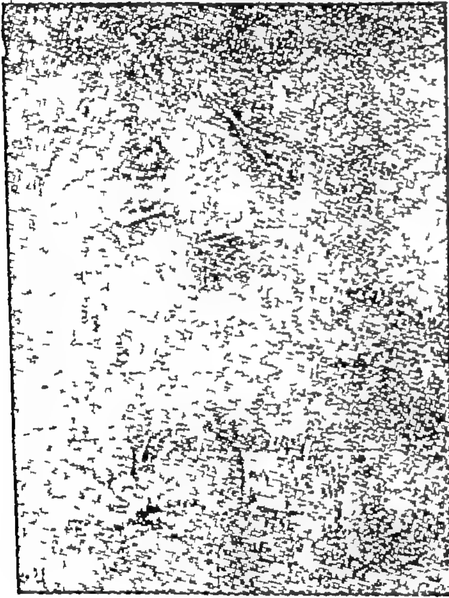
इस घटना से नर गरीला मारे गुस्से के एकदम आग हो उठा। शिकारियों को पहचानने में उसे देर नहीं लगी। वह रोज रात को गाँव में घुसकर एक-एक आदमी को मारने लगा और इस तरह उसने दस आदमियों को मार डाला। इतने पर भी उसका क्रोध कम नहीं हुआ। किन्तु दिन के समय वह मादा की लाश के पास चुपचाप बैठा रहता और वहाँ से जरा भी नहीं हिलता-डोलता। लाश के पास उदास चेहरे से बैठकर जब वह अपने मन के दुःख को अपनी आँखो द्वारा जताता उस समय उसकी दशा को देखकर निष्ठुर-से-निष्ठुर शिकारी की आँखों में भी आँसू भर आते।



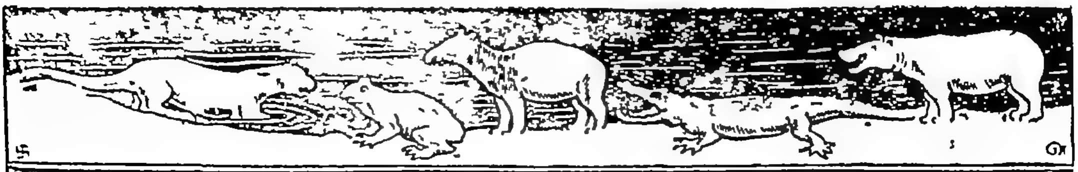


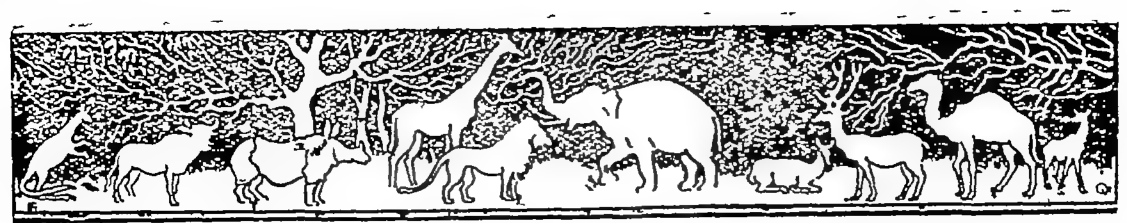
ओरग-उतान

ओरंग-उतान बोर्नियो और सुमात्रा द्वीपो मे पाया जाता है। यह चिम्पञ्जी की तरह मनुष्य के आकार-प्रकार से उतना अधिक नहीं मिलता-जुलता। यह चार साढ़े चार फीट से ज्यादा लम्बा नहीं होता। गरीले और चिम्पञ्जी की तरह यह भी पेड़ों की डालियो मे घर बनाकर रहता है। जमीन पर जब यह रहता है उस समय इसकी चाल बड़ी भद्दी और सुस्त मालूम पड़ती है, किन्तु एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदकर चढ़ने और डालिया से लटककर झूला झूलने में यह बड़ा होशियार होता है। इसकी देह का रंग लाल, चौड़ा कपाल, लम्बी बाहे, मोटी गर्दन, चिपटी नाक और कंध और जाँघों पर बड़े-बड़े बाल होते हैं। इसका मुख्य भोजन भी फल और पेड़ों की मुलायम हरी पत्तियाँ हैं। यह भी बुद्धिमान् होता है और पोस भी मानता है। मनुष्य पर चोट यह बहुत कम करता है, लेकिन बहुत दिक किये जाने और चिढाये जाने पर यह भयानक हो उठता है और अपने शत्रु को बुरी तरह काट खाता है। बन्दी दशा में यह अपने रक्षक के साथ खूब हिलमिल जाता है, पर बहुत कम दिन जीता है। पालपोस कर इसे भी बहुत-कुछ सिखलाया जा सकता है, लेकिन चिम्पञ्जी बुद्धि और समझदारी मे इससे कहीं बढ़ा हुआ होता है। यह मनुष्य की चालढाल की नकल करना पसंद करता है, जिससे इसे तरह-तरह के खेल-तमाशे की चालबाजियाँ सिखलाना



ओरग-उतान





सहज होता है। कलकत्ते के अलीपुर के चिडियाखाने मे जो वनमानुप है वह ओरंग-उतान ही है। वहाँ गरीला और चिम्पञ्जी नहीं हैं।

एक जहाज पर दो ओरंग-उतान थे जिनमे एक का हाथ बीच-बीच में सूज जाता था और उसमे दर्द होता था। जहाज के डाक्टर ने उसके उस स्थान को चीरकर वहाँ का खून निकाल दिया। इससे हाथ का सूजना कम हो गया और उसे खूब आराम मालूम हुआ। इसके बाद से जब कभी उसे पीड़ा होती वह डाक्टर के सामने खुद हाजिर होकर अपना हाथ पसार देता।

ओरंग-उतान के बारे में एक और कहानी सुनी जाती है कि वह एक अस्पताल के पास रहता था और वहाँ का डाक्टर जब रोगियों की नाड़ी देखकर दवा देता तो वह बड़े गौर से डाक्टर के इस काम को देखता था। एक दिन वह ओरंग-उतान बीमार पड़ा और तब वह धीरे-धीरे अस्पताल गया और वहाँ डाक्टर के सामने अपना हाथ बढ़ा दिया।

एक बार एक डाक्टर के उसके एक पालतू ओरंग-उतान ने होश गुम कर दिये थे। बात यह हुई कि वह डाक्टर अस्पताल में एक मुर्दे की चीर-फाड़ कर रहा था। ओरंग-उतान भी डाक्टर के पास ही खड़ा हुआ सब कुछ देख रहा था। देख-देखते उसके मन में एक अजीब खयाल पैदा हुआ। दूसरे दिन जब डाक्टर उसी घर मे मुर्दे की चीर-फाड़ करने के लिये घुसा तब ओरंग-उतान ने भी उसका पीछा किया और फौरन उसे पकड़कर टेबुल के ऊपर गिरा दिया तथा हथियार लेकर उसकी देह मे चीर-फाड़ करने की चेष्टा करने लगा। मारे भय के डाक्टर जोर से चिल्ला उठा जिससे बहुत से लोग वहाँ पहुँच गये और तब उसकी रक्षा हुई।

गिब्बन

आसाम, बर्मा और मलय टापुओं में कई तरह के गिब्बन पाये जाते हैं। यह तीन फीट से अधिक ऊँचा नहीं होता। इसकी दोनों बाँहें इसके कद को देखते हुए काफी लंबी होती हैं। चलते समय यह अपनी दोनो बाँहों को दोनों तरफ झुलाते हुए सीधा होकर पागल की तरह मस्त चाल से





चलता है। वनमानुष जाति के बन्दरो मे यह सबसे वढ़कर चुहलवाज और खेल-तमाशा पसंद करनेवाला होता है। छलाँगें मारने में यह एक ही होता है। चालीस फीट की ऊँचाई तक इसे छलाँग मारते देखा गया है। एक पेड़ की डाली को हाथ से पकड़कर लटकते हुए दूर के पेड़ की डाली को उछलकर पकड़ लेना इसके लिये महज खेल है। यह काले रंग का होता है। आसाम मे एक तरह का गिव्वन पाया जाता है जिसके नर के कपाल पर सफेद रोयें की एक रेखा देखी जाती है। इसकी बोली उल्लू पची से कुछ-कुछ मिलती है जिससे इसे 'हूकू' कहते हैं। कलकत्ते के चिड़ियाखाने मे जिस वन्दर को तुम 'हूकू'—'हूकू' बोलते सुनो उसे समझ लेना कि वह गिव्वन है। यदि तुम्हें कभी वहाँ जाने का मौका मिले तो गिव्वन की बोली जरूर सुन लेना।

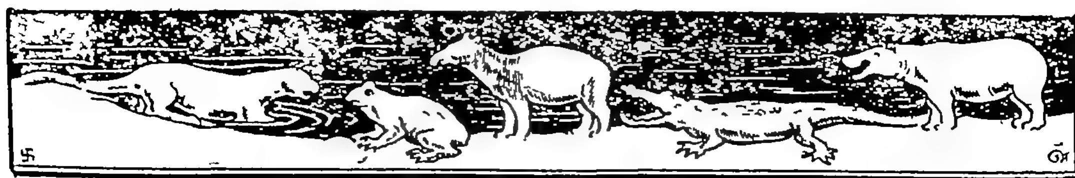


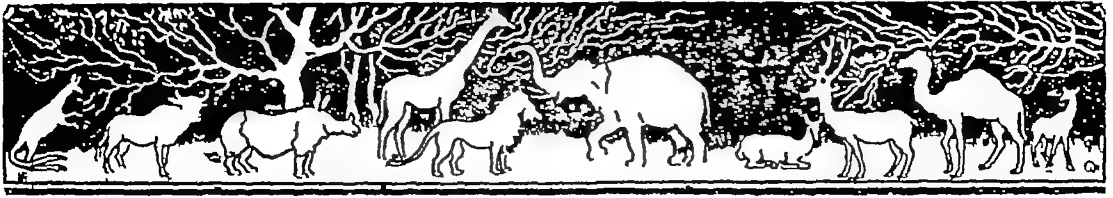
गिव्वन

कलकत्ते के चिड़ियाखाने मे एक मादा 'हूकू' थी जो औरतों को देखते ही चिढ़ जाती थी। उसके पिंजड़े के पास पुरुष या लड़के-बच्चे जाते तो वह कुछ नहीं बोलती। किन्तु, औरत को देखते ही वह बिगड़ उठती थी। मेम साहब भी अगर उसके पिंजड़े के पास पहुँच जातीं तो वह दाँत किटकिटा कर उन्हें काटने दौड़ती और यदि संयोग से कपड़े का कोई छोर उसकी पकड़ में आ जाता तब तो नोंच-खसोटकर उसकी दुर्दशा कर डालती।

गिव्वन घंटों तक एक पेड़ से दूसरे पेड़ की डालियों को पकड़कर छलाँगें मार सकता है और लटककर झूला झूल सकता है। जिस समय यह जंगल में इस तरह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछलकर झूलता रहता है उस समय ऐसा मालूम पड़ता है मानो कोई बहुत बड़ी चिड़िया जंगल में उड़ रही हो।

एक वार एक गिव्वन पेड़ की डाली पकड़े आराम कर रहा था। उसने अपने ऊपर से





एक चिड़िये को उड़ते देखा। फौरन उछलकर एक हाथ से उसने उड़ती हुई चिडिये को पकड लिया और फिर हवा से होकर दूसरे हाथ से उसी डाली को पकड लिया।

गिव्वन अपने वच्चे को प्यार करता है। उसे अपने छोटे वच्चे को नदी की धारा मे ले जाकर उसके मुँह को अच्छी तरह धोते-पोछते भी देखा गया है। पालतू होने पर अपने मालिक के साथ यह चालाकी के खेल भी खेलता है। एक पालतू गिव्वन अपने मालिक का सावुन चुरा लिया करता था। वह समझता था कि सावुन चुराते हुए उसका मालिक उसे नहीं देखता है। एक दिन उसका मालिक कुछ लिख रहा था और उस समय ऐसा वहाना किये हुए था मानों वह गिव्वन को नहीं देख रहा हो। इसी समय गिव्वन चुपचाप वहाँ से सावुन उठाकर कमरे की तरफ चला गया। फिर उसके लौट आने पर मालिक ने विना गुस्सा किये धीर भाव से ही गिव्वन को कुछ कहा। इसपर गिव्वन वहुत लज्जित हुआ। वह धीरे से उस कमरे में गया और वहाँ से सावुन लाकर फिर उसे उसी जगह पर रख दिया।

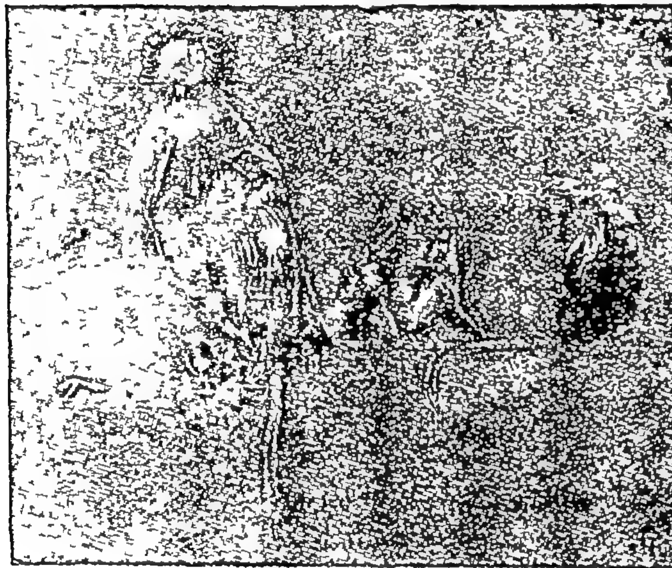
२—लंगूर

पंजाव और सिन्ध को छोडकर हिन्दुस्तान के और सव हिस्सों मे लंगूर पाया जाता है। इसकी देह का गठन कुछ लंवाई लिये हुए होता है। वैठे रहने पर ऊँचाई मे यह ढाई फीट के करीव होता है। इसके शरीर का रंग मटमैला, मुँह एकदम काला और हाथ-पाँवो की हथेलियाँ और तलवे भी काले होते हैं। मुँह के चारों तरफ के रोयें वड़े-वड़े होते हैं। इसकी पूँछ इसके शरीर को देखते हुए कुछ ज्यादा लंवी होती है। यह दल वाँधकर चलता है। हरएक दल का एक सरदार होता है जिसके हुक्म के मुताविक सव चलते फिरते हैं। एक पेड से दूसरे पेड पर कूदने-फाँदने, पाँव से डाली को पकड़कर सिर के वल लटकने, झूला झूलने और लूटपाट मचाने मे यह वडा उस्ताद होता है। यह पोस भी वहुत जल्दी मान जाता है। इसकी पूँछ की करामात सवसे वढकर होती है। रामायण में हनुमानजी की कथा तो तुम जानते होगे। ये हनुमानजी भी इसी लंगूर जाति



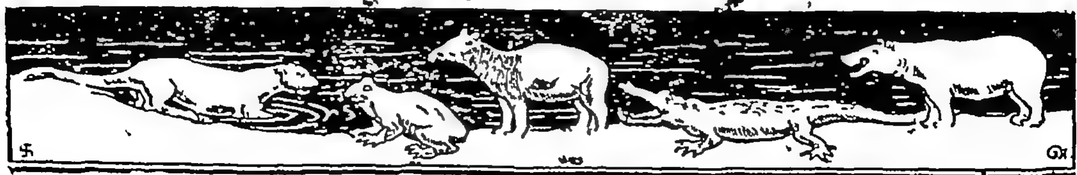


के थे। समुद्र पार करके किस तरह हनुमान रावण की राजधानी लंका पहुँचे और वहाँ राक्षसों का नाकों दमकर डाला! जब किसी तरह भी राक्षस लोग हनुमान को काबू में नहीं कर सके तब उन्होंने एक फंदा रचा। एक दिन सबने मिलकर हनुमान को रस्सी से बाँध दिया और राज्य भर मे जितने पुराने कपड़े थे सब उसकी पूँछ में लपेट दिया। फिर कपड़े को तेल मे तर करके उसमें आग लगा दी। सोचा, हनुमान जल कर मर जायँगे। किन्तु, हनुमान बुद्धि में तो किसी से कम नहीं थे। चुपचाप हँसी को मुँह में दबाये सब तमाशा देख रहे थे।



लगूर

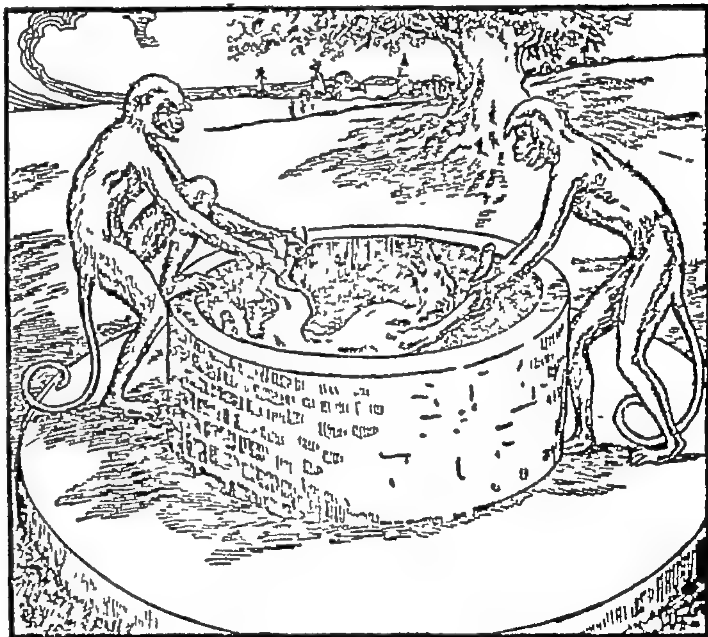
जब हनुमान की पूँछ जलने लगी तब राक्षसों ने उनके बन्धन को खोल दिया। बस, बन्धन खुलते ही एक छलाँग—और पहुँच गये एकबारगी राजा के महल के सबसे ऊपर के कंगूरे[1] पर। जलती हुई पूँछ की आग से आग लगा दी और एक मकान से दूसरे मकान पर कूद-कूदकर जाने लगे और आग लगाने लगे। जरा भी रुकने का दम नहीं। और, आग का जोर कितना कि जिसी घर पर पहुँचते वही फौरन जलने लग जाता। इसी तरह कूद-फाँदकर पलभर में ही सोने की लंका को राख कर दिया। लंका में कोई भी घर मकान नहीं रह गया—रह गया केवल राख का ढेर और जले हुए





मकानों का टीला। और इतने पर भी खैर नहीं। जो लोग आग के भय से पोखर और तालाबों में चले गये थे और वहाँ गर्दन तक शरीर को पानी में डुबाये हुए खड़े थे, हमारे कौतुकी हनुमान ने उनके मुँह को भी अपनी जलती हुई पूँछ से झुलसा दिया। जला हुआ मुँह लेकर वे सब बेचारे पानी में डुबकियाँ लेने लगे और आप पहुँचे समुद्र में पूँछ की आग को बुझाने। सो, देखी तुमलोगों ने हनुमान की पूँछ की कारसाजी ?

अब लंगूर की चालाकी और शैतानी की एक कहानी तुम्हें सुनाता हूँ। "टाँगा-टोली" किसे कहते हैं। जानते हो ? पहले जमाने में पाठशाला के जो सब लड़के मास्टर साहब की छड़ी के डर से स्कूल से भाग जाते थे उन्हे मास्टर साहब दूसरे लडकों से पकड़वा मँगाते थे। और अगर कोई लड़का इतना बदमाश और हठी होता कि वह सहज ही नहीं आता तो मास्टर साहब दो लड़को को हुक्म देते कि जाओ उसके दोनों हाथ और पाँव पकडकर झुलाते हुए ले आओ। इस तरह लडके को टाँगकर लाने का नाम है "टाँगा-टोली"।



इस शैतानी का भी कुछ ठिकाना है!



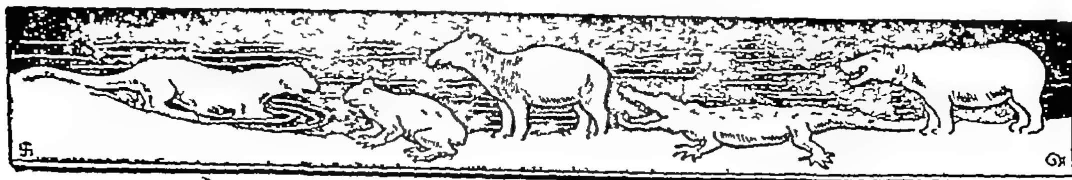


एक स्कूल के मास्टर साहब ने यही सजा एक लडके को दी थी जो बराबर स्कूल से भाग जाया करता था। उस स्कूल के पास ही एक पेड पर कितने ही लंगूर रहा करते थे। जिस समय दो लड़के उस शैतान लडके को इस तरह पकडकर झुलाते हुए स्कूल में ला रहे थे, पेड़ पर बैठे हुए लंगूर यह तमाशा बड़े गौर से देख रहे थे।

पास में ही एक गाँव था जहाँ के लोग इन लंगूरों के ऊधम से तंग आ गये थे। किसी के बाग-बगीचे के फल, सागसब्जी, तरकारी इनके मारे बचने नहीं पाती थी। इतना ही नहीं बल्कि लोगों के घर से खाने-पीने की चीजें भी उठाकर ले भागते। किन्तु इन लंगूरो की एक जगह दाल नहीं गलती थी। और वह था उसी गाँव के एक गृहस्थ का घर जिसने एक जबर्दस्त कुत्ता पाल रक्खा था। उसके बगीचे में तरह-तरह की तरकारियाँ लगी हुई थीं। लेकिन उस कुत्ते की रखवाली के कारण किसी लंगूर का साहस नहीं होता कि उसमे पाँव बढ़ाता। कुत्ता जोर-जोर से भूँककर उस ओर दौड पड़ता। इसलिये इस घर मे लंगूरों की लूटपाट नहीं चलती थी। पर लंगूर शैतानी मे तो किसी से कम नहीं होते। उनके दल मे दो पक्के उस्ताद थे। उन्होंने सोचा, इस दुष्ट कुत्ते से किसी न किसी तरह बदला लेना ही चाहिये। इसके लिये वे मौका ढूँढ़ने लगे। आखिर एक दिन दोपहर के समय उन्होंने देखा कि कुत्ता कुएँ के पास छाया में सोया हुआ है। कुत्ते को सोया हुआ देखकर उन दोनो लगूरों को झट एक शैतानी सूझ गई। पेड़ों की ओट से होकर वे चुपके से उस जगह पर पहुँच गये जहाँ कुत्ता सोया हुआ था। दोनो तरफ से कुत्ते के चारो पाँव को पकड़कर कुएँ के ऊपर "टाँगा-टोली" देने लगे और इस तरह झुलाते-झुलाते बस एक बार कुएँ मे छपाक! बेचारे कुत्ते को इस होशियारी से पकड़े हुए थे कि वह काट भी नहीं सकता था। इस शैतानी का भी कोई ठिकाना है! लोगों को जब यह हाल मालूम हुआ, एकबारगी अवाक् रह गये।

३—बन्दर

एशिया, अफ्रिका और अमेरिका में नाना प्रकार के बन्दर बहुतायत से पाये जाते हैं। जाति



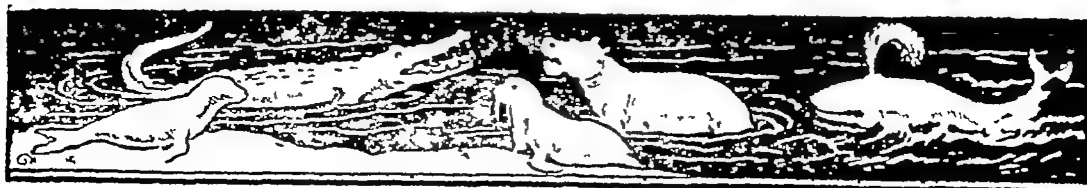


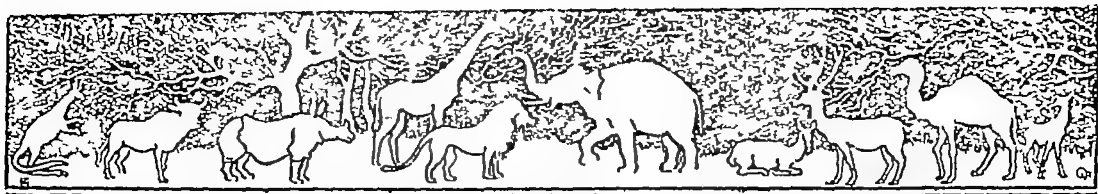
के अनुसार कद, देह का गठन, मुँह का ढाँचा और रंग मे ये भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। पूँछ सबके होती है, किसी की बडी और किसी की छोटी। गालो के दोनो तरफ दो थैलियाँ होती हैं जिनमे खाने की चीजों को निगलकर रख लेते हैं और फिर बाद मे उन्हे चबा-चबा कर खाते हैं। साधारण बन्दरों को छोडकर और किसी जाति के वानरों के मुँह में इस प्रकार की थैलियाँ नही होतीं। फल, तरकारी, अनाज, कीड़े-मकोड़े आदि इनके खाद्य हैं।

एशिया के बन्दर

एशिया महादेश मे पाये जानेवाले बन्दर मोटे और नाटे कद के होते है। अकेले भारतवर्ष में ही आठ-नौ प्रकार के बन्दर पाये जाते हैं। गाँवों में बागबगीचे मे जो बन्दर तुम देखते हो और मदारी लोग जिन्हें साथ लेकर तमाशा दिखाते फिरते हैं वे सब इसी जाति के बन्दर हैं। ये जल्दी पोस मान जाते हैं और सिखाये जाने पर तरह-तरह के मजेदार खेल और चालबाजियाँ सीख लेते हैं। मद्रास प्रान्त में एक तरह का बन्दर पाया जाता है जिसके सिर पर बड़े-बड़े लंबे बाल होते हैं। इन बालो को देखकर मालूम होता है—ठीक जैसे टोपी पहने हुए हो। इसलिये इन्हे 'बोनेट मंकी' या टोपी पहने हुए बन्दर कहते हैं।

बन्दर की समझदारी की बहुत-सी कहानियाँ सुनी जाती हैं। इनमें दो-एक कहानियाँ तुम्हें सुनाता हूँ। एक बार एक मदारी किसी शहर मे बन्दर का तमाशा दिखाने गया। अपने इस बन्दर को उसने बहुत-से खेल-तमाशे सिखलाये थे। इसी बन्दर की बदौलत उसकी तथा उसके बाल-बच्चो की रोजी चलती थी। उस शहर के बहुत-से महल्लो में तमाशा दिखाकर जब उस मदारी ने अच्छी आमदनी कर ली तब उसने घर लौटने का विचार किया! शहर से कुछ ही कोस की दूरी पर उसका घर था, लेकिन वहाँ का रास्ता सूनसान मैदान और जंगलझाड़ी से होकर था। उस रास्ते से होकर घर लौटते समय जंगल के पास ही शाम हो गई। मदारी का घर वहाँ से करीब ही था। वह बन्दर को साथ लिये तेजी से अपने घर की ओर बढ़ा जा रहा था। इतने मे झाडी में छिपे हुए दो डाकू



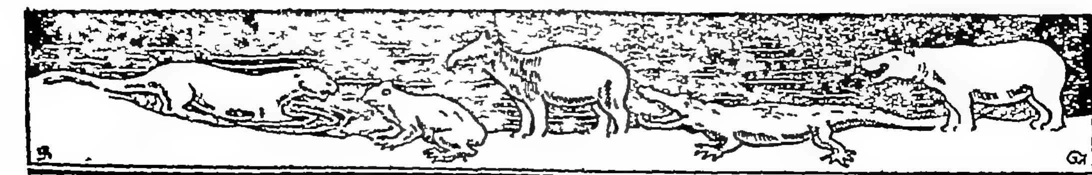


वाहर निकल आये और मदारी को आगे से घेर लिया। वे दोनों डाकू हथियारवद थे। इसलिये मदारी उनका सामना नहीं कर सकता था। उसके पास जो कुछ था उसने सव उनके सामने रख दिया। किन्तु इतने पर भी उन्हें संतोष नहीं हुआ। उन्होंने मदारी का सर्वस्व लूटकर उसे मार डाला और उस झाडी के पास ही उसे जमीन मे गाड़ दिया। मदारी का वन्दर चुपचाप



बन्दर

सव कुछ देख रहा था। दोनो डाकू जव वहाँ से चपत हो गये तो वन्दर ने भी उस अंधकार मे चुपके से उनका पीछा किया। उनका पीछा करते हुए वह उनके गाँव के घर तक गया और फिर वहाँ से लौटकर उस स्थान पर पहुचा जहाँ मदारी का खून किया गया था। वहाँ से वह मदारी के घर पहुँचा और उदास होकर घर के एक कोने मे जा वैठा। भोर होने पर जब मदारी की स्त्री उठी तो वन्दर को वहाँ अकेला पाकर उसे आश्चर्य हुआ और साथ ही इसके अपने पति के लिये भी उसे अंदेशा होने लगी। वन्दर भी वहुत उदास और खानेपीने मे अनमना सा दीख पड़ता था। उस दिन जव शाम तक मदारी नहीं लौटा तव उसकी स्त्री की चिन्ता और भी बढ़ गई। गाँव के लोगों से जव उसने अपने पति के वारे में पूछताछ की तो किसी ने कोई खवर नहीं वताई। फिर पुलिस में इसकी इत्तला दी गई। दारोगा जी तहकीकात के लिये पहुँचे। जिस समय दारोगाजी गाँव के लोगों से मदारी के वारे में पूछताछ कर रहे थे, वह वन्दर भी वहाँ मौजूद था। वह वार-वार दारोगा के पाँवो पर गिरता और उनके आगे कुछ दूर तक दौड़कर फिर लौट आता। पहले तो दारोगाजी को

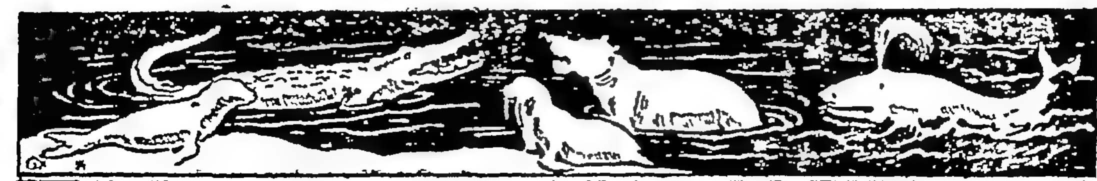




बन्दर के इस तरह करने का कुछ मतलब समझ मे नही आया, लेकिन बाद मे उन्होंने बन्दर के पीछे-पीछे चलने का विचार किया। बन्दर आगे बढकर चलने लगा और दारोगा और उनके साथ दूसरे लोग भी पीछे-पीछे चलने लगे। उन सबको लेकर बन्दर उस जगह पर पहुँचा जहाँ मदारी की लाश गाड़ी गई थी। वहाँ पहुँचकर बन्दर उस जगह की मिट्टी को अपने हाथ से खोदने लगा। इसपर दारोगा का संदेह और भी बढ़ा और उन्होंने अपने साथ के कोतवालों को वहाँ की मिट्टी खोदकर हटाने का हुक्म दिया। आखिर जब वहाँ की मिट्टी खोद कर हटाई गई तो उसके नीचे एक लाश मिली जिसे गाँव वालो ने मदारी की लाश कहकर पहचाना। सब आश्चर्य से अवाक् होकर खड़े थे। लेकिन बन्दर के लिये तो अभी और कुछ करना बाकी था। वह फिर आगे बढ़-बढ़ कर दारोगाजी को पहले की तरह अपने पीछे चलने का इशारा करने लगा। इस बार दारोगाजी को उसका इशारा समझने में देर नहीं लगी। झट सब लोग बन्दर के पीछे हो लिये। अब बन्दर सबको साथ लिये उस गाँव मे उन डाकुओं के घर तक पहुँचा और वहाँ पहुँचकर खड़ा हो गया। दोनों डाकू उस समय घर पर ही मौजूद थे। दारोगा ने उन दोनों को गिरफ्तार कर लिया और उनके घर की तलाशी लेकर लूट का माल बरामद किया। फिर उन डाकुओ पर मुकदमा चला और उन्हे सजा मिली। इस प्रकार उस बन्दर की बुद्धिमानी का ही यह फल था कि मदारी के खून का पता चला और डाकुओं को सजा मिली।

एक और कहानी तुम्हें सुनाता हूँ जिससे मालूम होगा कि हमारे देश मे पाये जाने वाले बंदर कितने चालाक और समझदार होते हैं।

एक भले आदमी ने एक बन्दर पाल रक्खा था। दुर्गापूजा की छुट्टी मे वह सैर-सपाटे के लिये पहाड़ पर जा रहे थे। उन्होंने अपने पालतू बंदर और कुत्ते के चार छोटे-छोटे बच्चे अपने पड़ोस के एक मित्र के जिम्मे कर दिये। वह बंदर बराबर उन बच्चों की रखवाली किया था करता था।

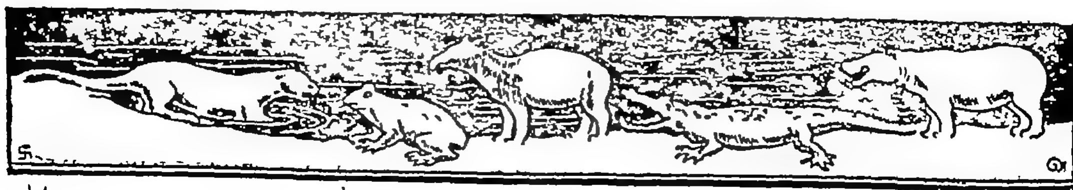




मित्र के घर पर वंदर और कुत्ते अच्छी तरह रहने लगे। वह वंदर इतने यत्न के साथ उन वच्चों की रखवाली और उनकी देखभाल करता कि वह मनुष्य के वच्चों के लिये भी धाई का काम अच्छी तरह कर सकता था। वंदर के इस व्यवहार को देखकर वह सज्जन बड़े खुश हुए और उसे वहुत-से अखरोट खाने को दिये।

अव उन अखरोटों को अपने हाथ की मुट्ठी में भरकर वन्दर वडी मुश्किल में पड़ गया। अगर वह वैठकर अखरोट खाने लगता है तो उसके दोनो हाथ छिलका छुड़ाने और खाने के काम में लग जाते हैं, जिससे कुत्ते के वच्चे वहाँ से इधर-उधर भटक जाते हैं। वह नहीं चाहता कि वे वच्चे उसके पास से इधर-उधर कहीं जायँ। इस मुश्किल मे पड़कर वह वड़े गौर से यह विचारने लगा कि अव क्या करना चाहिये। एक ओर तो वह अखरोट खाने के लिये अधीर हो रहा था और दूसरी ओर वह वच्चों की भी रखवाली करना चाहता था। आखिर, उसने एक उपाय ढूँढ़ ही निकाला।

उसने एक वच्चे को उठाकर उसके सिर को दरवाजे की तरफ और उसकी दुम को कमरे के वीच की तरफ करके उसे जमीन पर सुला दिया। फिर दूसरे वच्चे को लेकर उसके सिर को खिड़की की तरफ और उसकी दुम को कमरे के वीच की तरफ करके सुला दिया। तीसरे वच्चे के सिर को दीवार की तरफ और उसकी दुम को पहले के दोनों वच्चो की दुमों से सटाकर उसी तरह सुला दिया, और चौथे वच्चे के सिर को अंगीटी की तरफ और उसकी दुम को तीनों वच्चों की दुमो से सटाकर उसी तरह सुला दिया। यों वे चारो वच्चे जमीन पर इस तरह लेट गये, अर्थात् उनके सिर वाहर की तरफ और दुम भीतर की तरफ एक दूसरे को छूते हुए। अव वह वंदर उन सवके वीच में उनकी दुमो के छोर पर वैठ गया और मजे मे अखरोट खाने लगा। वच्चों को विना चोट पहुँचाये वह उन्हे अपने पास रखे हुए था और साथ ही एक हाथ से छिलका फोड़कर दूसरे हाथ से अखरोट खा रहा था!



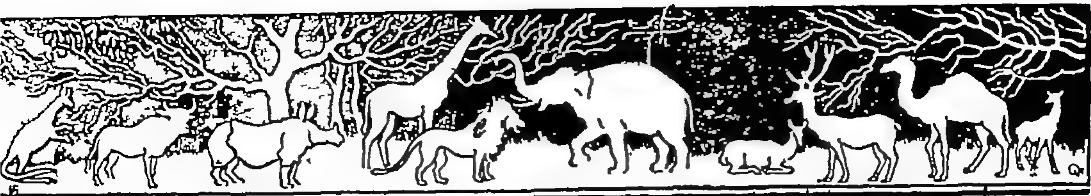


अब वंदर की शरारत की एक कहानी सुनाता हूँ। यह वंदर एक मदारी का पालतू वंदर था। मदारी वंदर के साथ-साथ एक वकरा भी रखता था। वंदर और वकरा साथ मिलकर नाचा करते थे। एक वार वह मदारी उनका नाच दिखाकर दोपहर के समय दूर शहर से घर लौट रहा था। रास्ते मे खाने के लिए उसने दही, चूड़ा और गुड खरीद लिये थे। उसने मन मे विचार किया था कि किसी तालाव के पास पहुँचकर नहा-धोकर भोजन करूँगा। रास्ते में एक स्वच्छ जल का तालाव देखकर वह वहाँ रुक गया और वंदर और वकरे के पास खाने-पीने की सव चीजें रखकर खुद नहाने चला गया। नहाकर लौटा तो देखता क्या है कि दही का वर्तन विल्कुल खाली पड़ा है। यह देखकर मारे गुस्सा के जल भुन उठा। पास मे ही वंदर और वकरा वँधे थे। सोचा, हो न हो यह वंदर का ही काम है। यह सोचकर छड़ी लेकर वंदर को मारने दौड़ा ही था कि उसकी नजर वकरे पर पड़ी। वकरे के मुँह मे दही लगा हुआ था। सव, अव उसका सारा क्रोध वकरे के ऊपर वरस पडा। वेचारे वकरे की पीठ पर लाठियाँ वरसने लगीं। किन्तु इसी समय एक राही जो उस रास्ते से होकर जा रहा था, चिल्ला उठा—"वेकसूर वकरे को क्यों पीट रहे हो। उसका कोई कसूर नहीं है। तुम्हारा यह वंदर वड़ा शैतान है। उसी की यह शरारत है। मैंने उसे दही खाते अपनी आँखों देखा है। खाकर उसने अच्छी तरह अपना मुँह पोंछ डाला और दही की हाँडी से जो दही लगा हुआ था उसे हाथ से लेकर वकरे के मुँह मे लगा दिया है। यह वंदर क्या है, शैतान का चर्खा है!" यह सव सुनकर मदारी आग-ववूला हो उठा और फिर वंदर को इसके लिये जैसी सजा उसने दी उसे वह कभी भूल नहीं सकता था।

वेवून

वेवून जाति के वानर अफ्रिका मे पाये जाते हैं। ये आठ-नौ प्रकार के होते हैं। जिनमे मैंड्रिल वेवून, डिल वेवून आदि प्रधान हैं। ये गरीला और चिम्पञ्जी से कद मे छोटे किन्तु साधारण वन्दरों से वड़े होते हैं। ये देखने मे वहुत ही भद्दे, और साथ ही भयानक स्वभाव के होते हैं। इनमे वडे-वड़े





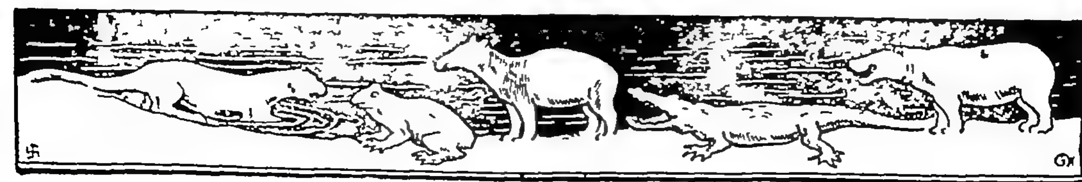
छड़ी की खोज की, तो मालूम हुआ कि वह स्टेशन पर ही छडी भूल आये हैं। वेबून वहीं पर गाडी छोडकर साहब से कुञ्जी लेकर, फौरन् स्टेशन की ओर दौडा। स्टेशन पर पहुँचकर उसने कुञ्जी से कमरे का दरवाजा खोला और छड़ी लेकर फिर दरवाजा वंद कर दिया। फिर वहाँ लौटकर साहब को छडी दी।



दक्षिण अमेरिका का 'लाउड स्पीकर' बन्दर

एक अँगरेज शिकारी ने अफ्रिका के घने जंगल में एक दल गरीला और एक दल वेबून के वीच होनेवाली भिड़न्त का जो वर्णन किया है वह वडा ही दिलचस्प है। एक ही पहाड पर एक दल गरीला पेडों की डालियों मे लटककर झूला झूल रहा था। उसी पहाड पर एक दल वेबून का भी था जो गरीला के भय से भागता फिरता था। कुछ समय तक दोनो में इसी तरह पैतरेवाजी होती रही। इतने मे एक गरीला पहाड की चोटी से कुछ नीचे उतरकर बड़े जोर से गरज उठा। पल भर मे ही दूसरा गरीला भी वहाँ आ पहुँचा। उन दोनों को वहाँ देखकर मारे डर के वेबून इधर-उधर भागने लगे और दोनो गरीला और भी जोर-जोर से गरजने लगे।

अव दोनो दल में भयंकर लडाई शुरू हुई। पहले जोर-जोर से गरजना, चिघाडना, उछल-कूद, दाँत किटकिटाना, डाँट-डपट, ठेला-ठेली और फिर भिड़न्त। इस भिड़न्त और कुश्तमकुश्ती मे कोई दाँवपेंच वाकी न रहा। आध घंटे तक यह लडाई इसी तरह चलती रही, दोनो मे कोई किसी से दवनेवाला नहीं। इसके वाद जव दोनो दल जी-भर लडकर थक गये तव लडाई वंद हुई और दोनों





पीठ दिखाकर चलते बने। साहब ने लिखा है—"इसके बाद पहाड़ पर चढ़कर लड़ाई के मैदान का जो हाल देखा उससे सन्न रह गया। बहुत-से बेबून लहूलुहान होकर अचेत दशा में पड़े थे। सारे शरीर में नोच-खसोट के घाव थे। गरीलों का भी यही हाल था। लेकिन गिनती में वे कम थे।



अमेरिका का लाल मुँहवाला बन्दर



लेमूर की एक जाति—डाल पर सोते समय

लड़ाई में करीब एक सौ बेबून और आठ गरीले मारे गये थे। यह सब देखकर मैं सिहर उठा। सोचा, अगर दल बाँधकर ये किसी गाँव पर हमला करें तो उसका सर्वनाश ही कर डालें। आख़िर यह दृश्य भी एक दिन देखना ही पड़ा। पहाड़ से उतरकर जब गाँव की तरफ लौटा तो वहाँ की हालत







देखकर दंग रह गया । गाँव बिल्कुल उजाड़-सा मालूम पड़ रहा था । गाँव के अंदर घुसा तो घास-फूस के झोपड़ों में स्त्री-पुरुष और बच्चों की अनगिनित लाशों को देखकर भय से काँप उठा ! लाशों का ढेर-सा लग गया था । साथ ही इसके रास्ते में कई मुर्दा गरीलों और उनकी ठठरियों को भी पाया । वहाँ से लौटकर जब अपने खीमे में पहुँचा तो नौकर से मालूम हुआ कि इस गाँव के कुछ आदमी यहाँ से भागकर बहुत दूर पहाड़ की दूसरी तरफ जा बसे हैं । उनलोगों से मिलकर मालूम किया कि ६ मास पहले एक शिकारी-दल इस रास्ते से होकर शिकार करने आया था । इस दल में कुल १५ आदमी थे । सात-आठ गरीलों ने उनपर हमला किया । शिकारियों ने गोली चलाना शुरू किया । दोनों दल के बीच कुछ समय तक घनघोर लड़ाई चलती रही । अन्त में सब-के-सब शिकारी मारे गये । किन्तु गरीला-दल का क्रोध इतने पर भी शान्त न हुआ । वे क्रोध से पागल हो उठे और एकाएक उस गाँव पर टूट पड़े जिससे यहाँ के बहुत-से लोग मारे गये । रात-भर इन गरीलों का हमला जारी रहा । दूसरे दिन दोपहर को ये थककर गाँव छोड़कर जंगल की ओर चले गये ।

[लेमूर]





गरीला-दल के चले जाने पर गाँव के सरदार और उनके साथ और कई शिकारी, जो भाग गये थे, लौटकर गाँव में आये और सात-आठ दिनो के वाद एक दल वनाकर गरीलों को सजा देने के लिये जंगल की ओर रवाना हुए। कुछ दिनों तक उनकी कोई खवर न मिली। वाद को उनके लौटने का हाल मिला। उनके घर की स्त्रियाँ उनके लिये खाना तैयार कर रही थी। इसी समय गरीलों का गरजना और हुँकारना सुनाई पडा। टिड्डी-दल की तरह गरीला-दल गाँव पर चढ़ आया और सारे गाँव को तहस-नहस कर डाला। जो लोग यहाँ से भाग सके थे वे ही दूर पहाड़ के नीचे झोपड़ा वनाकर वस गये थे।



लेमूर की एक जाति

भयानक डाकू-जैसा स्वभाव का होने पर भी वेबून में कभी-कभी कुछ अच्छे गुण भी पाये जाते हैं। एक यात्री ने अपनी यात्रा का जो हाल वयान किया है उसमें लिखा है कि एक वार उसने एक वेबून के वच्चे को देखा जो अपने दल से अलग हो गया था। यात्री के साथ कई शिकारी कुत्ते थे। इतने में एक वूढा वेवून वहाँ पहुँचा और उस वेवून के वच्चे को असहाय अवस्था मे पाकर कुत्तों के सामने डट गया। कुत्ते जव भय के मारे सहम-से गये, वह उस वेवून को उठाकर उस जगह पर ले गया जहाँ दल के और सव

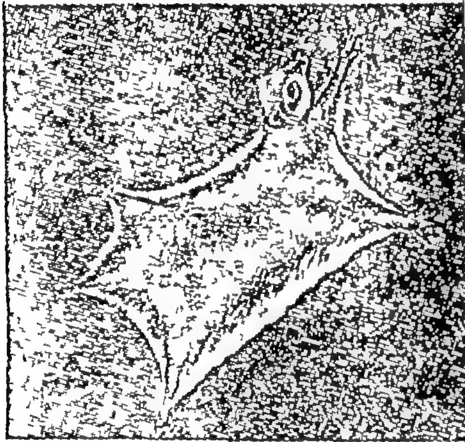




बेबून थे। अगर वह बूढ़ा बेबून इतनी बहादुरी का काम नहीं करता तो अवश्य ही शिकारी कुत्ते उस बच्चे को टुकडे-टुकडे करके मार डालते।

अमेरिका के बन्दर

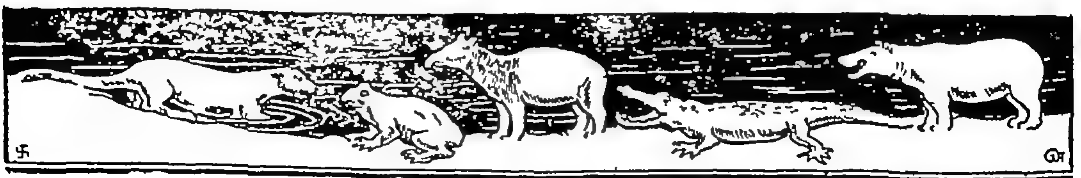
अमेरिका मे भी नाना प्रकार के बंदर पाये जाते हैं। वे कद मे छोटे होते हैं और उनकी पूँछें लम्बी होती हैं। एशिया और अफ्रिका के वानर अपनी पूँछों से किसी चीज को पकड़ नहीं सकते, लेकिन अमेरिका के बहुत-से बंदर इस काम के करने मे पक्के होते हैं। वे अपनी पूँछ से पेड़ की डालियो को पकड़कर झूलते रहते हैं और इस तरह झूलते हुए बीस-पचीस हाथ नीचे कूद पड़ते हैं और फिर छलाँग मारकर दूसरी डाली को पूँछ से पकड़ कर झूलने लगते हैं



उडनेवाला लेमूर [१]

दक्षिण अमेरिका में एक प्रकार का बंदर पाया जाता है जिसे 'मरमोसेट' कहते हैं। इससे बढ़कर छोटे आकार का बंदर दुनिया-भर मे और कहीं नहीं पाया जाता। अगर तुम इसे देखो तो जल्दी विश्वास नहीं करोगे कि यह बन्दर है। पिजड़े मे इधर-उधर उछलते-कूदते और पेड पर इसे फुदकते देखकर तुम्हें ऐसा जान पड़ेगा कि यह एक तरह की गिलहरी है। लेकिन तुम्हे यह सुनकर अचंभा होगा कि यह सचमुच एक तरह का बंदर ही है। यह चिड़िया की तरह सीटी देता है और इतना छोटा होता है कि मनुष्य के अँगूठे के ऊपर मजे में बैठ सकता है। देखने में यह बडा ही सुन्दर और सीधा होता है।

तुम्हें यह जानकर और भी अचंभा होगा कि लेमूर भी एक प्रकार का बंदर ही है। और, सिर्फ





वंदर ही नहीं है, वल्कि इस समय जितने प्रकार के छोटे-वड़े वंदर पाये जाते हैं उन सवका यह परदादा है। शुरू में इसका जन्मस्थान उत्तर अमेरिका था जहाँ से यह भटकता हुआ यूरोप और अफ्रिका मे पहुँचा। यह लाखों वर्ष पहले की वात है! तव तक इसमे कितने ही अदलवदल हो गये। अमेरिका में यह चौडा थूथनवाला वंदर वन गया और अफ्रिका मे मनुष्य की तरह गरीला और चिम्पञ्जी वंदर। लेमूर का एकदम शुरू में जो रूप था उस रूप में अव यह सिर्फ मेडेगास्कर टापू में पाया जाता है। यह मेडेगास्कर किसी जमाने में अफ्रिका का ही भाग था, लेकिन अव समुद्र से कटकर उससे सैकडों मील की दूरी पर हो गया है। इस समय जो लेमूर पाया जाता है उसका सिर लोमडी की तरह और चारों हाथ वन्दर की तरह होते हैं। गिव्वन की तरह इसकी आवाज ऊँची हाती है और यह दूर तक छलाँग मार सकता है। यह रात मे चारे की खोज में निकलता है और इतना धीरे-धीरे चलता है कि इसके चलने की आवाज चिडिया को भी मुश्किल से सुनाई पड़ती है।



उडनेवाला लेमूर [२]

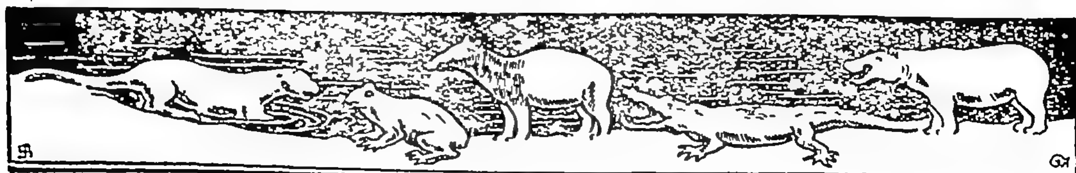
यदि लेमूर का वढ़कर चिम्पञ्जी के रूप मे हो जाना अचंभे की वात है तो इससे भी वढ़कर अचंभे की वात है उसका घटकर 'ये-ये' वन्दर के रूप मे हो जाना। इससे वढ़कर अनूठा जानवर शायद ही और कोई हो। इसकी सूरत एक वडी गिलहरी-जैसी होती है, इसके वड़े-वड़े कान होते हैं जिनपर वाल नहीं होते और वडी-वडी आँखें हाती हैं जिनमे यह रात को देख सकता है। इसके दो हाथ और दो पाँव होते हैं। पिछले पाँव ठीक वन्दर की तरह। अगले हाथो में चार अँगुलियाँ और एक अँगूठा होता है। सवसे वडी अँगुली पतली चिड़िया की तरह होती है।





रहता है तब दूर से देखने पर इसका कुछ भी पता नहीं चलता। सिंह जिस समय बालू के मैदान से होकर चलता है उसके चलने की कुछ भी आवाज नहीं होती। वह एकबारगी जबतक तुम्हारे पास नहीं पहुँच जायगा जबतक तुम्हे मालूम ही नहीं हो पायेगा कि सिंह तुम्हारे इतना नजदीक है। इसका कारण यह है कि इसके पाँव के तलवो मे मखमल की गद्दी की तरह नरम मास के गद्दे होते हैं, इन्हीं गद्दों में उसके तेज नख छुपे रहते हैं। जरूरत होने पर वह अपने नखों को बाहर कर सकता है। सिंह के सिर और गर्दन पर लम्बे-लम्बे बाल होते हैं जिन्हें केसर कहते हैं। इस केसर के कारण ही सिंह देखने में खूब रोबीला और जबरदस्त जान पड़ता है। नहीं तो यह बाघ से कुछ कम ही लंबा होता है। मादा सिंह के केसर नहीं होता। केसर का रंग कुछ-कुछ काला-पन लिये हुए होता है। शिकार को पकडकर उसे चीरने-फाडने में यह अपने दाँत और नखो से काम लेता है। तुमने बिल्ली को चूहा या किसी छोटी चिड़िया को पकडते हुए देखा होगा। बस, ठीक उसी तरह सिंह भी अपने शिकार को पकडता है। इस बात मे सिंह, बाघ और बिल्ली में कोई फर्क नहीं है। दूर से शिकार को देखकर यह दौड पड़ता है और उछलकर उसके ऊपर जा पडता है। फिर अपने तेज दाँतों और पंजों से घाव करके गरम-गरम खून पीता है। हिरन, जेब्रा और जिराफ का शिकार करना यह पसंद करता है। दिन-भर यह सोता है और रात मे शिकार की खोज में बाहर निकलता है। एक बार पेट भर जाने पर फिर जबतक इसे भूख नहीं सताती, यह दूसरा शिकार नहीं करता।

अफ्रिका के उगंडा प्रदेश मे जिस समय रेल-लाइन बन रही थी उस समय मनुष्य के ऊपर सिंह के आक्रमण की कितनी ही कहानियाँ अँगरेजी किताबो में लिखी हुई हैं। उन्हीं कहानियों मे से दो-एक तुम्हे यहाँ सुनाता हूँ। एक बार एक सिंह कुलियों के खीमे में घुसकर एक कुली के ऊपर टूट पडा। उस खीमे में चावल के कितने ही बोरे रक्खे हुए थे। सिंह अच्छी तरह से उस कुली को नहीं पकड़ सका, जिससे वह उसके पंजे से छूटकर बोरो के बीच जा गिरा। उधर सिंह भी छोड़नेवाला थोड़े ही था। वह भी छलाँग मारकर वहाँ जा गिरा और शिकार को दाँतो से पकडकर दौड चला। लेकिन वह



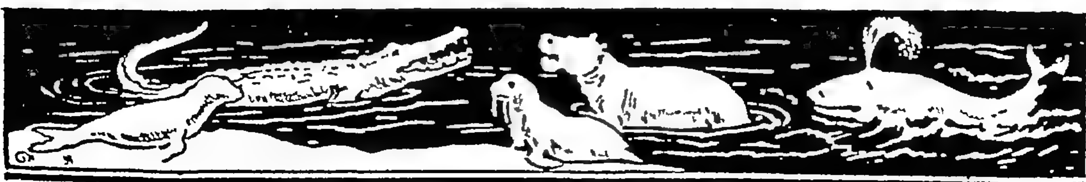


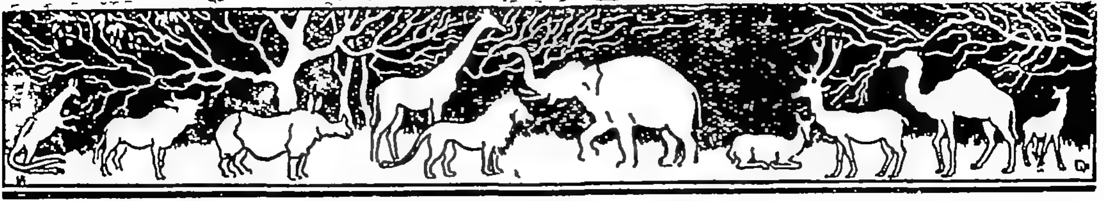
शिकार क्या था ? एक बोरा चावल ! पीछे जब उसको अपनी भूल मालूम हुई तो वह फिर लौटकर उसी खीमे मे आया, लेकिन तबतक वह आदमी एक ऊँचे पेड के ऊपर जा बैठा था।

एक बार एक मुसाफिर दक्षिण अफ्रिका के एक रेतीले मैदान को पार कर रहा था। एकाएक उसने देखा कि एक बहुत बड़ा सिंह उसका पीछा कर रहा है। वह खूब तेजी से आगे बढ़ने लगा। सामने एक छोटी-सी पहाड़ी थी जिसपर वह छिपकर चढ़ने लगा। लेकिन इतने पर भी जब उसने देखा कि सिंह उसका पीछा कर ही रहा है तब वह पहाडी के दूसरी तरफ, जिधर ढालुआ और फिसलाहट थी, कुछ नीचे उतरकर एक पत्थर की आड़ मे छिप गया। इसके बाद उसने बन्दूक को ऊँचा करके उसे कोट और टोपी इस तरह पहना दी जिससे वह देखने मे आदमी-जैसा मालूम पड़े। सिंह जब वहाँ पहुँचा उस कोट-टोपधारी बन्दूक को आदमी समझकर एक छलाँग मे ही उसके ऊपर जा पड़ा। इससे पहाड़ी के नीचे गड्ढे मे गिरकर उसकी जो दुर्गति हुई वह तुम समझ ही सकते हो।



"बन्दूक को कोट और टोपी पहना दो"



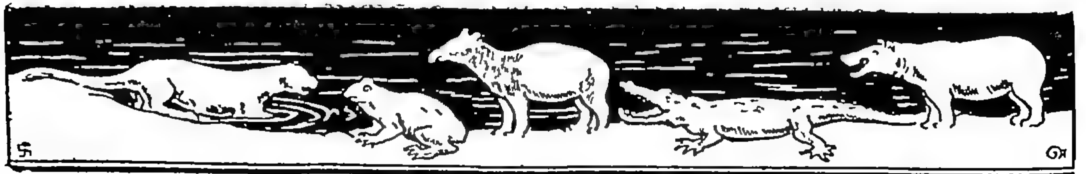


सिंह का बच्चा पकड़े जाने पर आसानी से पोस मान लेता है और सिखाये जाने पर सर्कस में खेल-तमाशा भी दिखलाता है।

कई वर्ष पहले पेरिस की एक सर्कस-कंपनी में एक बडी भयंककर घटना हो गई थी। उस सर्कस-कम्पनी में एक आदमी १९ सिंहों को लेकर तमाशा दिखाता था जिनमें ६ सिंहो को तो उसने खुद सिखाकर तैयार किया था, बाकी १३ दूसरे आदमी द्वारा सिखाये गये थे और तमाशा दिखाने वाले इस नये आदमी को नहीं पहचानते थे। एक दिन ज्योंही वह सिंहों के बड़े पिंजड़े मे घुसा, उसका पाँव फिसल गया। इतने मे एक सिंह—जो उसका सिखाया हुआ नहीं था—उस पर टूट पड़ा और उसे पछाड़कर गिरा दिया। फिर और सब सिंह भी—जो उसी तरह उसके सिखाये हुए नहीं थे—उसकी तरफ दौड़ आये और उसे नोचने लगे। उसकी जान जाने मे अब कोई कसर नहीं रह गई थी।

इसी समय एक बड़ी विचित्र घटना हो गई। पिंजड़े के सिंहो मे जो सबसे बड़ा सिंह था और जो उसका सिखाया हुआ था, फौरन् उस आदमी को बचाने के लिये उन सब सिंहों पर टूट पड़ा जो उसे मँभोड़ रहे थे और पूरी ताकत के साथ उन पर चोट करने लगा। तमाशावाले का यह सिखलाया हुआ सिंह इतनी बहादुरी के साथ उन सब सिंहो के साथ लड़ा कि खुद लहूलुहान हो जाने पर भी उन सबको उस आदमी के पास आने नहीं दिया। इतने में सर्कस के और आदमी वहाँ पहुँच गये और पिंजड़े का दरवाजा खोलकर उस आदमी को बाहर निकाल लिया। वह बहुत घायल हो गया था, इसलिये उसे ९ महीने अस्पताल में रहना पड़ा, तब वह चलने-फिरने लायक हुआ।

कलकत्ते के चिड़ियाखाने में नर और मादा सिंह की कई जोड़ियाँ हैं। मादा सिंह कभी-कभी चिड़ियाखाने में बच्चा भी जनती है। आयरलैंड की राजधानी डबलिन के चिड़ियाखाने में एक मादा सिंह थी जो इतने वर्षों तक जीती रही कि उसके पचास बच्चे हुए। जब वह बहुत बूढी हो गई तो इस लायक भी नहीं रही कि इधर-उधर चल-फिर सके। तब चूहे उसके पिजडे में घुस आते और उसके पाँवों को काटने लगते। बेचारी लाचार होकर सब कुछ सह लेती।



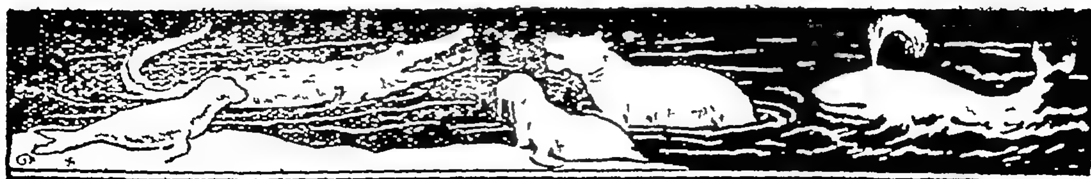


आखिर जब चूहों का ऊधम बहुत बढ़ गया तब उस सिंह के पहरेदार ने उसके पिंजड़े में एक कुत्ते को रख दिया। ज्योंही कुत्ता उस पिंजड़े के अन्दर घुसा वह बूढ़ी सिंहनी उठकर उसे मारने चली। लेकिन कुत्ते ने इसका कुछ भी खयाल नहीं किया। वह पिंजडे के एक कोने में एक चूहे को देखकर उधर दौड़ गया और एक क्षण में ही उसे मार डाला। यह देखकर वह सिंहनी बैठ गई और



रेतीले मैदान में झुण्ड के साथ

विचार करने लगी कि यह कुत्ता उसे तंग करने के लिये नहीं बल्कि उसके साथ दोस्ती करने के लिये भेजा गया है। इसके बाद से वह कुत्ते के साथ दोस्त की तरह हिलमिल गई। हरएक रात को सोने से पहले वह कुत्ते को अपने पास बुला लेती और दोनों एक साथ सो जाते। सिंहनी की चौड़ी छाती पर अपना सिर टेककर कुत्ता उसकी गोद में सोया रहता। इसके बाद से फिर कभी कोई चूहा उस पिंजडे में नहीं गया और उस सिंहनी के दिन शान्ति से कटने लगे।

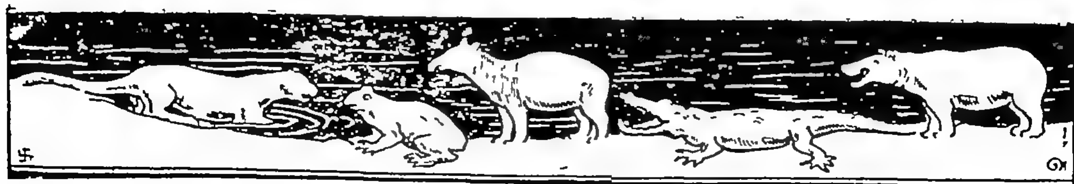




सिंह जब रात मे शिकार करने निकलता है तब वह बहुत जोरे-जोर से गरजने लगता है मानो उसे अपनी ताकत का घमंड हो। जमीन की तरफ मुँह करके वह दहाड़ता है। सिंह जितने जोर से गरजता है उतने जोर से दूसरा और कोई भी जानवर नहीं गरजता। वह किसी सोते या नाले के पास जाकर पानी पीता है और फिर, अगर वह बहुत भूखा नहीं होता, गरजते हुए चलता है और, अगर वह भूखा होता है तो वह चुपचाप रहता है, क्योकि वह जानता है कि दूसरे जानवर पानी पीने आयँगे, इसलिये वह पास में ही छिपकर रहता है और किसी जानवर के वहाँ पहुँचते ही उस पर टूट पड़ता है।

सिंह के शिकार करने का एक दूसरी तरीका भी है। मान लो कि किसी मैदान में बहुत-से हिरन चर रहे हैं। अब अगर सिंह उनका शिकार करना चाहे तो उसके लिये वहाँ दौड़कर जाना बेकार होगा, क्योकि हिरन उसे देखते ही बहुत दूर भाग जायँगे। अगर उस मैदान मे बहुत-सी चट्टाने इधर-उधर बिखरी हुई पड़ी हो तब तो सिंह चुपके से एक चट्टान से दूसरी चट्टान तक छलाँगें मारता हुआ हिरन के बहुत नजदीक पहुँच जाता है और उसे अपने पंजे में कर लेता है। लेकिन अगर चट्टानें न हों तो वह क्या करेगा। ऐसी हालत में दो सिंह एक साथ मिलकर शिकार करते हैं। एक छिपकर जमीन पर लेटा हुआ रहता है और दूसरा चुपके से मैदान के एक छोर में, जहाँ नरकटों की झाड़ियाँ होती हैं, पहुँच जाता है और वहाँ चरते हुए हिरनों के झुंड पर दहाड़ के साथ टूट पड़ता है। हिरन डरकर इधर-उधर भागते हैं और सिंह उनका पीछा करता है। सिंह हिरन-जैसा तेज दौड़ नहीं सकता, इसलिये वह उनका पीछा करते हुए उन्हे खदेड़कर उस तरफ ले जाता है जिस तरफ उसका साथी सिंह छिपा रहता है। उसके पास पहुँचते ही वह सिंह एकाएक उछलता है और अपने दायें-बायें अपने पजे की चपेटों से हिरनों को मार-मारकर गिराने लगता है। इस तरह कुछ हिरनों को मारकर दोनो जी भरकर उनका भोज करते हैं और फिर आराम करने के लिये कहीं लेट जाते हैं।

अच्छा, जानवरों के राजा सिंह के साथ—जिसकी एक दहाड़ से ही सारे जंगल के पशु काँप





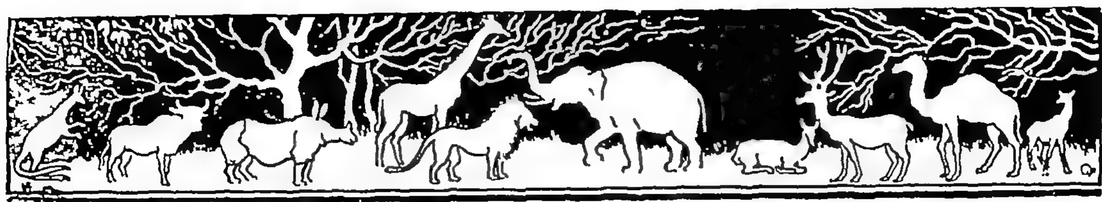
उठते हैं—अगर मनुष्य की लडाई हो तो कौन जीतेगा? तुम झट कह उठोगे—सिंह। और, जीतेगा ही नहीं, लडनेवाले मनुष्य को टुकड़े-टुकडे कर डालेगा। लेकिन तुम्हे यह सुनकर अचंभा होगा कि सैंडो नाम का एक बहुत ही नामवर पहलान हो गया है जिसने एक बार सिंह के साथ लडकर उसे पछाड दिया था। यह कहानी तुम्हें सुनाता हूँ। अमेरिका के एक बहुत बड़े शहर चिकागो में एक मेला लगा था। इस मेले मे दुनिया के सबसे मशहूर पहलवान सैंडो की एक सिंह के साथ कुश्ती हुई थी। यह सिंह एक सर्कस-कंपनी का था और एक पिजडे में बंद रक्खा जाता था। हजारों मनुष्य सिंह और मनुष्य के बीच इस भिडन्त को देखने के लिये इकट्ठे हुए थे। इसके लिये खास तौर से सत्तर फीट के घेरे का एक पिंजड़ा तैयार किया गया था और उसमे सिह रक्खा गया। सिंह के पंजो मे दस्ताना और मुँह पर जाल पहनाया गया ताकि वह लडते समय सैंडो को भँभोड़ न सके। इसके बाद सैंडो कमर तक नंगे होकर विना किसी हथियार के उस बडे पिंजडे मे



जंगल का बादशाह

घुसा। उसे देखते ही सिंह उसपर टूट पडने के लिये तैयार हुआ। लेकिन उसके उछलते-उछलते सैंडो उसके सामने से जरा बगल मे बडी फुर्ती के साथ हट गया जिससे सिंह का निशाना चूक गया। इसके बाद सिह फिर उछलकर उसपर हमला करने की कोशिश करता, इसके पहले ही सैंडो ने बडी फुर्ती से उसके गले को बाये हाथ मे और देह के बिचले हिस्से को दाये हाथ से जोर से





दवाकर पकड़ा। फिर उसने साढ़े ६ मन वजन के उस सिंह को अपने कधे पर उठाकर उसे आदर के साथ पुचकारा और अपनी छाती से लगा लिया और तब उसे उलटाकर लेटा दिया। पहली वार मे ही इस तरह हार खाकर सिंह बड़े जोर से गरज उठा और सैंडो पर हमला करने के लिये उसकी तरफ दौडा। सैंडो के सिर पर जोर से चोट करना ही चाहता था कि सैंडो ने उस चोट से अपनेको बचा लिया और फौरन सिह को जोर से पकड़कर जकड दिया। सिंह की छाती से सैंडो की छाती सटी हुई थी और सिंह के दोनो पाँव उसके कंधे के ऊपर थे। इसी अवस्था मे कुछ क्षणो तक दोनों के बीच गुत्थमगुत्थी चलती रही।

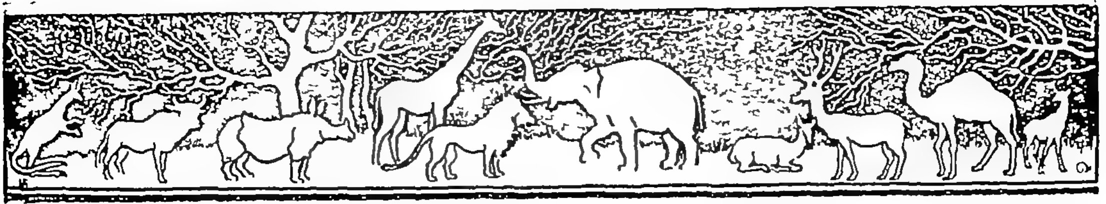
सैंडो सिंह को जितना ही जोर से दबाकर रखने की कोशिश करता, वह उतना ही उसे नोचने और काटने की चेष्टा करता। उसके पाँवों मे दस्ताने रहने पर भी उसने सैंडो के पाँव मे बहुत-से घाव कर दिये। लेकिन सब तरह से अपनी पूरी ताकत की आजमाइश करके भी सिंह अपनेको सैंडो के शिकंजे से नहीं छुडा सका। इसके बाद मौका देखकर सैंडो ने सिंह की भारी देह को अपने शिकंजे से छुडाकर उसे अलग फेंक दिया। इस समय सिंह की सूरत बडी डरावनी हो रही थी और वह सैंडो से बदला लेने के लिये आगबबूला हो रहा था। उसका यह रूप देखकर सैंडो की इच्छा एक वार और उसके साथ खेलने की हुई। वह कुछ दूर आगे बढकर सिंह की ओर पीठ करके खड़ा हो गया, मानों वह सिह को अपनी पीठ पर चढने के लिये इशारा कर रहा हो। कुछ क्षणों में ही सिंह उसकी पीठ पर सवार हो गया। सैंडो ने पीछे की ओर अपने दोनों हाथों को करके सिंह की देह को जोर से पकड लिया और बडी हिम्मत, बहादुरी और चालाकी के साथ उसको अपने सिर के ऊपर उठाकर सामने जमीन पर पटक दिया। सैंडो के कंधे लहूलुहान हो रहे थे और पाँव और देह में सिंह के पजे के बहुत-से घाव थे। इसी हालत में वह पिंजड़े से बाहर निकला। इस जीत से उसका नाम सारी दुनिया में फैल गया और लोगों में इस सैंडो सिंह की चर्चा बहुत दिनों तक चलती रही। इसके बाद से जब कभी सैंडो उस सिंह के पिंजड़े के अंदर जाता, वह पालतू कुत्ते की तरह उसके सामने लेट जाता और हजार कोशिशें करने पर भी उसके साथ लडने के लिये तैयार नहीं होता। अब सैंडो सिंह को अपने कंधे पर उठाकर चारों ओर घुमने लगा। सिंह पालतू भेड के समान उसकी चौडी पीठ पर पडा हुआ रहता, जरा भी हिलता-डुलता नहीं।



बाघ

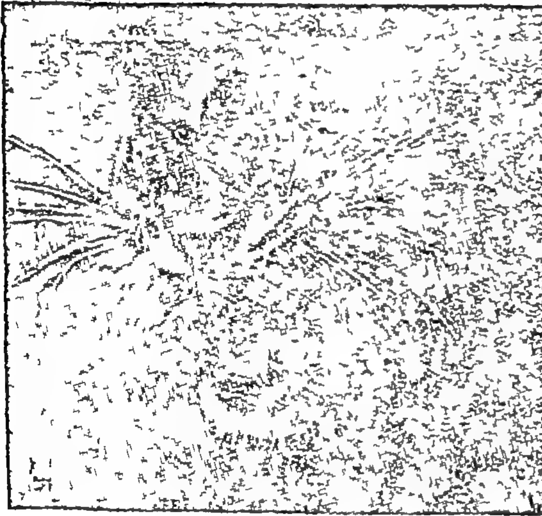
सिंह भले ही जानवरों का राजा कहा जाता हो; मगर बाघ बल, साहस और बहादुरी में किसी तरह सिंह से कम नहीं है। इतना ही नहीं, तुम्हें यह सुनकर अचंभा होगा कि अब तक बाघ और सिंह के बीच जहाँ-जहाँ लड़ाई सुनी गई है वहाँ बाघ की ही जीत हुई है। कलकत्ते के चिड़ियाखाने में एक बार बाघ और सिंह के बीच लड़ाई हुई थी जिसमें सिंह मारा गया। एक बार लन्दन के चिड़ियाखाने में भी इसी तरह की लड़ाई हुई थी जिसमें सिंह घायल





होकर कई दिन के बाद मर गया। और भी कई बार इस तरह की भिड़न्त हो चुकी है, पर सिर्फ एक बार बाघ के हारने की बात सुनी गई है। इसी से तुम समझ सकते हो कि बाघ कितना जबरदस्त जानवर होता है।

जिस तरह सिंह का वासस्थान अफ्रिका महादेश है, उसी तरह बाघ भी एशिया छोड़कर और किसी महादेश में नहीं पाया जाता। हमारे देश के बहुत-से स्थानों में बाघ पाया जाता है। बंगाल के सुन्दरवन में और आसाम, उड़ीसा, छोटानागपुर और मध्यप्रदेश के पहाड़-जंगलों में बाघ बहुतायत से पाये जाते हैं। पंजाब और मद्रास के किसी-किसी स्थान में भी बाघ देखा जाता है। नेपाल के जंगलों में भी बाघ पाया जाता है। सुन्दरवन के बाघ डीलडौल में बहुत बड़े होते हैं। इन्हें आदमखोर या मनुष्य को खानेवाला बाघ कहते हैं।



खूँखार चेहरा

बाघ सिंह से भी बढ़कर भयानक जानवर समझा जाता है। यह बहुत ही चालाक और निष्ठुर होता है। भूखा न रहने पर भी यह जानवरों को मार डालता है। नाक से पूँछ के छोर तक इसकी लम्बाई करीब आठ हाथ होती है। इसकी देह का रंग पीला और उसपर काले रंग की धारीदार लकीरें होती हैं। छाती, पेट और पाँव का भीतरी हिस्सा सफेद होता है। यह बड़ा बलवान होता है। बड़े-बड़े बैल, गाय, भैंसा आदि को मारकर और उसे दाँतों से पकड़कर यह बहुत दूर तक ले जा





सकता है। इतना बोझ लेकर भी यह रास्ते से कूदकर नाले और गड्ढे को पार कर जाता है और टीले पर चढ़ जा सकता है। इसके पंजे में इतना जोर होता है कि उसकी एक थाप से ही यह बड़े-से-बड़े जानवर को मार कर गिरा दे सकता है। इसके दाँत इतने मजबूत और तेज होते हैं कि उन सब जानवरों की मोटी-मोटी हड्डियों तक को चूर-चूर कर दे सकता है। यह सारी रात शिकार की खोज में घूमता रहता है। दिन में घने जंगलों और पहाड़ों की गुफाओं में आराम करता है। यह घास-फूस और नरकट की झाड़ियों में छिपकर शिकार करता है। इन सबके रंग के साथ इसकी देह का रंग इतना मिलता-जुलता है कि बहुत पास आ जाने पर भी इसका आना मालूम नहीं होता। जिस समय यह नरकटों और लम्बी घासों के बीच अपने शरीर को सिकोड़कर घात में छिपा रहता है उस समय यह जमीन-जैसा मालूम पड़ता है और इसकी देह पर की धारीदार रेखाएँ लम्बे नरकटों की छाया-जैसी मालूम पड़ती हैं। बाघ प्रायः हिरन, जंगली सूअर और जंगली मुर्गों का शिकार करना पसंद करता है। बूढ़ा होने पर या किसी शिकारी की गोली से घायल हो जाने पर जब यह जंगल के शिकार को पकड़ने लायक नहीं रहता तब यह छिपकर मनुष्य की बस्ती के पास चला जाता है और वहाँ से मवेशियों को उठा ले जाता है। अपने देश के बहुत-से स्थानों में बाघ का यह उपद्रव बहुधा होता रहता है। कहीं-कहीं तो गाँव के लोग इससे तंग आ जाते हैं। मवेशी का रखवाला जब बाघ को देखकर मारे डर के अपने मवेशियों को छोड़कर भाग जाता है तब बाघ समझता है कि यह डर गया है। इसलिये यह मवेशियों को छोड़कर मनुष्य पर हमला करना शुरू कर देता है।

बाघ तैरने में बड़ा उस्ताद होता है। शिकार की टोह मिलने पर यह रास्ते की बड़ी-बड़ी नदी तक को पार कर जाता है। जरूरत होने पर यह पेड़ पर भी चढ़ सकता है। सब बाघ मनुष्य को खाने-वाले नहीं होते। ऐसे भी बहुत-से बाघ हैं जिन्होंने कभी किसी मनुष्य का खून नहीं किया और जंगल के आसपास में मनुष्य को देखते ही आँख बचाकर अलग चले जाते हैं। फिर भी भारतवर्ष में हर साल सैकड़ों मनुष्य और हजारों मवेशी बाघ-द्वारा मारे जाते हैं। एक बार मनुष्य के खून का स्वाद चख लेने पर बाघ की हिम्मत बहुत बढ़ जाती है और यह प्रायः वन से बस्तियों में आकर मनुष्य पर



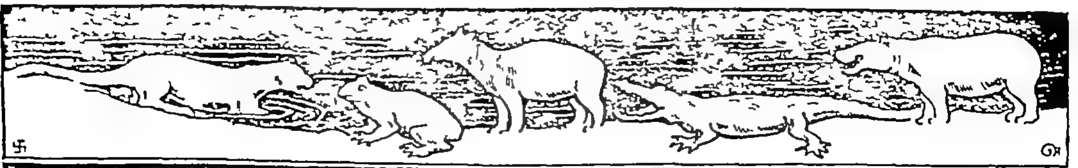


धावा करता है। एक बार एक बाघ ने इतना ऊधम मचा रक्खा था कि अकेले उसने १२७ आदमियों का वध कर डाला। जहाँ बाघ रहता था उसके पास की बस्ती में डेढ़ महीने तक किसी का जाने का साहस नहीं होता था। आखिर वह बाघ मारा गया।

× × × ×

शिकार की खोज में

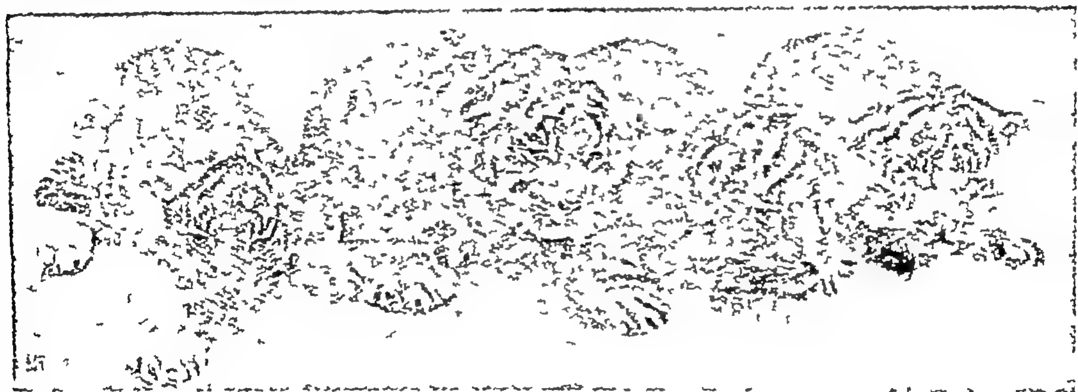
उसका प्यार का नाम 'मुन्नू' था। सब लोग उसे 'मुन्नू' कहकर ही पुकारा करते थे। उम्र बारह बरस से ज्यादा नहीं थी। वह दिन-रात एक बाघ के बच्चे के साथ खेला करता था। उसका





पिता एक नामी शिकारी था। अपने पिता से ही 'मुन्नू' को यह बच्चा खेलने के लिये मिला था। अपने पिता से शिकार की कहानियाँ सुन-सुनकर मुन्नू इस उम्र में ही शिकार की बहुत-सी बातें जान गया था। इस तरह की कहानियाँ सुनने में उसका जी इतना लगता कि वह नहाना-खाना भूल जाता, अपने संगियों के साथ फुटबाल खेलने भी नहीं जाता। वह रोज सुबह-शाम पिता के पास बैठकर जानवरों की मजेदार कहानियाँ सुनता और मन में मंसूबा करता कि वह दिन कब आवेगा जब वह भी अपने पिता के समान हाथी पर सवार होकर बन्दूक से बाघ, हाथी और दूसरे जंगली जानवरों का शिकार करेगा।

मुन्नू बाघ के बच्चे को साथ लिये हमेशा इधर-उधर घूमा करता। कभी उसे अपने पास से अलग नहीं करता। उसे साथ लेकर एक ही बिछावन पर सोता। बाघ का वह बच्चा भी पालतू कुत्ते



बाघ के बच्चे

के समान मुन्नू का साथ छोड़कर और कहीं न जाता। एक बार पुचकारकर पुकारते ही अपनी पूँछ को मोड़कर मुन्नू के पास आ जाता और उसके हाथ-पाँव को चाटने लगता। वह मुन्नू के साथ कितनी ही तरह के खेल खेलता।





इसी तरह कुछ दिन बीत गये और वह बच्चा बढ़कर एक विडाल के समान हो गया। उसी तरह दो चमकती हुई आँखें, दाँत, नख और पंजे। अब उसके मॅूछें भी निकल आईं और देह पर धारीदार रेखाएँ साफ-साफ मालूम होने लगीं। किसी कुत्ते या बिल्ली की क्या मजाल कि उसके डर से अब उस घर के आसपास कहीं भाँकने का भी साहस करे। मुन्नू के घर के आसपास कुछ दूर पर आसाम-प्रान्त के घने जंगल थे। उन जंगलो से बनैले सूअर रात में चरने के लिये निकलते और लोगों के बाग-बगीचे और खेतो की फसल को तहस-नहस कर डालते। मगर बाघ के डर से मुन्नू के पिता के बगीचे में कोई सूअर कदम नहीं रखता।

अब बच्चे की देह से एक तरह की गंध निकलने लगी थी जिससे मुन्नू ने उसे साथ न सुलाकर उसके सोने के लिये एक बक्स अलग रख दिया था। बाघ का बच्चा उस बड़े बक्स के अंदर रहता और दिन-रात कुत्ते की तरह पहरा देता।

मुन्नू ने बाघ के बच्चे का नाम 'बाबू' रक्खा था। रोज उसे साबुन लगाकर नहलाता और पोछपाँछकर खूब साफ-सुथरा रखता। बाबू कहकर पुकारते ही, वह चाहे कहीं भी हो, फौरन् दौडकर मुन्नू के पास आ जाता। शुरू मे बाघ के बच्चे को दूध और बिस्कुट खाने के लिये दिया जाता। बडा होने पर वह कटोरा का कटोरा दूध पी जाता, लेकिन उसकी भूख नहीं मिटती। इसके बाद उसे थोडा पकाया हुआ मास भी दिया जाने लगा।

मुन्नू अक्सर बाबू को साथ लेकर गाँव से बाहर घूमने निकलता। एक दिन इसी तरह वह बाबू को साथ लिये घूम रहा था। शाम हो रही थी। एक घनी भाडी के पास से होकर दोनों जा रहे थे। इसी समय सामने से होकर एक नेवला उस भाडी मे घुस गया। बाबू ने गुर्राने की आवाज करते हुए उस भाड़ी में नेवले का पीछा किया।

भाडी को रौंदता हुआ वह आगे बढने लगा। अन्धेरे में अब उसका गरजना छोड़कर और कुछ सुनाई न पडने लगा। मुन्नू के बार-बार पुकारने पर भी वह न लौटा, भाडी के भीतर





घुसता ही गया। पालतू बाघ के बच्चे का यह रंग-ढंग देखकर मुन्नू बहुत डरा और रोनी-सी सूरत लेकर घर लौटा।

दूसरे दिन शाम हो जाने पर भी जब बाबू न लौटा तब लोगों ने समझा कि वह भागकर बाघ के झुंड में मिल गया है—अब लौटकर नहीं आयेगा।

रात काफी बीत चुकी थी। मुन्नू बिछावन पर लेटे-लेटे बाबू के बारे में सोच रहा था—कहाँ होगा, क्या खाता होगा। इस तरह सोचते-सोचते उसे नींद आ गई। भोर होने पर उसके पिता ने उसे जोर से पुकारते हुए उठाया—"मुन्नू, उठो-उठो, देखो, रात में बाबू कहाँ से आकर अपने बक्स के ऊपर सो गया है।

यह सुनते ही मुन्नू उठकर फौरन् घर के बाहर दौड़ आया और पुकारा, बाबू! बाबू दौड़कर उसके पास आया और उसका हाथ इस तरह चाटने लगा मानो कुछ हुआ ही न हो। मुन्नू के पिता ने उसे मना कर दिया कि अब वह बाघ के बच्चे को साथ लेकर बाहर घूमने न जाय। उस दिन 'बाबू' को और कुछ खाने के लिये नहीं दिया गया। मुन्नू के पिता ने सबको पहले से ही होशियार कर दिया था कि कोई उसे खाना न दे। यही उसे सजा दी गई।

उसी दिन तीसरे पहर मुन्नू अपने पिता के साथ चाय पी रहा था। मुन्नू के पिता उसे शिकार की कहानियाँ सुना रहे थे। इसी समय बाबू भी मुन्नू के पाव के पास आकर चुपचाप बैठ गया और उसका पाँव चाटने लगा। बाघ की जीभ का ऊपरी भाग एकदम खुरखुरा—ठीक कड़ा ब्रश-जैसा—होता है। अतः इस तरह कुछ देर तक चाटने के बाद मुन्नू के पाँव से लहू बहने लगा। लेकिन मुन्नू का ध्यान इधर बिल्कुल न था। मुन्नू के पिता का ध्यान बाघ की ओर ही था। उन्होंने चुपके से मुन्नू के कान में कहा कि बाबू की तरफ बिना देखे और बिना कुछ बोले घर में चले जाओ। मुन्नू इसका मतलब कुछ समझ न सका, फिर भी वह अपने पिता का हुक्म मानकर घर में घुसने के लिये विदा हुआ। बाबू भी उसके पीछे-पीछे चलने लगा। इतने में मुन्नू के पिता ने जल्दी घर में घुसकर दरवाजा बंद कर दिया और इसके साथ ही खिड़की से उस





शैतान के ऊपर दो बार गोलियाँ चलाईं। बडे जोर से चिघाड़ता हुआ पछाड खाकर वाघ कुछ दूर पर जा गिरा और वहीं ढेर हो गया।

जो वाघ एक वार शिकार करना सीख जाता है—कच्चा मास और ताजा खून का स्वाद चख लेता है, उस पर फिर विश्वास नहीं किया जा सकता। यह एक वहुत सीधी-सी वात है जिसे मुन्नू के पिता अच्छी तरह जानते थे। इसलिये तो वह उस दिन सवेरे से ही मुन्नू पर नजर रक्खे हुए थे और उसे कभी अपनी नजरो की ओट नही होने देते थे।

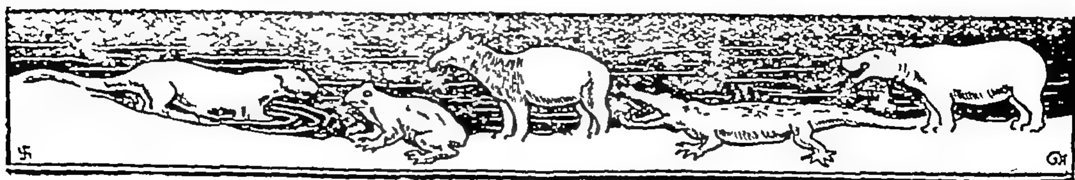
वाघ और मनुष्य के वीच लड़ाई होने की एक सच्ची कहानी तुम्हें सुनाता हूँ। हाल मे, कुछ ही समय पहले, भूपाल-राज्य मे, जव वहाँ के नवाब जंगल मे शिकार खेलने गये थे, वाघ और मनुष्य के वीच यह लडाई हुई थी।

नवाव साहव का खीमा जिस जगह पर गाड़ा गया था वहाँ से एक माइल पर वाघ के रहने की खवर मिली थी। शिकारी हाथी और साथ के और आदमियो को लेकर सव लोग वहाँ पहुँचे। वहाँ एक मचान तैयार किया गया जिस पर शिकारी लोग चढ़कर वैठ गये। साथ मे जो फोटोग्राफर था वह भी वहीं जा वैठा। नीचे कुछ आदमी वन्दूक के साथ पहरा दे रहे थे। इसी समय नवाव साहव को एक जरूरी चीज खीमे से मँगाने की जरूरत पडी। उन्होंने अपने एक साहसी नौकर को वह चीज लाने के लिये भेजा। वह भी एक पक्का शिकारी था। विना किसी हथियार के ही वह अकेला चल पडा।

वह अभी वहुत दूर भी नहीं गया होगा कि उसकी चिल्लाहट से वह सूनसान जंगल गूँज उठा। मचान क सवस ऊपरी खंड मे जो आदमी था उसने पीछे की ओर मुड़कर देखा तो एक वहुत वडा वाघ झुरमुट से उछलकर उस नौकर के ऊपर झपटता हुआ दिखाई पड़ा।

शिकारी लोग अपनी-अपनी वन्दूक लेकर सँभल कर वैठ गये और ऐसा मौका ढूँढ़ने लगे कि नौकर को वचाकर वाघ पर गोली चला सकें।

वाघ पहले वार मे ही उस आदमी को लेकर जमीन पर जा गिरा और अव दोनों मे





गुत्थमगुत्थी होने लगी। कभी आदमी के ऊपर बाघ और कभी वह आदमी बाघ को ऊपर से दबा-कर उसकी आँख और गले को दबाये रखता था। इधर बाघ उस आदमी को अपने कब्जे में करने के लिये थाप-पर-थाप चला रहा था, मगर अच्छी तरह से भँभोडने की उसे सुविधा नहीं होती थी।

नवाब साहब ने जोर से चिल्लाकर अपने नौकर से कहा—"जहाँ तक हो सके, दोनों हाथों से घूँसा चलाकर बाघ को परेशान कर डालो।" उन्होंने सोचा था, इस तरह परेशान करते रहने पर बाघ को जोर से काट खाने का मौका नहीं मिलेगा और इसी बीच में एक क्षण का भी मौका मिलने पर शिकारी लोग एक गोली से ही बाघ का तमाम कर डालेंगे।

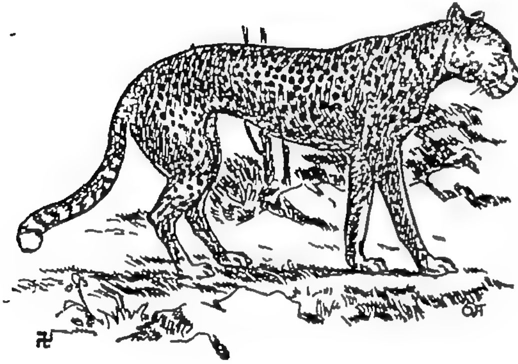
अपने मालिक की बात से और भी जोश में आकर वह आदमी बाघ को घूँसों और अपने पाँव के जूते की ठोकरों से मारने लगा। बाघ के जबडों से वह अपने सिर और उसके तेज नाखूनों से अपने पेट और पीठ को किसी तरह बचाता रहा। बीच में दो-एक बार बाघ पर निशाना करने का मौका भी मिला था, लेकिन नवाब ने शिकारियों को गोली चलाने नहीं दिया; क्योंकि बाघ का मुँह मचान की तरफ था और उस हालत में अगर गोली चलाई जाती तो बाघ के सिर को छोड़कर और किसी दूसरी जगह पर गोली नहीं लगती। इससे बाघ मरता नहीं और वह और भी गुस्से के साथ उस आदमी पर चोट करता। इसके सिवा एक बात यह भी थी कि भूपाल-राज्य के शिकारियों में यह विश्वास फैला हुआ है कि आँख छोडकर बाघ के मुँह के किसी और स्थान पर गोली चलाना पाप है। अगर गोली चलाई जाय तो वह मरा हुआ बाघ भूत बनकर चाँदनी रात में शिकारियों से बदला लिये बिना नहीं रहता। इसलिये शिकारी लोग भी बाघ के सिर या मुँह पर गोली चलाना नहीं चाहते थे।

पाँच-छः मिनट तक इस तरह लडाई होते रहने के बाद वह आदमी ढीला पडने लगा। अब वह बिलकुल बेबस-सा हो गया था। बाघ के भँभोड़ने और नोचने-खसोटने से उसकी देह लहू-लुहान हो रही थी। ऐसी दशा में बडे आश्चर्य-जनक ढंग से उस आदमी की जान बच गई। बाघ दूर खडा





हुआ हाँफ रहा था। अब वह कुछ निश्चिन्त-सा होकर समझ रहा था कि शिकार उसके वाबू में आ गया है। शिकार के चारो तरफ घूमकर कुछ पीछे हटकर वह उस आदमी के ऊपर उछलना ही चाहता था कि इसी समय शिकारियों को मौका मिल गया और एक साथ तीन बार बन्दूक की धाँय-धाँय आवाज हुई। गोलियाँ बाघ के कलेजे को छेदकर साफ बाहर निकल गईं। चोट से व्याकुल होकर बड़े जोर से गरजते हुए बाघ ऊपर की ओर उछला, और फिर इसके बाद जो वह जमीन पर गिरा सो फिर उठा नहीं।

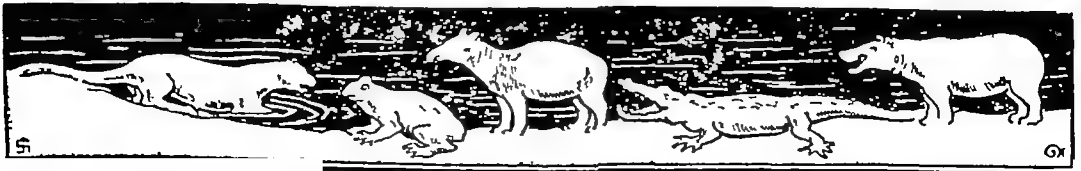


चीता-बाघ [१]

उधर वह आदमी बेहोश पड़ा हुआ था इधर उसके पास में ही दस-बारह हाथ पर वह बाघ मरा हुआ पड़ा था, पर इसकी उसे कुछ भी खबर न थी। नवाब के हुक्म से वह आदमी फौरन अस्पताल भेजा गया। उसके सारे बदन में अनगिनत घाव थे जिनसे खून बह रहा था। मगर कोई हड्डी नहीं टूटी थी। डाक्टरो को उमीद थी कि वह बच जायगा।

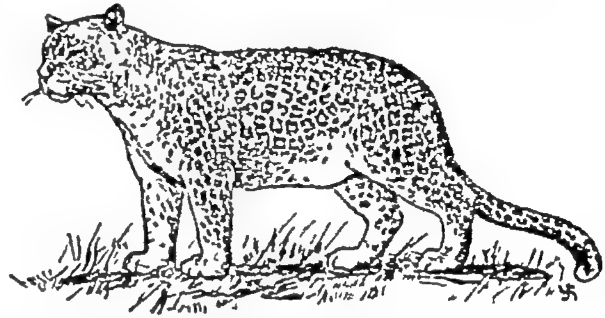
चीता-बाघ

एशिया और अफ्रिका में सब जगह चीता-बाघ पाया जाता है। यह बाघ से आकार-प्रकार में छोटा होता है, लेकिन उससे कहीं ज्यादा चालाक-चतुर और भयानक स्वभाव का होता है। अफ्रिका के लोग तो सिंह और गरीला से भी बढ़कर चीता-बाघ से भय करते हैं। यह लुकाछिपी खेलने में बड़ा उस्ताद होता है। मनुष्य के पास यह लुकाछिपी खेलते हुए पाँच-सात गज की दूरी पर पहुँच जाता है, फिर भी मनुष्य को इसका पता नहीं चलता। इसकी देह का रंग पीला होता है और उस पर काले-काले धब्बे होते हैं। जंगली हालत में सिंह और बाघ से भी बढ़कर यह





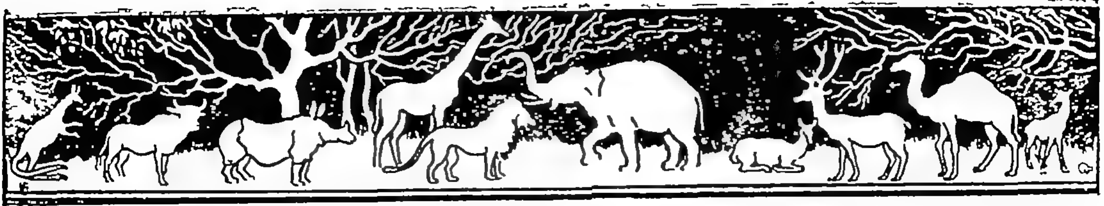
भयावना होता है, क्योंकि यह पेडो पर चढ सकता है। सिह और बाघ पेड पर नहीं चढ सकते। यह पेड़ की डाल पर छिपकर बैठा रहता है और किसी लडके या जानवर को उसके नीचे चलते देखकर उछलकर उसे मार डालता है। बिल्ली जब चूहे को पकडती है तब पहले उसके साथ खेलती है और फिर उसे मार डालती है। लेकिन चीता-बाघ तो शिकार को पकड़ते ही उसे फौरन् मार डालता है। यह बड़ा ही धूर्त जानवर होता है। प्रायः स्त्रियो और बच्चों पर यह बहुत चोट करता है। एक बार एक चीते ने अपने देश के एक गाँव मे इतना ऊधम मचा रखा था कि गाँव के कुएँ पर पानी भरने के लिये जो स्त्रियाँ और बच्चे आते थे उन पर चोट करके उन्हे मार डालता था। इस तरह अकेले उस चीता-बाघ ने एक सौ स्त्रियो और बच्चों को मार डाला था।



चीता-बाघ [२]

पकड़े जाने पर चीता-बाघ पोस भी मानता है। मालिक से लाड़प्यार पाने पर यह ठीक पालतू बिल्ली की तरह उसके पाँव के पास लोटता हुआ चलता है। मालिक के लिये इसे शिकार करना सिखलाया जाता है। अपने देश के बहुत-से राजे-महराजे शिकार पकड़ने के लिये चीता-बाघ को पालते हैं। सिखाये जाने पर यह अपने मालिक के लिये हिरन का शिकार करता है और उसे पकडकर ले आता है। इस तरह के चीता-बाघ को, जहाँ हिरन और बारहसिंघे के झुंड चरते रहते हैं, वहाँ ले जाकर छोड़ देते हैं। पहले इसका सिर एक कपडे से ढँका रहता है। जब कपडा हटा दिया जाता है, यह फौरन् उछलकर हिरन को पकड लेता है और उसे अपने मालिक के पास ले आता है। एक प्रकार का चीता-बाघ होता है जिसे सफेद चीता कहते है। यह ऊँचे पहाड़ो पर, जहाँ हमेशा बर्फ जमी रहती है, रहता है। इसकी देह के रोएँ बहुत बढ़ जाते हैं, जिनसे इसका





शरीर गर्म रहता है। ठीक वर्फ की तरह यह सफेद मालूम होता है, और उस सफेदी पर काले-काले धब्बे होते हैं। वर्फ के रंग से इसकी देह का रंग मिलने के कारण यह चुपके से अनजाने शिकार पर चोट करता है। पकड़-कर गर्म देश में लाये जाने पर इसकी वर्फ-जैसी सफेदी नहीं रह जाती।



सफेद चीता

चीता-बाघ विशेषतः बकरा, भेड़, हिरन, मुर्गा और वत्तख-जैसे छोटे-छोटे पशु-पक्षियों का शिकार करना पसंद करता है। सर्कसवाले भी इसे पालते हैं।

जैग्वार

अमेरिका में एक तरह का चीता-बाघ होता है जिसे जैग्वार कहते हैं। यह चीता-बाघ से कद में कुछ बड़ा और मोटा होता है। इसके पाँव और सिर भारी तथा इसकी देह पर के काले धब्बे भी बड़े-बड़े होते हैं। देखने में यह चीताबाघ से ज्यादा डरावना मालूम पड़ता है। चीता-बाघ की तरह ही यह भी पेड़ पर चढ़कर शिकार पर चोट करता है। कोई भी शिकार इसके हमले से बच नहीं सकता।

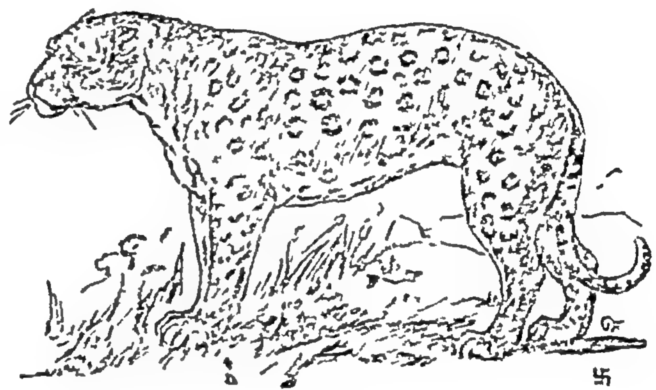
एक जहाज का कप्तान एक जैग्वार को साथ लेकर अमेरिका से इंगलैंड आ रहा था।





उस जैग्वार का नाम उसने 'डाक्टर' रखा था। वह कप्तान से इतना हिलमिल गया था कि नाम लेकर पुकारते ही कुत्ते की तरह पूँछ सटकाकर कप्तान के पास दौड़कर आ जाता। जहाज के डक के ऊपर वह चुपचाप लेटा रहता। कभी-कभी तो ऐसा देखा जाता कि कप्तान भी जैग्वार की देह पर अपना सिर टेककर पास में ही सोया हुआ है। कप्तान के इस तरह करने से जैग्वार को और भी खुशी होती।

जहाज के लन्दन पहुँ पर लोगो ने खयाल किया कि जैग्वार सहज ही चिडियाखाने मे नहीं जायगा, उसे पिंजडे में बन्द करके या गले मे जंजीर बाँधकर ले जाना पड़ेगा। लेकिन सबको यह देखकर अचंभा हुआ कि जगुआर पालतू कुत्ते की तरह मालिक के पीछे-पीछे चल रहा है। एक और अचम्भे की बात यह देखी गई कि वह अधिक उम्र के स्त्री-पुरुषों को अपने पास आने और सिर पर हाथ रखकर सहलाने तथा पुचकराने देता, लेकिन छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों को ऐसा नहीं करने देता; उन्हे देखकर या कुत्ते को देखकर वह अनायास बिगड उठता।



जैग्वार

दो वर्ष के बाद वही कप्तान जब 'डाक्टर' को देखने गया तब अपने पुराने दोस्त को देखते ही वह मारे खुशी के उछलने लगा। कप्तान उसके सिर पर हाथ रखकर उसे पुचकारता और वह उसकी देह चाटता।

पूमा

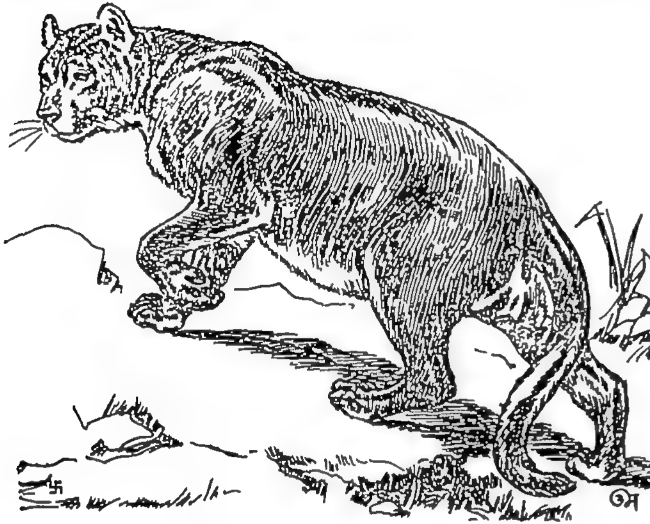
बिडाल-जाति का एक दूसरा जानवर 'पूमा' होता है, देखने मे प्रायः सिंह-जैसा। इसलिये

c



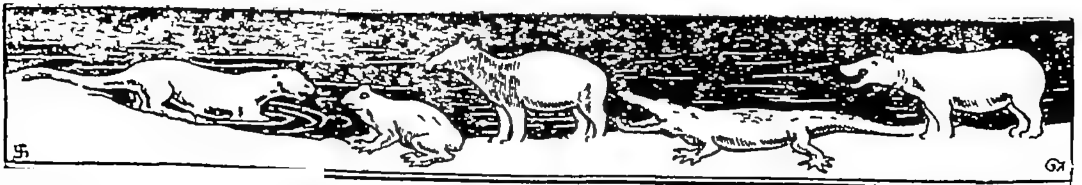


इसे 'अमेरिका का सिंह' भी कहते हैं। यह बड़ा हिंसक जानवर होता है और घोड़ा या बैल तक को मार दे सकता है। लेकिन कुत्ते को मारकर उसका मांस खाना इसे बहुत अच्छा लगता है। यह पालतू भी बनाया जा सकता है, लेकिन कुत्ते पर नजर पड़ते ही यह बिगड़ उठता है और उस समय यह भूल जाता है कि वह पालतू है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि दूसरे जानवर के चंगुल से मनुष्य को बचाने के लिये इसने अपनी जान तक दे डाली है। जैग्वार और भालू तक से यह भिड़ जाता है। लेकिन मनुष्य पर यह शायद ही कभी चोट करता है। जहाँ पूमा रहते हैं वहाँ लोग निश्चिन्त होकर सोते हैं, क्योंकि वे पूमा को मनुष्य का दयालु दोस्त समझते हैं।



पूमा

एक बार एक सर्कस में तमाशा दिखाने के लिये पिंजड़े से एक पूमा बाहर किया गया। पूमा ठीक तरह से खेल दिखा ही रहा था कि उसकी नजर लोगों की भीड़ में एक कुत्ते पर पड़ी। कुत्ते को देखते ही वह इस कदर अपने को भूल गया कि लोगों की भीड़ में से होकर उछलता हुआ उस जगह पर पहुँच गया जहाँ कुत्ता था। इधर लोगों में भगदड़ मच गई और चिल्ल-पों होने लगी, उधर पूमा ने कुत्ते को मार डाला तथा फिर दूसरे कुत्ते को देखकर वहाँ भी दौड़ गया और उसका भी काम तमाम कर डाला। एक कुत्ते को तो मुँह में पकड़े हुए ही अपने पिंजड़े में पहुँच गया।





मनुष्य के साथ पूमा कितना हिलमिल जाता है और मनुष्य का वह कितना जल्दी दोस्त बन जाता है, यह नीचे की कहानी से मालूम हो सकता है—

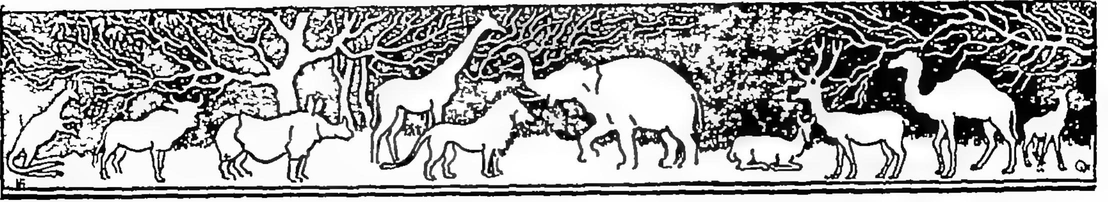
पहले अमेरिका महादेश को लोग नहीं जानते थे। जब अमेरिका का पता चला तब यूरोप के नाना देशो से लोग वहाँ जाकर बसने लगे। स्पेन देश से जो लोग गये थे उनके साथ अमेरिका के जंगली लोगों का घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध मे स्पेन के लोगो की हार हुई। जंगली लोगों ने उन लोगों के एक शहर को घेर लिया। उसी समय उनकी एक लडकी इन जंगलियो के हाथ मे पड गई। उस लड़की की मीठी वातों को सुनकर ये लोग इतने खुश हुए कि उसे मार डालने के लिये इनका हाथ न उठा। वह लडकी इन्हीं लोगों के साथ रहने लगी।

इसके कई महीने के वाद जब दोनो दलो मे मेल हो गया तब वह लडकी छोड दी गई। वह वड़े आनन्द से अपने घर लौट आई। लेकिन उस शहर के हाकिम ने उसे बुलाकर कहा—"तुम्हारी सब चालाकी हमलोग जान गये हैं। तुम अपनी इच्छा से ही जंगली आदमियो के साथ चली गई थी। इसकी सजा तुम्हे मिलेगी और वह सजा यही होगी कि तुम्हें जंगल मे अकेली छोड दिया जायगा, जहाँ वाघ-भालू तुम्हें मारकर खा जायँगे।"

यह कहकर उसने अपने सिपाहियो को हुक्म दिया कि वे उस लडकी को जंजीर मे बाँधकर जंगल मे ले जायँ और वहाँ अकेली छोड़ दें। यह सजा सुनकर उस लडकी के माँ-बाप तो फूट-फूटकर रोने और छाती पीटने लगे। किन्तु इतने पर भी उस निर्दयी हाकिम को कुछ भी दया न आई। सिपाही लोग उस लडकी को जंजीर से बाँधकर जंगल में ले जाकर छोड़ आये। सब लोगो ने सोचा कि जिस जंगल मे छोडी गई है वहाँ जेग्वार और पूमा का अड्डा है; इसलिये रात बीतते-बीतते जंगली जानवर उसे मारकर खा जायँगे।

दो दिनों के वाद जब उसकी खोज-खबर ली गई तब पता चला कि लड़की अबतक जीती है। यह देखकर सब लोग बड़े आश्चर्य में आ गये। पूछने पर उस लडकी ने बताया कि जिस दिन सिपाही



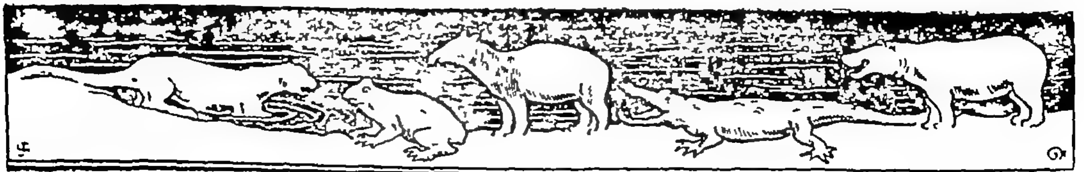


और दाँत-नख तेज होते हैं। चलते समय भालू ठीक मनुष्य की तरह पाँव के तलवे पर जोर देकर चलता है। यह मासाहारी जानवर है सही; लेकिन यह फल, अन्न और शहद खाना भी पसंद करता है और इन सब चीजों को खाकर जीता रह सकता है।

एक और जाति का भालू होता है जिसे मेरु-प्रदेश का सफेद भालू कहते हैं। यह आठ-नौ फीट तक लम्बा होता है। मेरु-प्रदेश के यात्री इस भालू से बहुत डरते हैं। मेरु-प्रदेश में, जहाँ हमेशा बर्फ जमी रहती है और घोर सर्दी पडती है, यह बर्फ पर चलता-फिरता है और अपने आहार की खोज करता है। देखने में यह बिलकुल सफेद बर्फ-जैसा होता है जिससे दूर से यह पहचाना नहीं जा सकता। इसका मुख्य भोजन समुद्री जीव-जन्तु और ह्वेल मछली है। लेकिन आदमी को भी मारकर यह खा जाता है। जाड़े के मौसम में मादा-भालू समुद्र से कुछ दूर हटकर बर्फ के ऊपर लेट जाती है। उस समय उसका सारा बदन बर्फ से बिलकुल ढक जाता है। इस तरह वह जाड़े के दिनो में बराबर सोई रहती है और नर-भालू शिकार की खोज मे इधर-उधर घूमता रहता है और जहाँ तक बन पडता है अपनेको गर्म रखता है। जाडा बीतने पर जब बसन्त मे वह अपने बर्फीले घर से बाहर निकलती है तब वह अपने बच्चे को भी नर-भालू को दिखाने के लिये साथ ले जाती है। मेरु-प्रदेश का भालू पानी मे तैर सकता है और चिकनी बर्फ पर चल-फिर सकता है। इसका कारण यह है कि इसके पाँव के तलवे बडे-बड़े रोएँ से ढके रहते हैं जिससे बर्फ पर इसका पाँव फिसलता नहीं। घोड़ा या मनुष्य इस तरह बर्फ पर से होकर चल-फिर नहीं सकता।

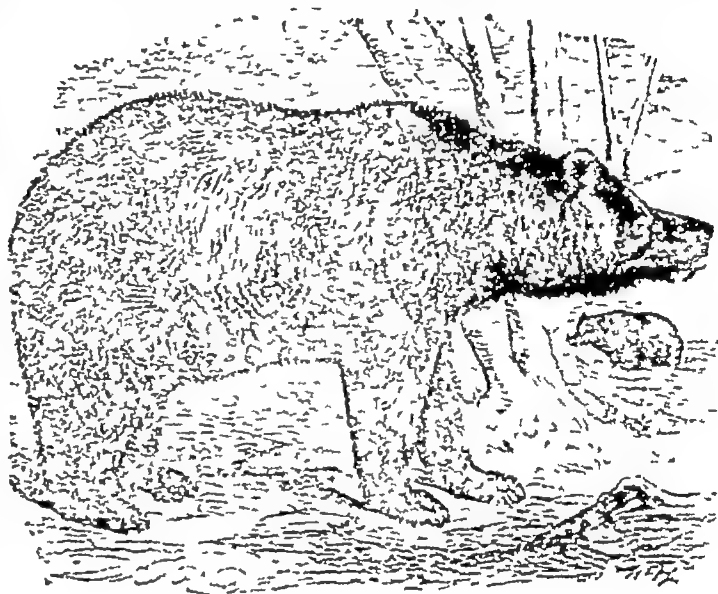


मेरु-प्रदेश का सफेद भालू





हाल में स्वीडन देश की राजधानी स्टाकहम के चिड़ियाखाने में एक सफेद मादा-भालू ने बच्चा जना है। बच्चा अभी सिर्फ तीन महीने का हुआ है। उसका नाम रखा गया है 'स्नो-व्हाइट'—बर्फ की तरह सफेद। सचमुच वह देखने में बर्फ की तरह ही सफेद है। अभी लोग निडर होकर उसके पास चले जाते हैं और उसकी देह पर हाथ सहलाते हैं। लेकिन कभी-कभी वह इस तरह आदर करनेवाले मनुष्य के हाथ में अपना दाँत भी गड़ा देता है; अतः अब बहुत दिनों तक वह यों बाहर नहीं रखा जायगा। वह भी अब जल्द ही दूसरे सफेद भालुओं के साथ बंद रखा जायगा। इस समय जो लोग चिड़ियाखाना देखने जाते हैं वे सफेद भालू के इस बच्चे को देखकर ही ज्यादा चकित होते हैं। उसका रंग दूध की तरह सफेद और देह मक्खन की तरह नरम है; रात-दिन खेलता-कूदता रहता है।



आहार की खोज में

मेरु-प्रदेश के भालू के सिवा और सब भालू पेड़ पर चढ़ सकते हैं। जिस पेड़ पर मधुमक्खी का छत्ता होता है या जिसपर कोई आदमी चढ़ा हुआ होता है, उसपर भालू फौरन चढ़ जाता है और उस छत्ते का शहद पी जाता है या उस आदमी को मार डालता है। जहाँ कहीं भालू को अपने आहार की टोह मिलेगी वह वहाँ चला जायगा। कन्द-मूल-फल और शहद के सिवा वह घोड़े या





आदमी को पकड़कर मार डालता है और उसे खा जाता है। मरे हुए आदमी या जानवर को भी यह खा जाता है। जाड़े मे सब भालू सोने चले जाते हैं। गर्मी के दिनो में ये इतने मोटे हो जाते हैं कि उसीसे ये विना कुछ खाये-पीये ही जाडे के दिन सोकर विता देते हैं। जाड़ा वीतने पर जब इनकी नींद खुलती है तब ये वहुत भूखे और दुवले-पतले मालूम पड़ते हैं। गरम देश के भालू जाडे के दिनो मे पहाड़ की खोह में या किसी माँद मे या पेड के कोटर में रहते हैं। भालू मनुष्य की तरह सीधा होकर खड़ा हो सकता है और सिखाने पर नाच और खेल-कूद दिखला सकता है।

एक बार एक मदारी भालू का नाच दिखाकर शाम को अपने घर लौट रहा था। रास्ते में वडे जोर की आँधी आई और आँधी के साथ-साथ पानी भी बरसने लगा। हवा और पानी का जोर इतना वढ़ा कि उसके लिये आगे वढना कठिन हो गया और आखिर उसने एक घर मे आश्रय लिया। घर के मालिक ने वडे आदर से अपने घर मे रक्खा और उसे खिला-पिलाकर अपने साथ सोने के घर में सुलाया। भालू के लिये भी एक अलग झोपड़े मे, जिसमें पालतू सूअर रहते थे, रहने का प्रबन्ध कर दिया गया। रात बीतने पर भी हवा का जोर बना ही रहा और झडी कम न हुई। इस तरह की रात में ही तो चोर के लिये चोरी करने का मौका होता है। उस गाँव का एक चोर सूअर चुराने के लोभ से उस झोपडे में घुसा। इसके वाद भालू के चंगुल में फँस कर उसकी क्या दशा हुई, यह तुम आसानी से समझ सकते हो। भोर मे उठकर जव मदारी ने भालू की इस करतूत को देखा तव उसे वडा भय हुआ। लेकिन गाँव के लोगों ने उसे दिलासा देते हुए कहा, "इसमें तुम्हारा क्या कसूर है? उस चोर की जैसी करनी थी वैसा फल उसे मिल गया।"

एक बार अमेरिका के, एक गाँव मे एक मजेदार घटना हो गई थी। बात यह हुई कि एक बहुत वडे सूखे पेड का ऊपरी हिस्सा आँधी मे टूटकर गिर गया और उसका तना जो वच गया था वह विलकुल खोखला था। उसी धड के कोटर में मधुमक्खी का एक छत्ता था। एक दिन एक आदमी शहद के लोभ से उस पेड पर चढा और ज्योंही उसने कोटर के पास पाँव रखा त्यों ही फिसलकर





उसके अंदर जा गिरा। अब वह ऐसी जगह मे जा पडा जहाँ से कोई उसे खींचकर बाहर नहीं निकाल सकता था। बेचारा गया था शहद खाने, पड गया इस विपद मे। मधुमक्खियो ने डंक मार-मारकर उसे बेहोश कर डाला। भूख-प्यास से व्याकुल होकर वह अपने जीवन से निराश हो चुका था। इस तरह दो दिन बीत जाने के बाद जब उसमें से निकलने का कोई उपाय नहीं रह गया और उसने समझ लिया कि इस कोटर में ही उसकी मृत्यु हो जायगी, तब तीसरे दिन एक भयानक भालू वहाँ पहुँच गया और मधुमक्खियो के छत्ते की टोह पाकर उस कोटर में घुसने लगा। वह आदमी भीतर से सब कुछ देख रहा था। उसने सोचा, मरना तो है ही, अब जो होना होगा, होकर रहेगा। ऐसा खयाल कर उसने भालू के एक पिछले पाँव को पकड़ लिया। पाँव पकड़ते ही भालू एकदम चौंक उठा और उसे खींचता हुआ एकदम ऊपर ले आया। जबतक भालू अपने को सँभालता, तबतक वह आदमी कूदकर झट एक घर मे छिप गया। लोगो ने शहद खाने की कहानी सुनी तो वे हँसते-हँसते लोटपोट हो गये।

एक बार कुछ अँगरेज शिकारी रूस देश मे भालू का शिकार करने गये। उनमे से एक पेड पर चढ़कर इधर-उधर भालू की तलाश करने लगा और दूसरे लोग आसपास के जंगलों मे ढूँढने लगे। थोड़ी देर के बाद, पेड पर जो आदमी चढा हुआ था उसे दो बडे भालू आते दिखाई पडे। उसके साथ दो बच्चे भी थे। वे दोनों (माता-पिता) अपने बच्चों को साथ लेकर हवा खाने निकले थे। इसके बाद वे उसी पेड के नीचे पहुँचे जिस पर वह आदमी चढा हुआ था। वहाँ नर और मादा भालू ने बारी-बारी से अपने बच्चो को चाट-चाटकर प्यार किया और फिर दोनों अपने पिछले पाँव के बल खडे होकर नाचने लगे। उनके इस नाच को देखकर उनके बच्चे खूब खुश होते और उछल-कूदकर अपनी खुशी जाहिर करते। इस तरह कुछ समय तक खेलने कूदने के बाद वे सब फिर घने जंगल मे चले गये। उस शिकारी ने लिखा है कि नर और मादा भालू और उनके बच्चों को देखकर मैंने अपने मन मे विचार किया, इस तरह लाड-प्यार करने वाले भालू गोली के शिकार बनाये जायँ, यह बडा निर्दय काम होगा; उनके मारे जाने पर ये छोटे बच्चे कैसे अनाथ बन जायँगे!

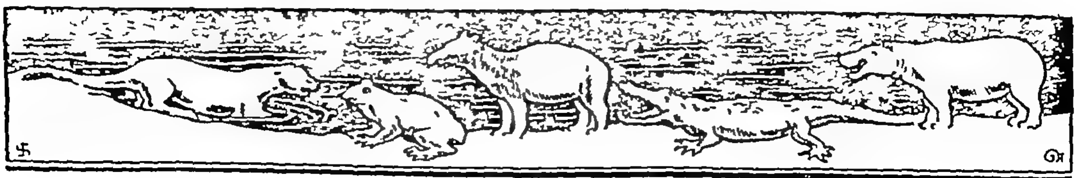




जाडा-भर सोये रहने के बाद जब वसन्त-काल मे भालू सोकर उठता है तब उस समय के सिवा यह और कभी भयानक नहीं होता। अपने बच्चों को ही यह लाड़-प्यार नहीं करता, बलिक मनुष्य के साथ इसके दयापूर्ण बर्ताव की कहानियाँ भी सुनी जाती हैं।

एक बार एक अनाथ गरीब लडका जाडे में कडाके की सर्दी से बचने के लिये एक जंगली भालू की माँद में जा घुसा। भालू अगर चाहता तो उसे फौरन् नोच-खसोटकर निगल जाता। लेकिन ऐसा न करके उसने अपने गर्म पंजों से उसे ढक लिया और इसी तरह कई दिनों तक उसकी देख-भाल करता रहा। कई दिनों के बाद जब वह लडका मर गया तब भालू ने भी उसके शोक में खाना-पीना छोड दिया और आखिर वह भी अपने उसी छोटे दोस्त का साथी बनने के लिये चल बसा।

उत्तरी ध्रुव-प्रदेश की यात्रा करने के लिये एक बार कुछ लोग जहाज पर सवार होकर वहाँ गये थे। वहाँ एक मादा-भालू और उसके दो बच्चों को देखकर जहाज के मल्लाहो ने उनकी ओर मास के टुकड़े फेंके ताकि वे मास के लोभ से पास आवें और उनका शिकार किया जाय। मादा-भालू उस मास के टुकड़े को पकडने के लिये पानी में तैरने लगी। उसी समय उस पर गोली दागी गई। फिर वह मास के टुकडे को अपने मुँह से पकडे हुए ही तैरकर अपने बच्चों के पास पहुँच गई और उनके सामने वह टुकडा रख दिया। उन निठुर मल्लाहो ने फिर कई बार गोलियाँ चलाईं जिनसे वे दोनों बच्चे मर गये। तबतक उस बेचारी मादा-भालू को क्या मालूम कि उसके प्यारे बच्चे मर चुके हैं। उसने माँस के टुकडे को उनके मुँह के सामने रक्खा और अपने पंजो को उनके सिर के नीचे कर दिया ताकि वे आसानी से मास के टुकडे को खा सके। लेकिन जब बच्चे जरा भी हिलते-डुलते नजर नहीं आये तब उसने समझा कि उसके बच्चे चल बसे हैं। और, अब वह उनके दुःख मे इतने जोर-जोर से विलखने लगी कि उसके उस विलाप को सुनकर पत्थर का दिल भी पसीज जाता। लेकिन एक बहुत बडे भालू को सामने देखकर उन मल्लाहो से रहा नहीं गया और गोली चलाकर उन्होंने उस मादा-भालू का भी काम तमाम कर डाला। बेचारी माँ अपने दोनो बच्चो की बगल में ही सदा के लिये सो गई।

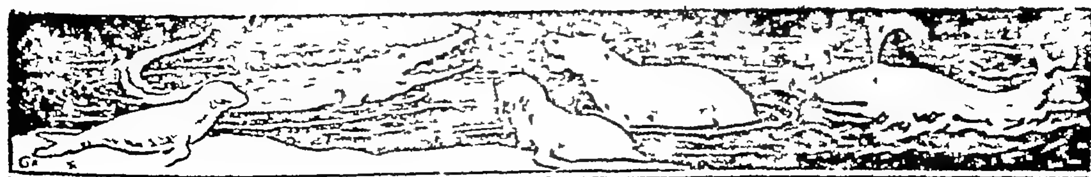


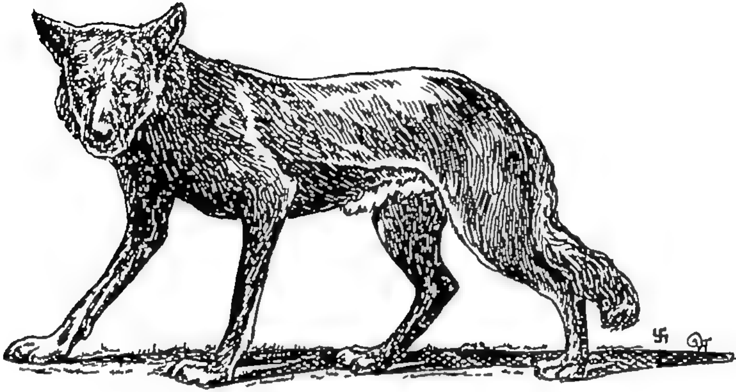


बच्चा-भालू पकड़े जाने पर ठीक कुत्ते की तरह पालतू बन जाता है और चालाकी के बहुत-से खेल दिखलाता है। एक लेखक ने लिखा है कि उत्तर-अमेरिका में एक आदमी के पास एक पालतू भालू था जो मुर्गी के बच्चों को खाना बहुत पसंद करता था। उसके मालिक ने जब देखा कि मुर्गी के बच्चों की संख्या दिन-दिन कम होती जा रही है, और उसने भालू के खूंटे के पास मुर्गी के पंखों को बिखरा हुआ देखा तब उसे यह समझने में देर न लगी कि चोर कौन है।

लेकिन वह भालू भी कम चालाक नहीं था। वह इस तरह चुपके से मुर्गी के बच्चों को पकड़कर चट कर जाता कि कोई उसे देख नहीं पाता; और अगर उसे कोई चोरी करते देख भी लेता तो वह इस तरह अपनेको सँभालकर चुपचाप बैठ जाता मानो उसने कुछ किया ही न हो। आखिर एक दिन वह चोरी करते पकडा गया। उस समय वह एक मुर्गी को पकड़कर मारने की कोशिश कर रहा था। मुर्गी अभी तक मरी न थी और वह जोरजोर से पंख फड़फड़ाकर चिल्ला रही थी।

कम-से-कम एक बात में तो भालू बच्चों के समान ही होता है। वह भी तुम लोगों की तरह मिठाई खाना खूब पसंद करता है। एक साहब के पास एक पालतू भालू था। एक दिन वह भालू गायब हो गया और खोज करने पर पता चला कि एक मोदी की दूकान में घुस गया है। दूकान पर जो बूढ़ी औरत बैठी हुई थी वह मारे भय के दूकान से बाहर निकल आई थी और वहीं से चिल्ल-पों मचा रही थी। लेकिन भालू राम निश्चिन्त होकर चीनी का बोरा साफ कर रहे थे। जी भरकर चीनी और मिठाई खा लेने के बाद भालू वहाँ से चलता बना और अपनी जगह पर पहुँच-कर आराम से सो गया। इसलिये अगर तुम चिड़ियाखाने में या सड़कों पर मदारी के साथ भालू को देखना तो डरना नहीं। यदि तुम्हारे कोट की जेबों में बिस्कुट और दूसरी मिठाइयाँ भरी हो तो भालू सहज ही में तुम्हारा दोस्त बन जायगा और तुम्हारे हाथ से बिस्कुट ले-लेकर खायगा।

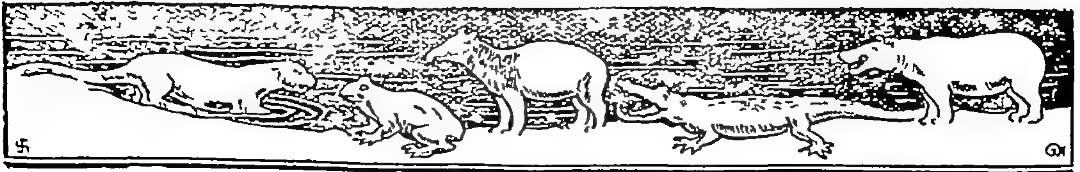


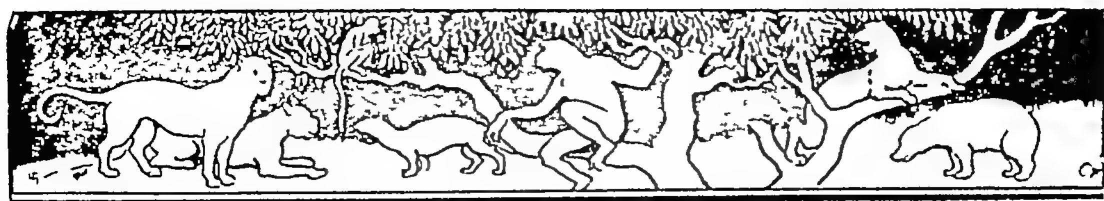


भेड़िया

भेड़िया तो भालू-जैसा बडा जानवर नहीं होता, लेकिन यह बड़ा भयानक और खूँखार होता है। हमारे देश के सयुक्त प्रान्त के अयोध्या, लखनऊ, आगरा आदि जिलो में भेडिया बहुत देखे जाते हैं। रूस, साइबेरिया, नारवे, स्वीडन आदि देशो मे भेड़ियों के ऊधम से लोग तंग आ जाते हैं। यह झुड बाँधकर चलता-फिरता है और शिकार का पीछा करता है। रूस, साइबेरिया आदि देशो के भेडिया आकार मे काफी बडे होते हैं और झुड-के-झुंड एक साथ चलते हैं। इनका सामना होने पर घोडे, भैंस, जंगली भैंसे, किसी की भी खैर नहीं। इतना ही नहीं, बल्कि जब इन्हे कोई शिकार नहीं मिलता तब अपने झुंड के कमजोर रोगी भेडियों को ही मारकर चट कर जाते हैं। इसीसे तुम समझ सकते हो कि ये कितने हिंसक होते हैं।

जाडे में जब रूस, साइबेरिया आदि देशों की जमीन बर्फ से ढकी रहती है और इन्हें सहज ही आहार नहीं मिलता, तब ये मनुष्यों और घोडो का पीछा मीलों तक करते हैं। उन सब





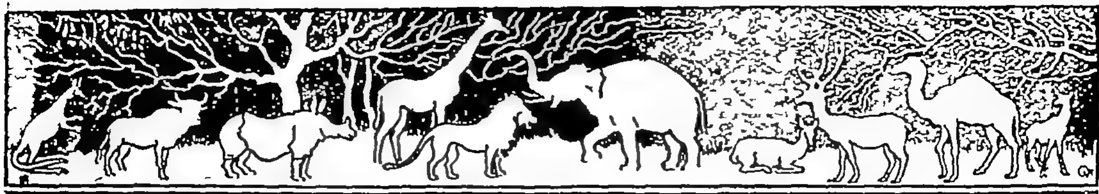
देशों के भेडिये प्रायः मनुष्य का भी शिकार करते हैं। घोड़ा चाहे कितना ही जोर से दौड़े, भेड़िया उसका पीछा करके उसे जरूर पकड लेगा। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि घोडागाडी का कोचवान तक घोडे को गाडी से खोलकर छोड देता है ताकि जबतक भेडिया उसको लेकर राजसी भोज करे तबतक दूसरे घोडे को लेकर वह दूर निकल जाय। लेकिन अगर बहुत भेडिये होते हैं तो वे पीछा करना नहीं छोड़ते और आखिर उस आदमी को पकड़कर उसे पछाड ही देते हैं। भेडियों द्वारा पीछा किये जाने पर अगर वह आदमी गोली दागकर किसी भेड़िये को मार गिराता है तो कुछ भेडिये वहाँ ठहरकर उसका मांस खाने लगते हैं और दूसरे भेडिये उस आदमी का पीछा करते ही रहते हैं। जानवरों का शिकार करते समय भी उनमें इसी तरह की जिद देखी जाती है। सिंह के समान ही दो भेडिये मिलकर हिरन का शिकार करते हैं। एक छिपा रहता है और दूसरा हिरन को खदेडकर उधर ले आता है।

एक बार भेडियो के झुंड के सामने पड़कर घुडसवार तुर्की सेना की क्या दशा हुई थी, इसकी कहानी सुनकर तुम्हारे रोंगटे खडे हो जायँगे। घुडसवार-सेना धीरे-धीरे आगे बढ रही थी जब कि उसे बहुत दूर कोई चीज हिलती-डुलती-सी दिखाई पड़ी। इसके बाद जब वह चीज कुछ साफ मालूम होने लगी तो पता चला कि वह भेडियों के झुंड के सिवा और कुछ नहीं है। मारे डर के सब लोग काँप उठे। सिपाहियो ने अपने-अपने घोडे को खूब जोर से दौडाया ताकि वे भेडियो के झुड से बहुत आगे निकल जायँ। लेकिन कुछ मिनटो मे ही भेड़िया-दल इतना नजदीक पहुँच गया कि उससे बचना असंभव हो गया। अब उन्होंने गोली चलानी शुरू की। पहली बार



तसमानिया देश का भेडिया





मे ही १०—१२ भेडिये चोट खाकर लौट गये। झुड के दूसरे भेडियों ने उन मरे हुए भेडियो को नोच-खसोटकर और उनके मास खाकर फिर घुडसवारों का पीछा किया। अवतक घुडसवार वहुत आगे वढ गये थे, लेकिन उनका पीछा करके पास पहुँच जाने से भेडियो को देर नहीं लगी।



मनुष्य-बाघके रूप में आठ वर्ष की 'कमला' कैसी भयकर है!



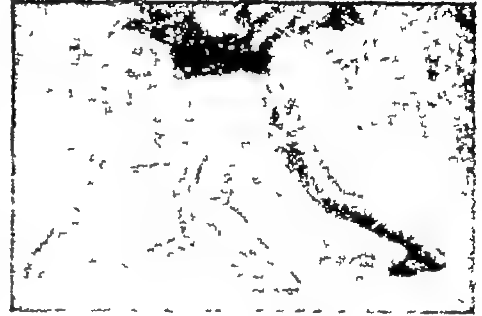
आठ वर्ष की 'कमला' बाल कटाकर और कपडा पहनकर सभ्य बन गई है!

सवारों ने फिर गोलियाँ चलाकर क को मार डाला। इनकी लाशों को भी खाकर भेडियो ने फिर पीछा किया। फिर उसी तरह गोलियाँ चलती और भेड़िये एक-एक कर गिरते जाते और वाकी उन्हें चट



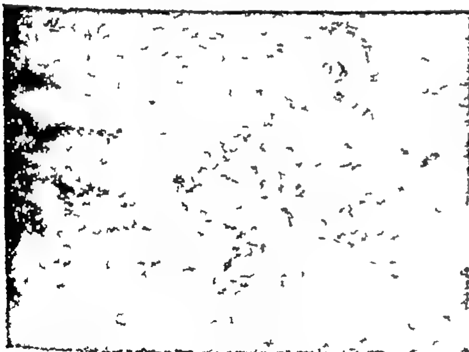


करके फिर आगे बढ़ते। आखिर जब कई सवारों के कारतूस खाली पड़ गये तब भेड़िये उनपर टूट पड़े और घोड़ों सहित उन्हें नोच-नोचकर खाना शुरू किया। इस तरह कुल तीन सवार बाकी रह गये और उन्होंने एक घर में आश्रय लेकर अपनी जान बचाई।

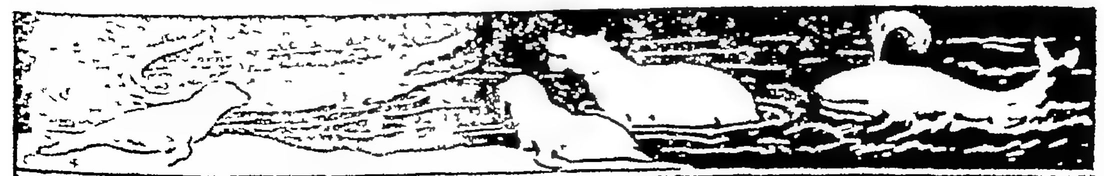


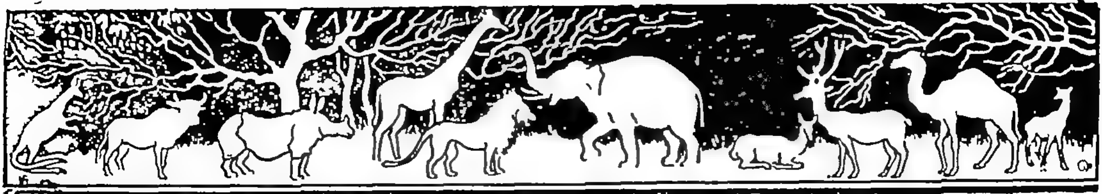
एक बच्चा ठीक भेड़िये की तरह दौड़ रहा है।

मगर इस तरह के भयानक राक्षस जानवर भी मनुष्य के छोटे-छोटे बच्चों को पकड़कर और उन्हें अपनी माँद में ले जाकर अपने बच्चों के साथ पालते-पोसते सुने गये हैं, यह क्या कम आश्चर्य की बात है? इस तरह की घटनाएँ एकाध बार नहीं, कई बार अपने देश में हो चुकी हैं। सर विलियम स्लीमैन ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि जब वे सुलतानपुर जिले में थे, एक नौ वर्ष का लड़का, एक मादा-भेड़िया और उसके दो बच्चों के साथ, अपने दोनों हाथ और पाँव के बल, जानवर की तरह दौड़ता हुआ पाया था। एक दिन जब भेड़िये के साथ वह लड़का नदी में पानी पीने आया, वहाँ पकड़ लिया गया और बाँधकर रक्खा गया ताकि वह भेड़िये की माँद में भागकर चला न जाय। वह लड़का सयाने लोगों को देखकर भागने की कोशिश करता, और अगर लड़के उसके पास आते तो वह कुत्ते की तरह उनपर गुर्राता और उन्हें काटने की चेष्टा करता। वह पकाया हुआ मांस नहीं खाता, लेकिन कच्चे माँस का टुकड़ा सामने रखने पर वह कुत्ते की तरह उसे पंजे से पकड़कर बड़ी खुशी से

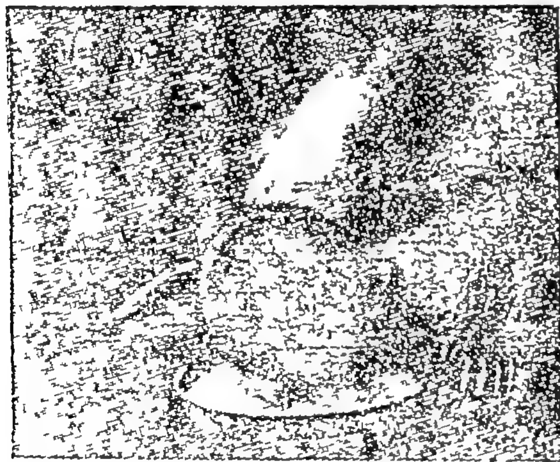


भेड़िया द्वारा पाये गये बच्चे तले-ऊपर सो रहे हैं।



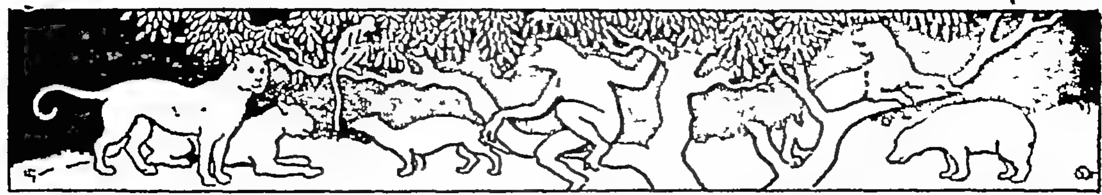


खाता। अपने इस भोज में वह कुत्ते को भी शामिल कर लेता, लेकिन खाते समय किसी आदमी को पास आने नहीं देता। यह लडका अवध की अँगरेजी सेना के बडे अफसर के पास भेज दिया गया। वहाँ रहते हुए यह लड़का कुछ नरम स्वभाव का बन गया था और जबतक उसे कोई दिक नहीं करता, वह किसी को कुछ कहता नहीं था। तंग किये जाने पर वह गुर्राता था। अब पकाया हुआ खाना उसके सामने फेंके जाने पर भी वह खा लेता, लेकिन अब भी उसे कच्चा मास ज्यादा पसंद आता और बडे चाव से वह कच्चे मास के टुकडों को निगल जाता। मौसम की भी वह कुछ परवाह नहीं करता। उसे एक रजाई दी गई थी जिसे वह टुकडे-टुकडे फाड़कर चिथडो को रोटी के साथ खा गया। हड्डियों को भी वह कुटकुटाकर खा जाता। वह एक बार में ही एक मेमने को आधा खा गया और एक साँस मे ही घड़ा-भर छाँछ पी गया। मिट्टी के छोटे-छोटे टुकड़ो को भी चुनकर वह खा जाता। उसकी आदत बडी गंदी थी। कुत्ते, गीदड आदि जानवरो के साथ वह खूब हिलमिल जाता। वह लड़का तीन वर्ष तक मनुष्यो के बीच रहा, लेकिन इस बीच मे वह सिर्फ 'मा—मा' की आवाज करने के सिवा और कुछ न बोला। जब उसे किसी चीज की जरूरत होती, वह इशारा करता। भूख लगने पर वह अपने मुँह की तरफ इशारा करता। आखिरी बार जब वह बीमार पड़ा तब मरने के कुछ मिनट पहले उसने अपना हाथ सिर पर रक्खा, जिससे मालूम हुआ कि उसका सिर दुखता।



छोटी 'अमला' ठीक जानवरो की तरह खाना खा रही है!





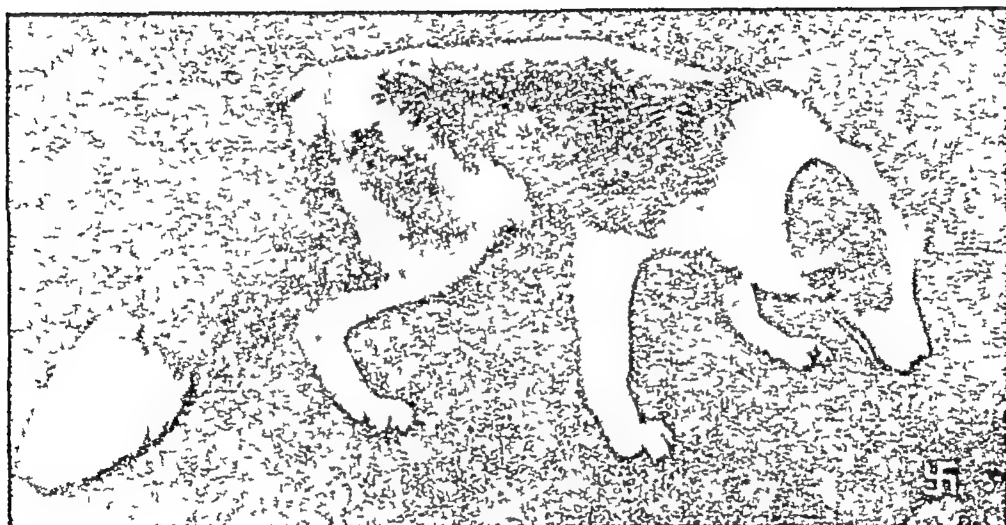
है। फिर उसने पीने के लिये पानी माँगा और पानी पीकर आँखे मूँद लीं। इस बीच मे उस लडके के माता-पिता का भी पता चल गया था, लेकिन अपने लडके को इस तरह जंगली रूप मे पाकर उन्होंने उसे साहब के पास ही छोड दिया।

सर विलियम स्लीमैन और दूसरे अँगरेजो ने भी इसी तरह की और कई कहानियाँ लिखी हैं, जो बिल्कुल सच हैं। यूरोप में भी भेडिया, भालू आदि जानवरों द्वारा पाले गये मनुष्य के बच्चों की कहानियाँ सुनी गई हैं।

मिदनापुर (बंगाल) के पादरी जे ए एल सिंह ने इस तरह की दो लडकियो का जिक्र अभी हाल मे किया था जो भेडिया द्वारा पाली-पोसी गई थीं। इन लडकियो के नाम मिस्टर सिंह ने 'कमला' और 'अमला' रक्खे थे। बडी आठ वर्ष की और छोटी डेढ़ वर्ष की थी। १९२० के सितम्बर मे जब मि. सिंह मिदनापुर के जंगलो मे कोल, संथाल आदि जातियो के बीच काम कर रहे थे, उन्हे इन दोनो लडकियो का पता चला था और उन्होंने भेडिये की माँद से इनका उद्धार किया था। ये दोनो लडकियाँ मिदनापुर के अनाथाश्रम मे लाकर रक्खी गई थीं। कुछ दिनों के बाद अमला मर गई, लेकिन कमला कई वर्षों तक जीती रही। इस बीच मे मि सिंह और उनकी स्त्री ने उसे मनुष्य-जैसा बर्ताव करना और कुछ-कुछ बोलना भी सिखला दिया था। अब वह मनुष्य की बोली बहुत-कुछ समझने लग गई थी। उसमे बुद्धि और समझदारी भी आने लगी थी। आखिर १९२९ के नवम्बर मे वह बीमार पडी और १७ वर्ष की उम्र में उसकी मृत्यु हो गई।

इसी प्रकार बन्दर, भालू, कुत्ता, बिल्ली और बाघ द्वारा भी दूसरे-दूसरे जानवरों के बच्चों के पाले जाने की कहानियाँ सुनी जाती है।





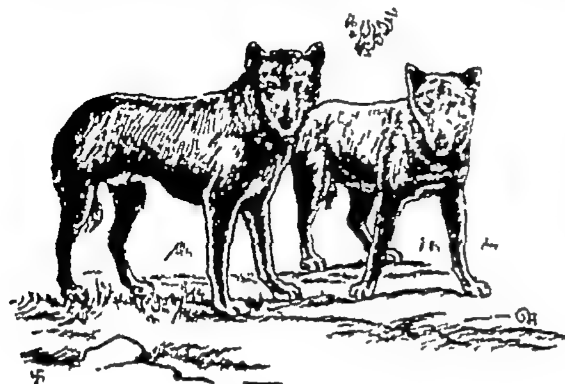
कुत्ता, गीदड़, लोमड़ी

कुत्ता भी किसी समय जंगली जानवर समझा जाता था। कुत्ता, भेड़िया, हयना, गीदड़, लोमडी, सब एक ही वंश से पैदा हुए हैं। बहुत पुराने जमाने मे इन सबके माँ-बाप एक ही थे। आज भी दुनिया के कई हिस्से मे ऐसे कुत्ते पाये जाते हैं जो भेड़िया की तरह ही खूँखार होते हैं। इन्हें छोटे कद का भेडिया ही समझना चाहिये। जंगली कुत्ते और जंगली भेड़िये का स्वभाव बहुत कुछ मिलता-जुलता है। जंगली कुत्ते जंगली भेडिये की तरह ही शिकार करते हैं। भूखे होने पर उसी तरह जानवर पर हमला करते हैं। ये कुत्ते भी रात मे शहरों मे जाकर सडको पर जो कुछ सडी-गली-गंदी चीजें पाते हैं, सब खा डालते हैं। इस तरह ये सफाई रखने मे हमलोगो को मदद पहुँचाते हैं।





हमारे देश में गीदड़ भी इसी तरह सफाई रखने का काम करता है। गीदड़ भी भेड़िये के किस्म का ही जानवर होता है; लेकिन उतना जबरदस्त या खूँखार नहीं होता। यह छाया की तरह बाघ या सिंह का पीछा करता फिरता है। बाघ जब किसी जानवर को मारकर उसे भरपेट खा लेता है तब गीदड़, जो उसके पीछे-पीछे छिपता हुआ चलता है, बाहर निकल आता है, और उस जानवर के बचे-खुचे अंश को अपने पेट में डालने लगता है। गाँवों की गन्दगी को भी यह खा डालता है; लेकिन चोरी करने में भी यह बड़ा उस्ताद होता है। रात में यह बकरी और भेड़ के छोटे-छोटे बच्चों को पकड़कर ले भागता है; इसलिये लोग कुत्ते पालते हैं। कुत्ते इसे देखते ही भूँक-भूँककर उसका पीछा करते हैं जिससे यह भागकर अपनी जान बचाता है। इसकी नाक भेड़िया-जैसी नुकीली नहीं होती, लेकिन साधारण भेड़िये से इसकी सूँघने की शक्ति अधिक होती है। लोमड़ी की तरह ही इसकी दुम होती है। गीदड़ बड़ा ही मनहूस जानवर समझा जाता है।

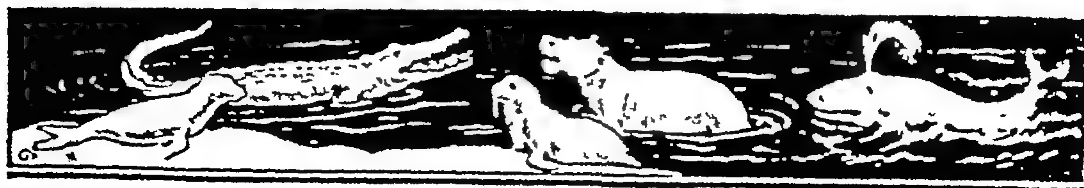


गीदड़

लोमड़ी सबसे चालाक जानवर समझी जाती है। यह दिन-भर माँद में छिपी रहती है और रात में आहार की खोज में निकलती है। पालतू चिड़ियों के अंडों को यह चुराकर खा जाती है। हमारे देश में



शिकारी कुत्ता



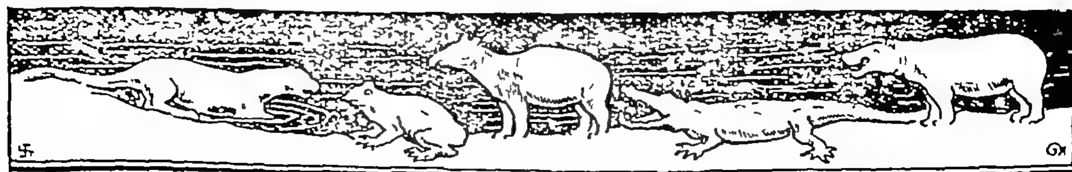


देहातों में लोमडी, गीदड सब जगह पाये जाते हैं। इस देश के लोग इन जानवरों का शिकार बहुत कम करते हैं। लेकिन यूरोप के लोग लोमड़ी का शिकार करना बहुत पसंद करते हैं



विलायती लोमडी

वहाँ तो कुछ लोग ऐसे हैं जो कई पीढियो से लोमडी का शिकार करते चले आ रहे हैं। खासकर इंगलैंड में, जहाँ वन-जंगल बिलकुल नहीं हैं, लोमडी का शिकार एक जल्सा समझा जाता है। लोमड़ी का शिकार करने के लिये वे एक विशेष जाति का कुत्ता पालते हैं जिसे हाउण्ड या शिकारी कुत्ता कहते हैं। जाडा खतम होने पर दल-के-दल शिकारी इस तरह के कुत्तो को साथ लेकर लोमडी का शिकार करने निकलते हैं।

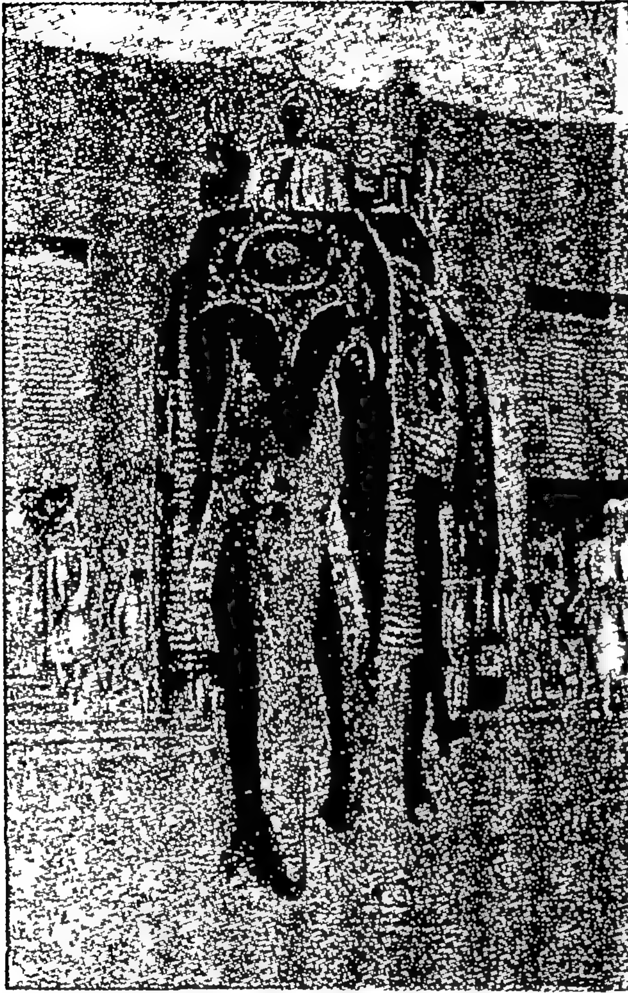




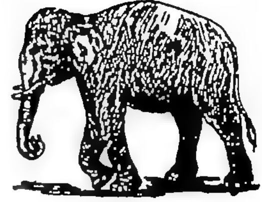
यह पेड की जड के नीचे या किसी टीले या चट्टान की वगल मे गड्ढा खोदकर अपनी मॉंद वनाती है जिससे कोई मॉंद में घुसकर इसे पकड न सके। वहुत दूर तक लम्वाई मे यह मॉंद वनाती है और उससे वाहर निकलने के लिये तीन-चार तरफ सूराख कर देती है। यह वहुत तेज दौड़ सकती है। इसकी दुम मे झव्वेदार वाल होते हैं। अपने वच्चो को लेकर यह मॉंद मे वैठी रहती है, और जव वाहर निकलती है, सवको साथ लेकर।





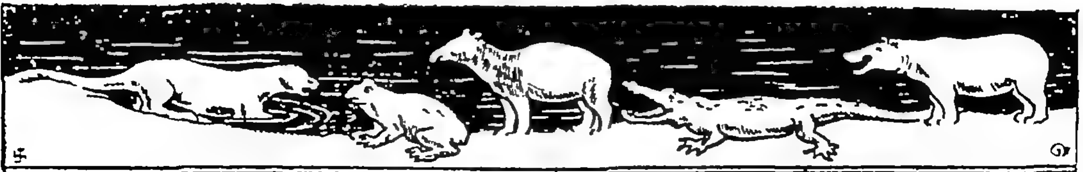


बारात और जलूस में हाथी को हौदा झूल आदि से सजाते हैं



हाथी

पृथ्वी पर जितने जीवजन्तु पाये जाते हैं उनमें हाथी सबसे बड़ा होता है। यह एशिया और अफ्रिका महादेशों में पाया जाता है। इन दोनो महादेशों के सिवा यह और कहीं नहीं पाया जाता। हिन्दुस्तान के बंगाल, आसाम, उड़ीसा और मद्रास प्रान्तों के जंगलों में तथा लंका, स्याम, बर्मा आदि देशों के घने जंगलों में हाथी मिलते हैं। अफ्रिका के जंगलों में पाये जानेवाले हाथी हमारे देश के हाथी से डीलडौल में बड़े होते हैं। हिन्दुस्तान की तरह अफ्रिका मे हाथी को पालतू बनाकर उससे काम नहीं लेते। वहाँ पहले शिकारी लोग जंगली हाथियों का शिकार किया करते थे, लेकिन अब वहाँ की सरकार ने हाथी का शिकार किया जाना बंद कर दिया है।







सवारी के काम में आनेवाला हाथी

हाथी के शरीर में सबसे बढ़कर आश्चर्य की चीज होती है उसका सूँड़। यह सूँड ही उसकी नाक है और इससे वह हाथ का काम भी लेता है। सूँड़ के भीतर एक लम्बा छेद होता है जिससे यह साँस लेता है। भूख लगने पर यह सूँड से पेड़ की डाल-पत्तियों और फल-फूलों को तोड़कर अपने मुँह में डाल लेता है। प्यास लगने पर सूँड़ से जल खींचकर मुँह में रख लेता है और पानी के फुहारे छींटकर अपने शरीर को ठंढा करता है। यह अपनी सूँड़ को चाहे जैसा घुमाफिरा सकता है, मोड़ सकता है। अपने शत्रु पर हमला करने में भी यह सूँड से काम लेता है। सूँड़ के आगे के हिस्से में अँगुली के समान



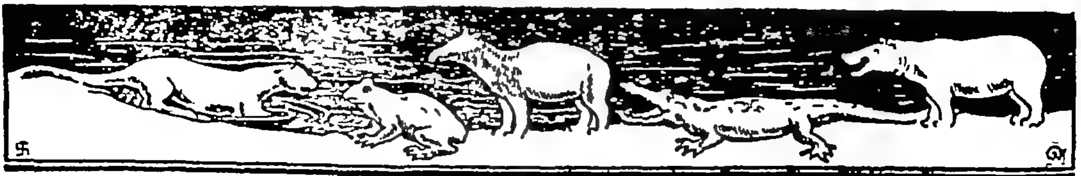


मास निकला रहता है जिससे हाथी छोटी-से-छोटी चीज को उठा सकता है। हाथी की सूँड इस ढंग से बनी हुई होती है कि यह उससे महावत को उठाकर अपनी पीठ पर चढ़ा लेता है और इसी सूँड़ से यह एक सुई तक को जमीन पर से उठा ले सकता है। हाथी के दो बड़े-बड़े लम्बे दाँतो को तुमने देखा होगा। लम्बाई में दाँत ढाई-तीन हाथ तक होते हैं। एक-एक दाँत का वजन एक मन से भी ज्यादा होता है। इस देश मे केवल नर-हाथी के ही इस तरह बड़े दाँत होते हैं, मादा-हाथी के नहीं। लेकिन अफ्रिका में नर-मादा दोनो के बहुत बड़े-बड़े दाँत होते हैं। अफ्रिका के हाथी यहाँ के हाथी से आकार में डेढगुना बड़े होते हैं। उनके कान भी बहुत बड़े-बड़े होते हैं।



बिगड़ैल जगली हाथी

अपने देश में जंगली हाथियों को फँसाकर बाहर लाते हैं और तब उन्हें पालतू बनाते हैं। हाथी फँसाने में जो लोग खूब होशियार होते हैं वे ही जंगल मे से पालतू हाथी की मदद से जंगली हाथी फँसाकर बाहर निकाल लाते हैं और तब उन्हे इस तरह पालतू बनाते हैं कि थोड़े समय में ही वह पालतू हाथी घोड़े की तरह पालतू बन जाता है। पालतू हाथी से बहुत काम लिये जाते हैं। कोई





भी जानवर इतना जबरदस्त और शायद इतना समझदार भी नहीं होता। पालतू हाथी को एक लड़का भी हाँककर जहाँ-कहीं ले जा सकता है।

एक देहाती-औरत अपने छोटे बच्चे को हाथी के पास रखकर घर से बाहर काम करने जाया करती थी। हाथी के पाँव में रस्सा बाँध दिया जाता था जिससे वह आसानी से इधर-उधर घूमफिर सके। इस तरह बाँधा हुआ वह हाथी उस बच्चे की पूरी देखभाल करता था। बच्चा वहाँ खेलता रहता और हाथी उसके ऊपर अपना पाँव पड़ने नहीं देता। बच्चे को बीच में रखकर हाथी उसके चारों तरफ घूमता रहता और जब बच्चा इधर-उधर जाने की कोशिश करता तब हाथी बड़ी सावधानी से अपनी सूँड से उसे पकड़कर बीच में लाकर रख देता ताकि वह भाग न सके। बच्चे की हिफाजत कोई धाई भी इतनी अच्छी तरह नहीं कर सकती थी।

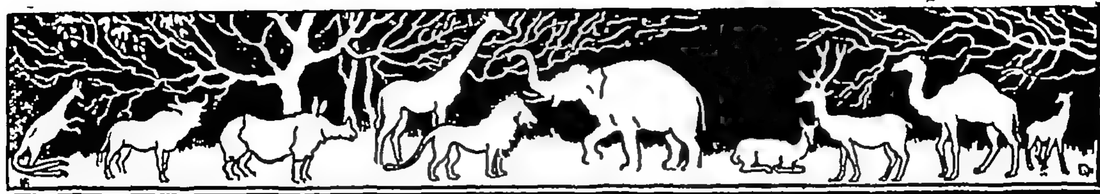


हाथी से जंगल में लकड़ी ढोने का काम लिया जाता है

अब तक बड़े से बड़ा हाथी ऊँचाई में १४ फीट तक सुना गया है। अमेरिका में जंबो नाम का एक बहुत मशहूर हाथी था जो ऊँचाई में ११ फीट तक था। उसका वजन लगभग डेढ़ सौ मन था।

हाथी के दाँत बहुत कीमती होते हैं। हाथी के दाँत से बहुत तरह की कारीगरी की चीजें तैयार की जाती हैं। हाथी अपने दाँतों से अपना बचाव करता है और साथ ही खाने की चीजों के





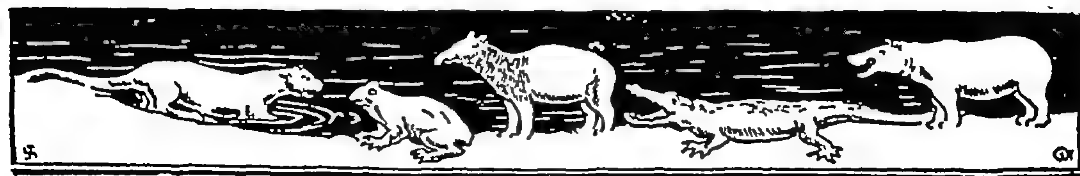
पकड़ने में भी मदद लेता है। कभी-कभी सिंह या बाघ हाथी पर हमला कर बैठता है। उस समय हाथी बहुत डरता नहीं। उसे अगर एक बार अपने दाँतों से सिंह या बाघ पर चोट करने का मौका मिले तो फिर दूसरी बार चोट करने की जरूरत नहीं रह जाती। या तो सिंह या बाघ मर ही जाता है अथवा फिर हाथी के साथ लड़ने का उसे साहस नहीं होता।

हाथी की आँख बहुत छोटी होती है। लेकिन वह देख बहुत अच्छी तरह सकता है। सूँघने की शक्ति भी इसकी बहुत तेज होती है जिससे यह आँख का काम लेता है। बिलकुल अंधा हो जाने पर भी हाथी अपनी सूँड़ से सूँघ-सूँघकर अपने लिये राह बना लेता है।

हाथी के पाँवों को अगर तुम ध्यान से देखो तो तुम्हें मालूम होगा कि उसके पिछले पाँव दूसरे जानवरों के पाँव से भिन्न शक्ल के होते हैं। घोड़े या कुत्ते का पिछला पाँव पीछे की ओर मुड़ता है जिससे जब वह बैठता है तब अपने पिछले पाँवों को आगे की ओर करके अपने धड़ के नीचे रख लेता है। लेकिन हाथी के पिछले पाँव मनुष्य के पाँव की तरह होते हैं, वे आगे की ओर झुकते हैं, और जब वह जमीन पर बैठता है तब अपने पिछले पाँवों को पीछे की तरफ फैला देता है। हाथी का शरीर इतना भारी-भरकम होता है कि अगर उसके पाँव दूसरे जानवरों की तरह होते तो वह बैठने पर फिर उठ नहीं सकता।



बाघ के शिकार में हाथी का उपयोग



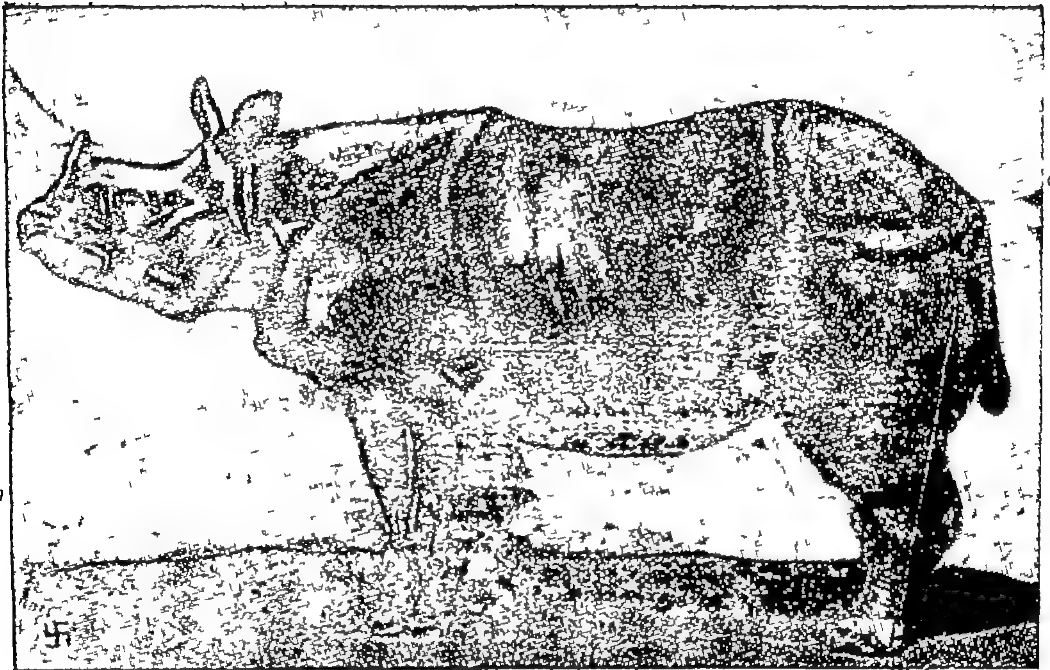


हाथी अपने साथ किये गये उपकार को जल्द नहीं भूलता। इसी तरह अगर कोई इसके साथ बुरा वर्ताव करता है तो वह उसे भी याद रखता है। सुई से हाथी के सूँड को चुभानेवाले दर्जी से हाथी ने किस तरह उसके ऊपर गंदा पानी छींटकर बदला लिया था यह कहानी तो तुम लोगों ने पढ़ी ही होगी।

लंका मे बहुत हाथी पाये जाते हैं। एक बार एक बच्चा-हाथी पकड़कर पालतू बनाया गया। अस्पताल का डाक्टर उस हाथी को अपने साथ लेकर अस्पताल के वार्डों मे घुमाता। इस तरह घूमते हुए वह हाथी रोगियो को दवा और गोलियाँ खाते देखता। एक दिन एक रोगी के हाथ से दवा की गोली जमीन पर गिर पडी। फौरन् हाथी ने उस गोली को उठाकर रोगी के मुँह मे रख दिया और जोर से फूँककर उसे उसके गले से नीचे उतार दिया।

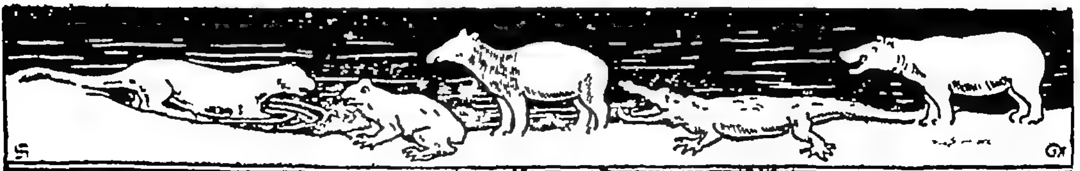
एक शिकारी ने लिखा है—"एक बार हम कई शिकारी हाथी पर सवार होकर भारत के उत्तर-पश्चिम भाग मे सिंह का शिकार करने गये। जंगल में कुछ दूर जाने पर हमें एकाएक एक सिंह दिखाई पडा। हमारे एक साथी ने उसपर गोली चलाई। सिंह घायल होकर जोर से दहाड़ते हुए हमारी तरफ दौड़ा। हमारे साथी फिर दूसरी बार गोली चलाना ही चाहते थे कि हौदे मे लुढककर वे नीचे जमीन पर जा गिरे। सिंह भी उछलकर उनके ऊपर आ पडा। अब हम बड़ी मुश्किल मे पड़ गये। अगर ऊपर से सिंह पर गोली चलाते हैं तो इस बात का भय रहता है कि कहीं साथी को गोली न लग जाय। इसी असमंजस मे सब पड़े हुए थे कि एक आश्चर्य की बात हो गई। जहाँ सिंह ने साथी के ऊपर हमला किया था वहाँ एक बडा पेड था महावत के इशारा करते ही हाथी ने सूँड़ से उस पेड़ की एक मोटी डाल को पकड लिया और फिर उस डाल को झुकाकर सिंह के ऊपर इस तरह दबाकर रक्खा कि उसके भार से सिंह का दम निकलने लगा। पीड़ा से सिंह छटपट करने लगा और उसके मुँह से रक्त की धारा बहने लगी। अब हाथी को उसका कचूमर निकाल देने मे देर नहीं लगी। हाथी अगर अपनी बुद्धि से हमारे साथी को नहीं बचाता तो वे किसी तरह भी जिन्दा नहीं लौट सकते थे।"





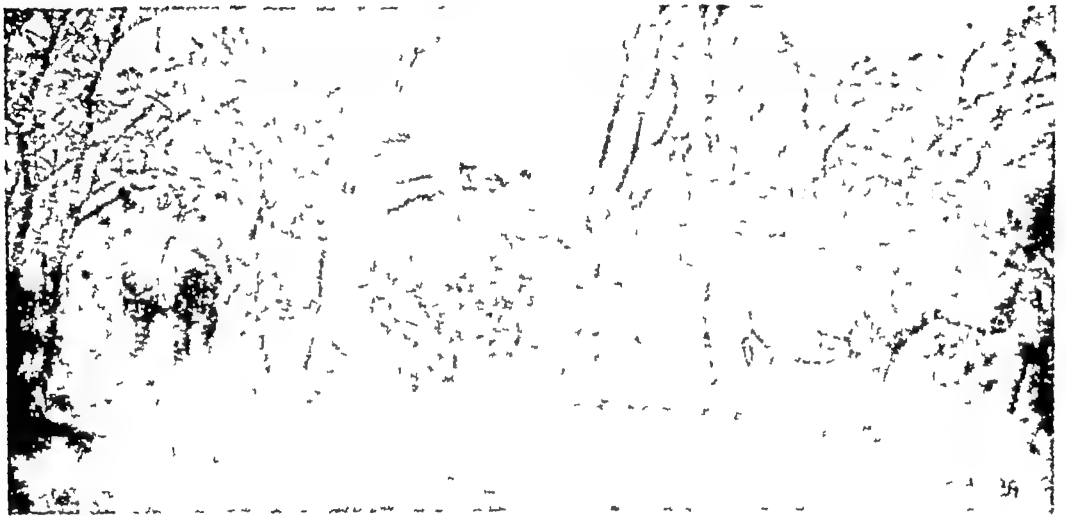
गैंड़ा

एशिया और अफ्रिका इन दो महादेशों में गैंडे पाये जाते हैं। हिन्दुस्तान में पाये जानेवाले गैंडे को केवल एक सींग होता है। अफ्रिका के गैंडे को दो सींग होते हैं। वर्मा में एक प्रकार का गैंडा होता है जो कद में कुछ छोटा होता है और उसके कान पर वाल जमे हुए होते हैं। अफ्रिका के गैंड़े काले और सफेद रंग के होते हैं, लेकिन दोनों का रंग कुछ भूरापन लिये हुए काला होता है।





विलकुल सफेद रंग का गैंडा कहीं नहीं पाया जाता। अफ्रिका का गैंडा दूर से देखने में सफेद मालूम पड़ता है, (जब कि) सूरज की चमकदार धूप उसके ऊपर पड़ती है। हमारे देश का गैंड़ा काले रंग का होता है। यह लंबाई में लगभग सात हाथ और ऊँचाई मे तीन हाथ से कम नहीं होता। इसका



अफ्रिका का गैंडा

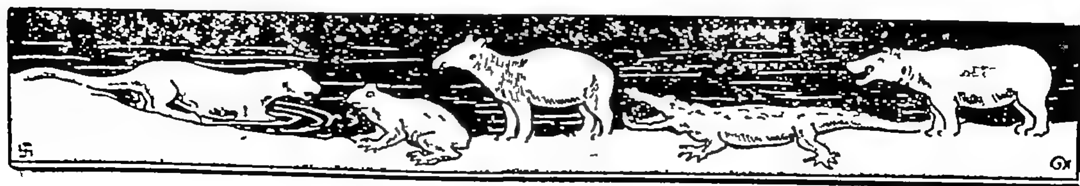
शरीर बहुत ही भारी भरकम और पाँव ठिगने कद के होते हैं। हर पाँव मे तीन-तीन खुर होते हैं। गैंडे का सींग नाक के ऊपर होता है। गैंडे के इस सींग को सींग न कहकर "खड्ग" कहते हैं। और जानवरों के सींगो की तरह यह खड्ग ठोस हड्डी नहीं होता, बल्कि घने और कसे हुए बाल या रेशे होते हैं। यह सींग की तरह ही काम देता है, लेकिन उनसे भी बढ़कर मजबूत होता है। गैंडे का खड्ग उसके सिर की हड्डी से नहीं निकलता जैसा कि दूसरे जानवर के सिर की हड्डी से सींग निकलते हैं। घने बालों या रेशों से कसा हुआ यह खड्ग उसके थुथने के ऊपर के चमड़े से निकलता है और यह इतना मजबूत और तेज धार का होता है कि उसके डर से बाघ, सिंह, हाथी आदि बड़े-बड़े

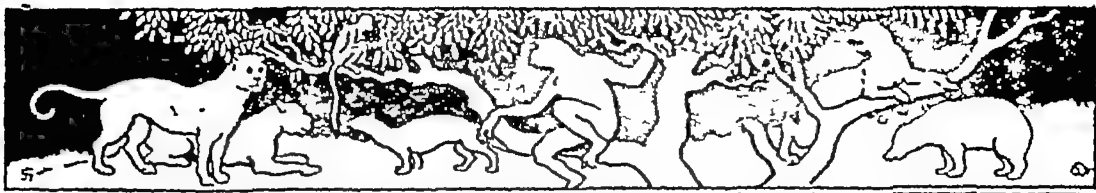




जानवर भी गैंडे के पास नहीं फटक सकते। अफ्रिका मे जो दो प्रकार के सफेद और काले गैंड़े पाये जाते हैं। उनसे सफेद गैंडा कद में ११–१२ हाथ का होता है। काला गैंडा इतना बड़ा नहीं होता।

गैंडे के शरीर का चमडा बहुत ही मोटा—डेढ दो इंच के लगभग होता है। यह इतना मजबूत होता है। कि बन्दूक की मामूली गोली का इसपर कुछ भी असर नहीं पड़ सकता। कोई भी जंगली जानवर अपने दाँत और चंगुल से इसपर घाव नहीं कर सकता। इसके शरीर का चमड़ा इस तरह मुडा हुआ रहता है कि यह देखने मे ढाल-जैसा मालूम पडता है और यह सचमुच ढाल ही है। यह ढाल ही गैंडे को जानवरों के हमले से बचाती है। गैंड़े के चमडे से ही ढाल तैयार की जाती है। यह ढाल क्या है, जानते हो? पहले युद्ध में लड़नेवाले सिपाही ढाल और तलवार लेकर लड़ा करते थे। यह ढाल उन्हें दुश्मन की तलवार की चोट से बचाती थी। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि जो गैंड़ा अपनी ढाल और खड्ग के कारण किसी बड़े-से-बडे और भयानक-से-भयानक जानवर से भी नहीं डरता वही मक्खी जैसे दुश्मन से तंग आ जाता है। मक्खियाँ और कीड़े इसके चमड़े की तहों में घुस जाते हैं और झुड-के-झुड वहाँ बसेरा ले लेते हैं। वहाँ का चमड़ा उतना कड़ा नहीं होता, इसलिये मक्खियाँ और कीड़े चमड़े को खोद-खोदकर मास तक पहुँच जाते हैं। इनसे बचने के लिये गैंड़ा भागकर सूअर की तरह पानी मे जा छिपता है। यह जान-बूझकर अपनी देह को कीचड से ढँक लेता है ताकि इसके चमड़े की तहों में बसेरा लेनेवाली मक्खियाँ या कीड़े डूबकर मर जायँ या उनका दम घुट जाय। लेकिन, एक उपाय है जिससे यह मक्खियों और कीडों से अपने को बचा सकता है। इसके लिये एक चिडिये से इसने दोस्ती कर ली है। इसलिये उस चिड़िये का नाम ही पड गया है 'गैंडा पक्षी'। अपने इस दोस्त पक्षी को यह अपनी देह के ऊपर अड्डा जमाने देता है। यह छोटी चिडिया गैंड़े के चमड़े की तहों में पाये जाने वाले कीडों को चुग-चुगकर खा जाती है। गैंडा अपने इस उपकारी दोस्त को किसी तरह की चोट नहीं पहुँचाता और यह पक्षी भी इस उपकार का बदला चुकाने से बाज नहीं आता। किस तरह? गैंडे के ऊपर जब कोई खतरा आनेवाला होता है तब 'गैंडा-पक्षी' जोर-जोर से बोलकर और अपने



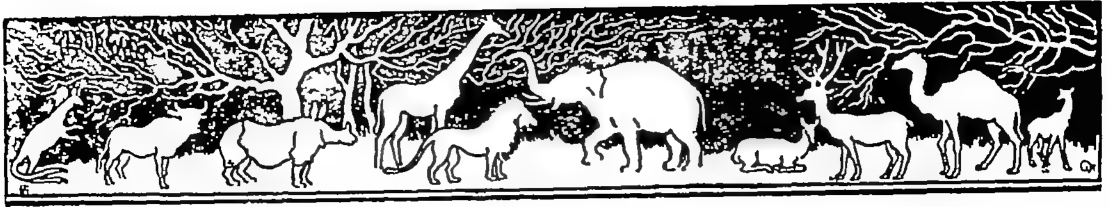


पंखों को फड़फड़ाकर सावधान कर देता है जिससे गेंडा भागकर किसी ऐसी जगह पर जा छिपता है जहाँ खतरे से इसकी रक्षा हो सके।

जितने बड़े-बड़े जानवर पृथ्वी-तल पर पाये जाते हैं उनमें गेंडा सबसे बदसूरत होता है। यदि तुम किसी चिड़ियाखाने में कभी जाओ तो दूर से ही इस अजीब जानवर को नाक पर के सींग या खड्ग को देखकर पहचान जाओगे। यह बड़ा ही जंगली, खूँखार और बदमिजाज होता है। यह बिना किसी वजह के भी मनुष्य पर चोट कर बैठता है। अक्सर यह पागल जैसा काम करने लगता है। मनुष्य को देखते ही इसे गुस्सा हो आता है और यदि मनुष्य इसपर गोली की चोट करता है तो यह इतनी तेजी के साथ दौड़कर उसपर हमला करता है कि तेज से तेज घोड़े पर सवार शिकारी के लिये भी इसका पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाता है। अगर यह उस आदमी को पकड़ ले तो फिर उसे ठोकर मारकर अपने खड्ग से उसे चीर डालता है और अपने भारी पाँवों से रौंदकर उसका कचूमर निकाल डालता है। बिना छेड़े जाने पर भी कभी-कभी इसका मिजाज गरम हो उठता है। एकाएक खाना छोड़कर यह किसी पेड़ या झाड़ी की तरफ दौड़ पड़ता है और जबतक यह उस पेड़ के धड़ को बीचोबीच चीर न डाले या झाड़ी को टुकड़े-टुकड़े न कर डाले तबतक इसका क्रोध शान्त नहीं होता। उस समय अगर कोई आदमी पेड़ पर चढ़ा हुआ हो तो गेंडा उस पेड़ को तोड़ डालना चाहेगा जिसमें यह उस आदमी को पकड़ सके।

गेंडा हाथी से भी बढ़कर बलवान् होता है। अफ्रिका के घने जंगलों में एक बार एक शिकारी ने एक हाथी और एक गेंडे के बीच घोर युद्ध होते हुए देखा था। उस भिड़न्त में गेंडे ने इतनी आसानी से हाथी को खदेड़ दिया जितनी आसानी से एक बुलडॉग कुत्ता भेड़ को खदेड़ देता है। कर्नल पैटरसन ने लिखा है कि एक बार २१ गुलाम अफ्रिका के जंगल से होकर जा रहे थे। उनके गले में जंजीर लगी हुई थी और सबके गले एक दूसरे से बँधे हुए थे। एकाएक एक गेंडे ने उनपर हमला किया। बीच में जो गुलाम था उसपर चोट करके गेंडे ने अपने खड्ग की एक बार



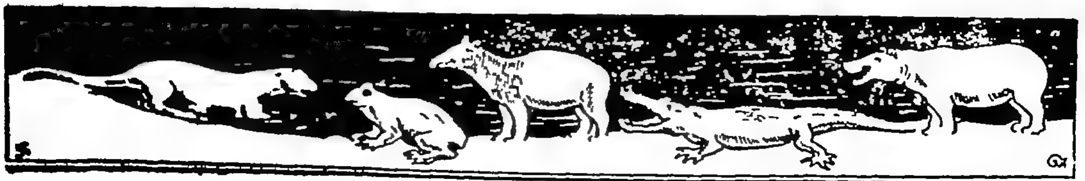


से ही उसे मार डाला। उसके साथ-साथ दूसरे गुलाम भी जमीन पर गिरकर मर गये। गैंड़े का हमला बीच के आदमी पर इतने जोर से हुआ था कि उससे दूसरे आदमियों की गर्दनें भी टूट गईं!

इतना बलवान् और भारी भरकम होने पर भी गैंडा मगर से हार मान लेता है। मि० मैक्स नामक एक अँगरेज शिकारी ने एक गैंडे और एक मगर के बीच लड़ाई होते देखा था। साहब ने उस दृश्य का फोटो भी ले लिया था। पूर्व अफ्रिका के केनिया प्रदेश में एक गैंडा एक नदी में पानी पीने गया। पानी पीते समय उसके पिछले पाँव को एक बहुत बड़े मगर ने पकड़ लिया। गैंडा नदी के किनारे से कुछ ही गज के फासले पर था। वह मगर के चंगुल से अपने को छुडाकर भागने की कोशिश करने लगा। दोनों मे कशमकश चलने लगी। आखिर मगर की जीत हुई। मगर धीरे-धीरे गैंड़े को खींचकर बीच धारा में ले गया और वहाँ हजारों मगर उसपर एकाएक टूट पड़े!

गैंड़ा मूर्ख होता है और अपने दोस्त और दुश्मन को नहीं पहचानता। हर जानवर पालतू बनाकर सिखाया जा सकता है, लेकिन गैंड़े को पालतू बनाकर कुछ नहीं सिखलाया जा सकता। वह मूर्ख यह भी नहीं समझता कि उसका रक्षक, जो उसकी देखभाल करता है और उसे खिलाता-पिलाता है, उसका दोस्त है और मौका मिलने पर वह अपने रक्षक के हाथ से खाना खाकर उसे खड्ग से चीडफाड डालने में भी आगापीछा नहीं करता। लेकिन, इस तरह मार डालने पर भी गैंडा मांस नहीं खाता। हाथी की तरह वह घास और हरी पत्ती तथा सागसब्जी खाता है। परन्तु, सागसब्जी खानेवाला गैंडा मासखानेवाले जानवर के समान ही भयानक और खूँखार हो सकता है, यह क्या कम आश्चर्य की बात है!

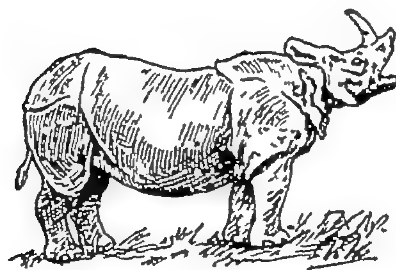
एक बार एक सर्कस कंपनी मे एक गैंडे और एक जंगली भैंसे के बीच लड़ाई दिखलाई गई थी। पहले भैंसा लाया गया, फिर गैंडा। गैंडे को दूर से देखते ही भैंसा माथा नीचा करके अपने दोनों पाँवों से मिट्टी खोदने और 'भोंस-भोंस' की आवाज करने लगा। मानों वह गैंड़े को आगे बढ़ने के लिये ललकार रहा हो। गैंडा बिना हिले-डुले या भय का भाव प्रकट किये खड़ा था। भैंसा उसकी ओर दौड़ा लेकिन, गैंडे ने किनारा काटकर उसकी पहली वार से अपने को बचा



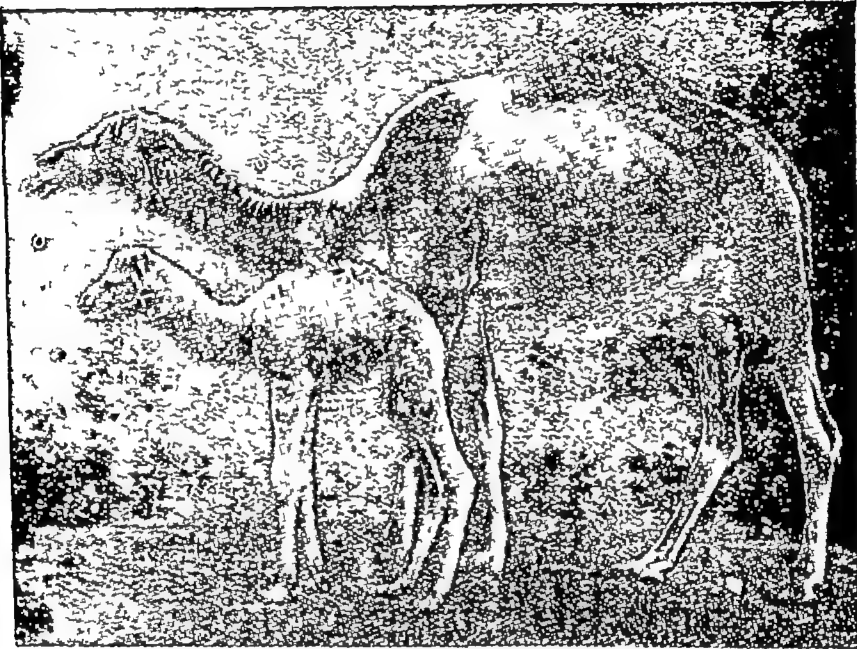


लिया। इसके वाद अपने खड्ग से उसने भैंसे को हल्का घूँसा जमाया। भैंसा उस घूँसे की कुछ भी परवा न करके फिर उसपर चोट करने के लिये आगे वढ़ा। गैंड़ा इस वार मारे गुस्से के फूलने लगा और उसकी दोनों आँखें जलने लगीं। भैंसे ने दौडकर गैंडे के कन्धे पर जोर से धक्का दिया। इसके साथ ही गैंडे ने अपने खड्ग को भैंसे के पंजरे मे घुसाकर और जरा ऊँचा उठाकर उसे पछाड दिया। जमीन पर गिरते ही भैंसे का काम तमाम हो गया।

गैंडे के खड्ग में रोगों को चंगा करने के गुण भी पाये जाते हैं। इसने वने कटोरे मे एक खास गुण यह होता है कि उसमे रक्खा हुआ शरवत या दूध अच्छी तरह रहता है। लेकिन, अगर कोई उसमे विष मिला दे तो कटोरा फौरन् टोटूक हो जायगा। पहले जमाने मे राजा-महाराजों को जहर देकर मारने की चेष्टा की जाती थी। इसलिये किसी खाने या पीने की चीज मे जहर मिला हुआ है या नहीं, यह जानने के लिये उस समय के राजा-महाराज खड्ड का कटोरा रक्खा करते थे। कूँओं मे खड्ग रख देने से उनका पानी वरावर साफ रहता है।

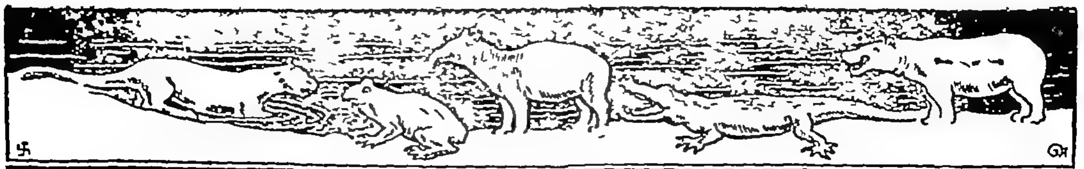






ऊँट

ऊँट दो प्रकार के होते हैं। एक प्रकार का ऊँट कद में बड़ा होता है और उसकी पीठ पर एक कूबड़ होता है। दूसरे प्रकार का ऊँट कद में कुछ छोटा होता है और उसकी पीठ पर दो कूबड़ होते हैं। पहले प्रकार के ऊँट केवल अफ्रिका और एशिया मे तथा दूसरे प्रकार के ऊँट केवल एशिया में पाये जाते हैं।





ऊँट देखने मे वदसूरत होता है। इसका शरीर काफी वड़ा, पाँव लंवा, सिर छोटा और पीठ टेढ़ी झुकी हुई होती है। इसके सींग नहीं होते। एक कूवड़ वाला ऊँट अरवी ऊँट कहलाता है। मध्य एशिया के वैक्ट्रिया प्रदेश में पाये जानेवाले ऊँट के दो कूवड़ होते हैं। वहाँ वहुत सर्दी पड़ती है। ऊँट का कूवड़ चर्वी से वना हुआ होता है और जव ऊँट वहुत दूर का कठिन और लंवा सफर करता है, इसका कूवड़ कम होने लगता है और इस तरह कम होते-होते एकदम गायव हो जाता है।



वगदादी ऊँट

ऊँट को 'रेगिस्तान का जहाज' कहते हैं। रेगिस्तान किसे कहते हैं, जानते हो? अरव, मिस्र, ईरान, चीन आदि देशों में और हमारे देश के राजपुताना और सिन्ध प्रदेशो मे जगह-जगह हजार, दस हजार या पचास हजार वर्गमीलो में वालू के मैदान देखे जाते हैं। वालू के इन मैदानों मे चकमक वालू के सिवा और कहीं कुछ नजर नहीं आता। खजूर के पेडों के सिवा और कोई पेड-पौधा भी नहीं पाया जाता। दिन मे यह वालू तेज धूप मे तपकर एकवारगी आग हो जाता है और सारा दिन आग की झड़ और लू चलती रहती है। कहीं छाया नहीं, पीने के लिये एक वूँद पानी नहीं। ऐसे





रेगिस्तान में अगर घोड़ा या कोई दूसरा जानवर बोझ लेकर चले तो बालू में वह बहुत दूर नहीं चल सकेगा और फौरन् थककर बैठ जायगा। जब रेगिस्तान में हवा जोर से बहने लगती है और बालू के बगूले उठने लगते हैं उस समय ऊँट के सिवा और किसी भी दूसरे जानवर का दम घुँट जा सकता है बशर्ते कि मालिक उसकी रक्षा नहीं करे, लेकिन ऊँट के नथने इस तरह के बने हुए होते हैं कि वह मजबूती से उन्हें बंद कर लेता है और अपने फेफड़ों में बालू को घुसने नहीं देता। लेकिन, ऊँट में सबसे बढ़कर खास खूबी यह होती है कि वह हफ्तों तक बिना पानी के रह सकता है। उसके पेट में थैलियाँ होती हैं जिनमें वह जल भरकर रख लेता है। जहाँ उसे पानी पीने का मौका मिलता है वहाँ वह पेट की थैलियों में पानी भर लेता है और फिर इसके बाद अपनी पीठ पर भारी बोझा लिये हुए उस रेगिस्तान मे बिना कुछ खाये-पिये चलता रहता है। इस बीच में रेगिस्तान में उगनेवाले छोटे-छोटे कँटीले पौधों के सिवा उसे खाने को कहीं कुछ नहीं मिलता। इस तरह चलते हुए सात-आठ दिनों तक जल नहीं मिलने पर भी उसे कष्ट नहीं होता। उसके पाँवों के खुर नरम और गद्दीदार होते हैं। चलते समय दबाव पड़ने पर उसके बड़े-बड़े मुलायम खुर फैलकर चौड़े हो जाते हैं जिससे बालू पर चलना उसके लिये आसान होता है। पीठ पर भारी बोझा लेकर लगातार हफ्तों तक रेगिस्तान के तपते हुए बालू पर चलता रहे, यह ऊँट के सिवा और किसी जानवर से नहीं हो सकता। इसी लिये ऊँट को 'रेगिस्तान का जहाज' कहते हैं।

आज हजारों वर्ष से ऊँट इस तरह रेगिस्तान से होकर मनुष्य और बोझ को ढोता आ रहा है। कुछ ऊँट ऐसे होते हैं जो सिर्फ सवारी के काम में आते हैं। वे फी घंटे आठ-दस मील चल सकते हैं और इस तरह सारा दिन और आधी रात तक बिना कहीं आराम किये चलते रहते हैं। कोई भी दूसरा जानवर ऐसा नहीं कर सकता।

ऊँट मे बहुत-से गुण होने पर भी उसमें एक दोष पाया जाता है। वह बड़ा जिद्दी और मनमानी करनेवाला जानवर होता है। रास्ते में चलते समय उसे अगर कहीं कुछ खाने की चीज दिखाई पड़े तो फिर वह किसीकी नहीं सुनता और हजार रोकने पर भी वहाँ पहुँचे बिना नहीं





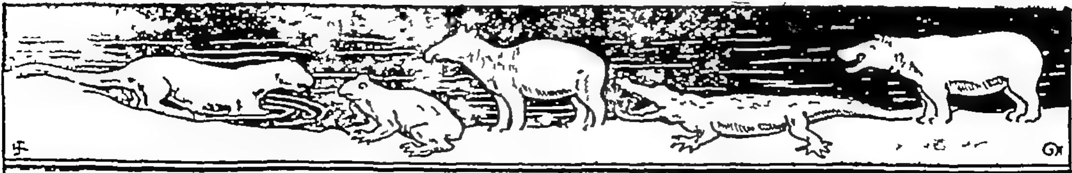
मानता। इसके लिये अगर हाँकनेवाला सवार उसे मारता-पीटता है तो ऊँट इसका बदला भी लेता है। एक बार एक १३-१४ वर्ष का लड़का एक ऊँट को लिये कहीं जा रहा था। राह चलते हुए दूर पर खाने की कोई चीज देखकर ऊँट उस तरफ दौड़ चला और बहुत रोकने पर भी नहीं माना। इसके लिये उस लड़के ने ऊँट को बहुत मारा-पीटा। उस दिन उस लड़के के साथ और कई आदमी थे जिससे ऊँट ने अपने क्रोध को दबा रक्खा और बदला लेने का मौका ढूँढ़ने लगा। फिर एक दिन जब वही लड़का ऊँट को लिये जा रहा था, अकेले मे मौका देखकर ऊँट ने उस लड़के को झटका देकर अपनी पीठ पर से गिरा दिया जिससे उसका सिर चूर-चूर हो गया।





जिराफ

चिड़ियाखाने में सबसे लंबी गर्दनवाला जो जानवर तुम्हे दिखाई पड़ेगा उसी का नाम जिराफ है। अपने बच्चे को थन से दूध पिलानेवाले जितने जन्तु हैं उनमे जिराफ ही सबसे बड़ा है। संसार में इस ढंग का दूसरा और कोई जानवर नहीं होता। हाथी देखने में बहुत भारी-भरकम होता है सही, लेकिन लंबाई में वह भी जिराफ की बराबरी नहीं कर सकता! जिराफ इतना लंबा होता है कि बडे-से-बडा हाथी भी ऊँचाई में लंबे-से-लंबे जिराफ का आधा ही होगा।





लंबे-से-लंबा जिराफ सिर से लेकर पाँव तक नाप मे १८ फीट होता है यानी आदमी से तिगुना लंबा। यहाँ तक कि बीस फीट लंबा जिराफ भी देखा गया है।

इस समय जिराफ सिर्फ दक्खिन अफ्रिका मे पाया जाता है। लेकिन पुराने जमाने में एशिया और यूरोप में, खासकर ग्रीस, ईरान, चीन और हिन्दुस्तान मे काफी जिराफ देखे जाते थे।

जिराफ जितना लंबा होता है, उस हिसाब से उसका शरीर छोटा ही कहा जायगा। उसके सामने के पाँव जितने बड़े होते हैं उससे पिछले पाँव छोटे होते हैं; इसलिये कंधे से लेकर पूँछ तक ढालू दिखाई पड़ता है। लेकिन उसकी लंबाई का कारण यह नहीं है कि उसके सामने के पाँव बहुत बड़े-बड़े और सीधे होते हैं। असल मे उसकी गर्दन बहुत लंबी होती है। गर्दन को सीधा करके जब वह खड़ा होता है तब मालूम होता है मानों ताड़ का पेड़ हो।

जिराफ की देह का रंग हल्का पीला होता है जिसपर मटमैले रंग के दाग होते हैं। पाँव सीधे और लंबे होते हैं और घोड़े और गाय के समान उनमें खुर भी होते हैं। उसकी जीभ बहुत बड़ी लगभग १७ इंच लंबी होती है, उसका मुँह जमीन से लगभग १२—१३ हाथ ऊँचा रहता है जिससे वह पेड़ की ऊँची डालियों से पत्ते तोड़कर आसानी से खा सकता है। जमीन पर घास खाते समय या पानी पीते समय वह सामने के दोनो पाँवों को खूब फैलाकर खड़ा रहता है; ऐसा नहीं करने से वह अपनी लंबी गर्दन को नीचे झुका नहीं सकता। उसके भोजन करने का समय भोर और शाम के बाद होता है। बाकी समय मे वह आँखें मूँदकर आराम करना पसंद करता है। महीनों तक वह पानी पिये बिना रह सकता है। इतना बड़ा जानवर बहुत दिनो तक एक बूँद पानी पिये बिना रह जाय यह कम ताज्जुब की बात नहीं है।

उसकी दोनों आँखें बड़ी खूबसूरत होती हैं। आँखो से शान्ति और चेहरे से सीधापन झलकता है। वह अपने नथनों को जब चाहे बंद कर ले सकता है और खोल सकता है जिससे धूल, बालू आदि उसमे घुसने नहीं पाते। धूल और वर्षा मे वह आँख और नाक को बंद कर लेता

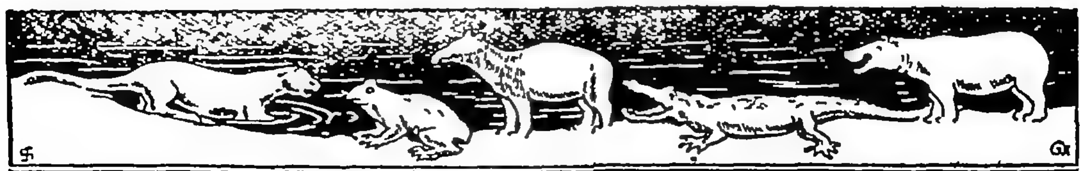




है। नर और मादा जिराफ के सिर पर दो छोटे-छोटे सींग होते हैं। सिर के बीच भाग में भी सींग के समान एक हड्डी निकली हुई होती है।

जिराज बहुत ही शान्त स्वभाव का जानवर होता है। उसके दाँत और सींग होते हैं सही; लेकिन शत्रु से अपनी रक्षा करने के लिये वह इन हथियारों से काम नहीं लेता। उसका एकमात्र हथियार है पिछले पाँवों के खुर। उसके पिछले पाँवो में बड़ा जोर होता है। लत्तियाँ चलाकर वह सिंह जैसे जानवर के भी छक्के छुडा देता है। उसका सबसे बडा दुश्मन जानवरों का राजा सिंह ही है। किसी नदी या नाले के पास झाड़ी मे छिपकर घात लगाते हुए सिंह बैठा रहता है। जिराफ जब वहाँ पानी पीने के लिये आता है, सिंह एक छलाँग में ही कूदकर उसके ऊपर जा बैठता है। लेकिन अकेला होने पर सिंह को भी सहज ही शिकार हाथ नहीं लगता। उस समय जिराफ अपने पिछले पाँवों के खुरों से सिंह के ऊपर इस तरह लत्तियाँ चलाना शुरू कर देता है कि सिंह महाशय को अपनी जान बचाने के लिये दुम सटकाकर भाग जाना पड़ता है। इसलिये सिंह भी झुड बाँध कर जिराफ का शिकार करने के लिये निकलता है और जिराफ का कुछ स्वभाव ही ऐसा होता है कि वह अकेला घूमना-फिरना पसंद करता है। इसलिये सिंह के लिये उसपर हमला करना आसान होता है। फिर भी उसकी देखने की शक्ति बहुत तेज होती है और अपनी गर्दन को उठा कर वह बहुत दूर तक की चीज देख सकता है, जिससे वह सिंह को दूर से देखकर ही सावधान हो जाता है और अपने पिछले खुरों से इस तरह लत्तियों की झड़ी लगा देता है कि बेचारे सिंह को उसके पास फटकने की हिम्मत ही नहीं होती। वह बहुत तेज दौड़ सकता है। तेज-से-तेज घोड़ा भी दौड़ने में उसकी बराबरी नहीं कर सकता। दौड़ने, सूँघने और देखने की शक्ति इतनी तेज होने पर भी उसे एक प्रकार से गूँगा ही समझना चाहिये। इसलिये अकेले में सिंह जब उसपर हमला करता है उस समय वह जोर से चिल्लाकर अपने जाति- भाइयों की मदद नहीं ले सकता।

लेकिन, इससे यह नहीं समझना चाहिये कि वह बिलकुल बोल ही नहीं सकता। बच्चा जिराफ को भेंड़ और बछडे की तरह मिमियाते हुए सुना गया है। बूढ़े जिराफ को भी जोर से हुँकारते-





जैसी आवाज करते देखा गया है, ऐसा उस समय होता है जब वह क्रोधित रहता है और लड़ाई करता है। उस समय होती है और यह लड़ाई जब कि झुंड-का कोई बूढ़ा जिराफ राजा बनना चाहता है और दूसरा नौजवान जिराफ उसे ललकारता है, जो खुद राजा बनना चाहता है। उस समय दोनों एक दूसरे के चारों तरफ नाच-नाचकर और पैंतरेबाजियाँ दिखाकर लत्तियाँ चलाते हैं। इस तरह लत्तियों की चोट खाकर जब बूढ़ा जिराफ थक जाता है तब वह हार मानकर अलग हो जाता है।

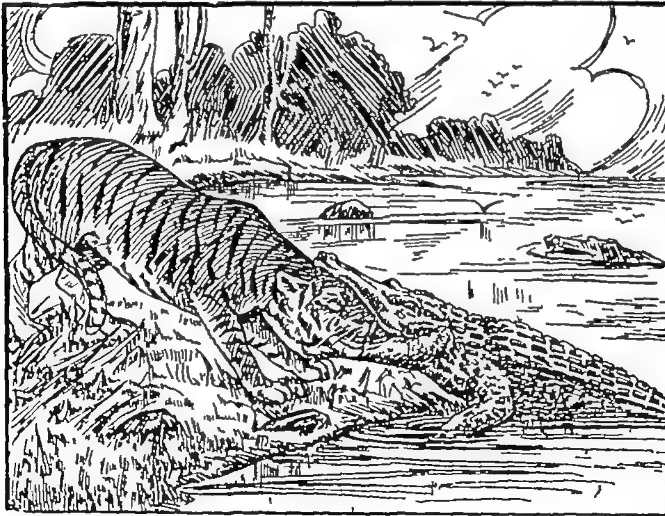
जिस समय जिराफ झुंड बाँधकर अपनी गर्दनों को ऊँची किये हिलाते हुए एक कतार में चलते हैं उस समय उनके जलूस की शोभा देखते ही बनती है। दूर से मालूम होता है मानो पाल बाँधे हुए नावें चल रही हों!

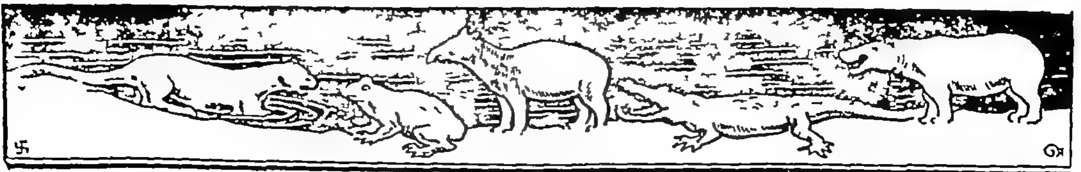


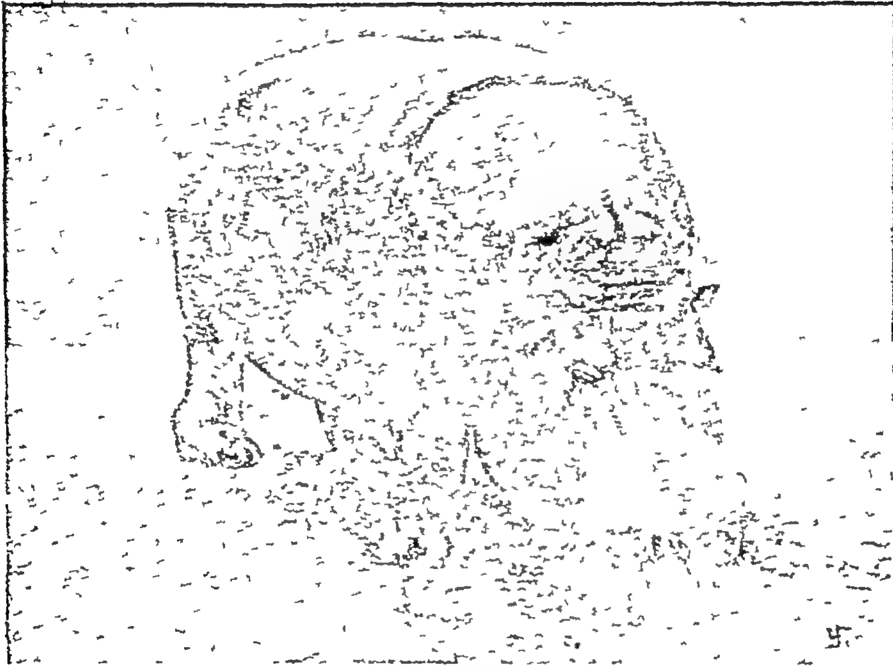


भोज का मजा

अफ्रिका के बहुत-से भागों में जल बहुत कम पाया जाता है। इसलिये रात मे सिंह, हाथी, गैंड़ा, जिराफ आदि जानवर एक ही नाले या सोते के पास पानी पीने के लिये आते हैं। ऐसे समय में ही एक सिह को जिराफ का मांस खाने का लोभ हुआ। कुछ दूर पर जिराफों का एक दल पानी पी रहा था। उनमें से एक पर सिंह उछलकर जा बैठा। जिराफ वेचारा तो मारे डर के अधमरा-सा हो गया। सिंह अभी अच्छी तरह जिराफ को पकड़ भी नहीं पाया था कि उसे अपनी पीठ पर लिये दिये जिराफ पानी मे कूद पड़ा और गहरे पानी में जा पहुँचा। अव जिराफ के लिये गहरा पानी कितना हो सकता है, यह तुम सहज ही समझ सकते हो। बेचारा सिंह तो डुबकियाँ खाता हुआ कहाँ गया, कुछ पता नहीं। पाँच-सात मिनटों के वाद मांस के वदले पानी पी-पीकर सिंह का पेट फूलकर कुप्पा हो गया। वह विलकुल अधमरा-सा हो रहा था कि झुड-के-झुड मगर उसपर टूट पड़े। उन सवके लिये भोज का ही सामान जुट गया। और, वह भोज भी कैसा? राजा के मांस का! बहुत दिनों से ऐसा भोज नहीं हुआ था! उधर जिराफ किसी तरह पानी से निकलकर अपने साथियों में जा मिला।



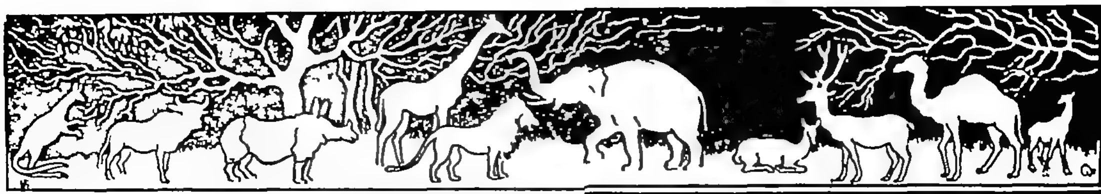




दरियाई घोड़ा

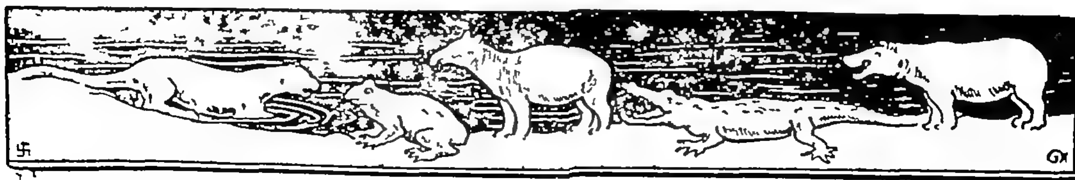
अब कुछ ऐसे विदेशी जानवरों से तुम्हारा परिचय कराया जाता है जिन्हें आमने-सामने देखने का मौका तुम्हें बहुत कम मिलेगा। सिर्फ किताबों में इनका हाल पढ़कर और इनकी तस्वीरें देखकर ही इनके बारे में तुम जान सकते हो। इसी तरह का एक जानवर दरियाई घोड़ा या हिपा-पोटेमस है। हिपो का अर्थ है घोड़ा और पोटेमस का अर्थ है नदी। इसी नाम से हिन्दी में इसका





नाम पडा है दरियाई घोडा। बहुत पुराने जमाने से ही हिपोपोटेमस को क्यों घोड़ा कहा जाता है, इसकी भी एक खास वजह है। हिपोपोटेमस अधिक संख्या में मिस्र देश की नील नदी मे देखे जाते हैं। नदी के किनारे जहाँ घास की सब्जी होती है उसी के आस-पास दरियाई घोड़े देखे जाते हैं। ठीक घोडे की तरह ये घास चरते हैं। चाँदनी रात में शिकारियों ने इन्हें इस तरह घास चरते देखा भी है। दरियाई घोडे के चारों पाँवो में खुर भी होते हैं। इसके सिवा यह घोड़े की तरह ही मास नहीं खाता। बहुत-से लोग इसे 'जलहाथी' भी कहते हैं। लेकिन जिस भाषा से इसका नाम लिया गया है उसका अर्थ जल का घोड़ा ही होता है—जलहाथी नहीं।

अफ्रिका छोड़कर और कहीं भी दरियाई घोडा नहीं पाया जाता। दरियाई घोडे के भारी भरकम शरीर और जबरजंग चेहरे को अगर तुम देखो तो तुम्हें बहुत पुराने जमाने के उन सब जानवरों की याद आ जायगी जिनकी कहानियाँ तुम पढा करते हो। इसकी आँखें और कान बहुत छोटे-छोटे तथा सिर और चेहरा ये दोनो बहुत बडे और चौड़े होते हैं। अगर घोड़े की तरह इसके पाँव होते तो खड़ा होने पर यह बड़ा ही भयानक मालूम होता। लेकिन इसके पाँव इतने छोटे होते हैं कि यह ऊँचाई में पाँच फीट से अधिक नहीं होता। इसके शरीर का घेरा आठ-नौ हाथ से कम नहीं होता। पाँव छोटे होने के कारण इसका बड़ा पेट जमीन को छूता हुआ रहता है। इसके शरीर का चमड़ा मोटा और चिकना होता है और उसके नीचे चमड़े की कई परतें होती हैं जिससे पानी मे इसका शरीर गर्म रहता है। यह सारा दिन जल में पडा रहता है। यह एक साँस मे दस मिनट तक पानी के अन्दर डूबा रह सकता है, मछली की तरह तैर सकता है और डुबकी लगा सकता है। इतनी देर तक यह पानी में रह सकता है, इसकी वजह यह है कि यह अपने नथनो को बन्द करके साँस को रोक लेता है और साथ ही पानी को भी नथनों के अदर घुसने नहीं देता। पानी में सारे शरीर को डुबाये हुए नाक से जल के फव्वारे छोडने में इसे मजा मिलता है। बच्चे को पीठ पर लादे हुए यह पानी मे तैरता रहता है। एक साथ बीस-बीस या इनसे अधिक दरियाई घोड़े पानी में इस तरह खेल करते हुए देखे जाते हैं। उस समय अगर कोई नौका इनकी राह मे आने का साहस करे





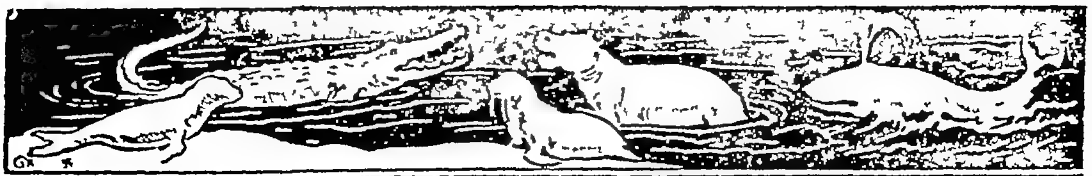
तो फिर उसकी खैर नही। विना किसी कारण के ही ये नौका को उलट देते हैं और उसपर जो लोग सवार रहते हैं उन्हे मार डालते हैं। इसके दाँत वहुत वड़े-वडे और इतने सख्त होते हैं कि कोई भी चीज इसकी चोट से वच नहीं सकती।

एक-एक दरियाई घोडा वजन मे एक सौ मन से कम नहीं होता। अफ्रीका के हवशी लोग इसका मास खाना वहुत पसन्द करते हैं। वे वर्छा, वन्दूक और तीर-धनुप लेकर दरियाई घोड़े का शिकार करते हैं। यो तो इसका मिजाज ठंडा होता है, लेकिन जव छेडा जाता है तव यह छेड़नेवाले को सहज ही नहीं छोड़ता। शिकारी की नाव को उलटकर उसके टुकड़े-टुकडे कर डालता है और अगर शिकारी को पकड़ पाता है तो उसे भी अपने दाँतों से खण्ड-खण्ड किये विना नहीं छोड़ता।

कुछ वर्ष पहले, नील नदी में दरियाई घोड़े का एक वच्चा पकडा गया था। वच्चा पकड़कर जिस समय लन्दन लाया जा रहा था एक वहुत वड़े दरियाई घोडे ने नौका पर सवार एक आदमी पर हमला किया और अपने मजवूत दाँत के एक झटके से ही उस आदमी की कमर के पास दो फाँकों मे चीर डाला।

दरियाई घोड़ा-जैसे जानवर से एक फायदा यह हुआ है कि अपने वड़े-वड़े दाँतो से यह नदी में पैदा होनेवाले वड़े-वड़े पौधो को खा डालता है। अगर ऐसा नहीं होता तो अफ्रिका की नदियाँ घास और पौधों से भर जातीं और उनका पानी इधर-उधर फैल जाता जिससे आस-पास की जमीन दल-दल हो जाती।

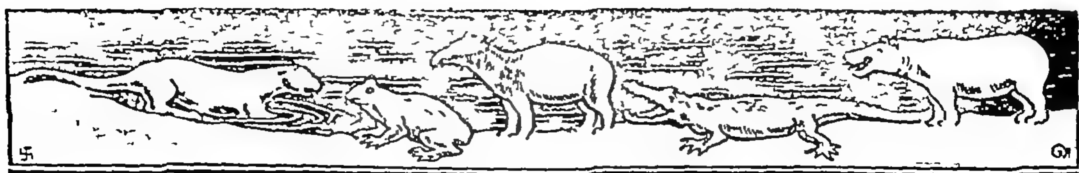
लेकिन दरियाई घोडो से जहाँ यह फायदा होता है वहाँ मनुष्य का नुकसान भी होता है। जहाँ इनका अड्डा होता है वहाँ आस-पास की जमीन की फसल को ये नष्ट कर डालते हैं। रात मे खेतों मे जाकर ये फसल को चर जाते हैं और फिर भोर मे जल मे आकर लेट जाते हैं। ये अपने पैने दाँतों से फसल को इस तरह कतर डालते हैं जैसे वह हँसिये से काट डाली गई हो।





दरियाई घोडे घुमक्कड़ भी खूब होते हैं। रात में ये वहुत दूर तक एक नदी से दूसरी नदी में चले जाते हैं। अफ्रिका मे एक दरियाई घोड़ा था जिसका नाम 'ह्यूवर्ट' रक्खा गया था। यह चलने मे कभी थकता ही नहीं था। एक दिन जहाँ यह देखा जाता था उसके दूसरे दिन पचास मील की दूरी पर दिखाई पड़ता था। जिस प्रदेश मे यह रहता था वहाँ के सव लोग इसे पहचानते थे। साहवो ने इसके फोटो जितनी वार लिये थे उतनी वार अफ्रीका के और किसी दूसरे जानवर के नहीं। इसे कोई मार नहीं सकता था। इसलिये यह वहुत दिनो तक जिन्दा रहा और जब मरा तब हरएक आदमी को ऐसा जान पडा कि उसने एक दोस्त को खो दिया है।

इस तरह का भोदू जानवर भी वाजे की सुरीली आवाज सुनना पसन्द कर सकता है, यह बात तुम्हे कुछ आश्चर्य-जैसी मालूम होगी। एक वार फौज के कुछ सिपाही नदी के किनारे से होकर वाजा वजाते हुए जा रहे थे। उस फौज के कप्तान ने लिखा है—"इसी समय पानी के अन्दर से दल-के-दल दरियाई घोड़े निकलकर किनारे मे चले आये और इस तरह का हाव-भाव दिखाने लगे जिनसे मालूम होता था कि वाजे की आवाज सुनकर वे खुश हो रहे हैं। इसके वाद सिपाही जिस तरह आगे वढ़ते गये उसी तरह वे भी नदी के किनारे से होकर पानी मे आगे वढ़ते गये। इस तरह एक घण्टा तक वे पानी में तैरते हुए आगे वढ़ आये और जब सिपाही लोग दूसरे रास्ते से चलने लगे तव, जवतक उनके वाजे की आवाज सुनाई पड़ी तबतक, वे वहाँ स्थिर रह-कर सुनते रहे। आखिर जव आवाज विलकुल नहीं सुनाई पड़ने लगी तव वे अपनी जगह पर, जहाँ से आये थे, लौट गये।"



सील

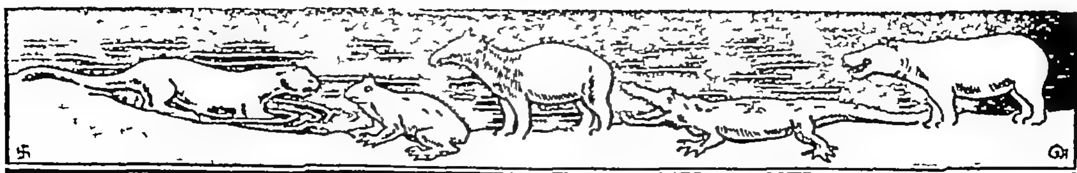
मांसाहारी जानवरों मे सिर्फ सील ही ऐसा है जो पानी के अन्दर रहता है। पृथ्वी के सबसे उत्तर और सबसे दक्षिण भाग मे जो प्रदेश हैं उन्हे उत्तर मेरु प्रदेश और दक्षिण मेरु प्रदेश कहते हैं। वहाँ साल भर बर्फ जमी रहती है और बहुत ज्यादा सर्दी पडती है। बर्फ और समुद्र—समुद्र और बर्फ के सिवा यहाँ और कुछ भी नजर नहीं आता। असल मे इन्हें प्रदेश न कहकर महादेश ही कहना चाहिये। अङ्गरेजी मे उत्तर मेरु प्रदेश को Arctic और दक्षिण को Antarctic कहते हैं। दोनों मे फर्क यही है कि दक्षिण मेरु प्रदेश मे बहुत दूर तक जमीन फैली हुई है और





दरियाई घोडे घुमक्कड भी खूब होते हैं। रात मे ये वहुत दूर तक एक नदी से दूसरी नदी में चले जाते हैं। अफ्रिका मे एक दरियाई घोडा था जिसका नाम 'ह्यूवर्ट' रक्खा गया था। यह चलने में कभी थकता ही नहीं था। एक दिन जहाँ यह देखा जाता था उसके दूसरे दिन पचास मील की दूरी पर दिखाई पड़ता था। जिस प्रदेश मे यह रहता था वहाँ के सब लोग इसे पहचानते थे। साहवो ने इसके फोटो जितनी बार लिये थे उतनी बार अफ्रीका के और किसी दूसरे जानवर के नहीं। इसे कोई मार नहीं सकता था। इसलिये यह बहुत दिनों तक जिन्दा रहा और जब मरा तब हरएक आदमी को ऐसा जान पड़ा कि उसने एक दोस्त को खो दिया है।

इस तरह का भोदू जानवर भी बाजे की सुरीली आवाज सुनना पसन्द कर सकता है, यह बात तुम्हे कुछ आश्चर्य-जैसी मालूम होगी। एक बार फौज के कुछ सिपाही नदी के किनारे से होकर बाजा बजाते हुए जा रहे थे। उस फौज के कप्तान ने लिखा है—"इसी समय पानी के अन्दर से दल-के-दल दरियाई घोड़े निकलकर किनारे मे चले आये और इस तरह का हाव-भाव दिखाने लगे जिनसे मालूम होता था कि बाजे की आवाज सुनकर वे खुश हो रहे हैं। इसके बाद सिपाही जिस तरह आगे बढ़ते गये उसी तरह वे भी नदी के किनारे से होकर पानी में आगे बढ़ते गये। इस तरह एक घण्टा तक वे पानी में तैरते हुए आगे बढ़ आये और जब सिपाही लोग दूसरे रास्ते से चलने लगे तब, जबतक उनके बाजे की आवाज सुनाई पड़ी तबतक, वे वहाँ स्थिर रह-कर सुनते रहे। आखिर जब आवाज बिलकुल नहीं सुनाई पड़ने लगी तब वे अपनी जगह पर, जहाँ से आये थे, लौट गये।"



सील

मांसाहारी जानवरों मे सिर्फ सील ही ऐसा है जो पानी के अन्दर रहता है। पृथ्वी के सबसे उत्तर और सबसे दक्षिण भाग मे जो प्रदेश हैं उन्हे उत्तर मेरु प्रदेश और दक्षिण मेरु प्रदेश कहते हैं। वहाँ साल भर वर्फ जमी रहती है और वहुत ज्यादा सर्दी पड़ती है। वर्फ और समुद्र—समुद्र और वर्फ के सिवा यहाँ और कुछ भी नजर नहीं आता। असल मे इन्हें प्रदेश न कहकर महादेश ही कहना चाहिये। अङ्गरेजी मे उत्तर मेरु प्रदेश को Arctic और दक्षिण को Antarctic कहते हैं। दोनों मे फर्क यही है कि दक्षिण मेरु प्रदेश मे वहुत दूर तक जमीन फैली हुई है और



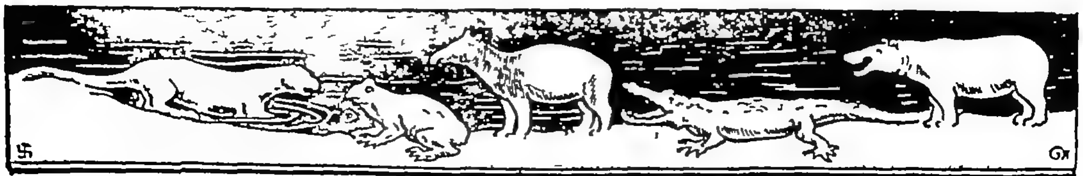


उसके चारों तरफ जल है। उत्तर मेरु मे बहुत दूर तक जल-ही-जल है और उसके चारो तरफ जमीन है। दक्षिण मेरु प्रदेश मे गर्मी मे भी बहुत ज्यादा सर्दी पड़ती है। वहाँ कोई मनुष्य नहीं रहता। जीवजन्तु भी बहुत कम पाये जाते हैं। मगर उत्तर मेरु मे एस्किमो जाति के मनुष्य रहते हैं। वहाँ किसी-किसी जगह साल मे कई महीने बर्फ गल जाती है और वहाँ घास, फूल आदि उगते हैं। सर्दी वहाँ भी खूब पड़ती है। वहाँ कई तरह के जीवजन्तु पाये जाते हैं। मन में खयाल करो कि बहुत दूर तक समुद्र-ही-समुद्र दीख पड़ता है। उसमें बर्फ के पहाड़ तैर रहे हैं। वहीं झुण्ड-के-झुण्ड सील खेलते हुए देखे जाते हैं। गर्मी मे, दक्षिण मेरु में जब सूरज की किरणें खूब तपती हैं उस समय सादी बर्फ की झिल-मिल मे, बर्फ के ऊपर लेटे हुए काले रंग के सील बहुत ही विचित्र देख पड़ते हैं। सील दक्षिण और उत्तर मेरु दोनों प्रदेशों में एक-से पाये जाते हैं। इनके दाँतों और जबड़ों को अगर तुम गौर से देखो तो तुम्हें मालूम होगा कि ये भालू और कुत्ते की जाति से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं।

सील देखने में खूब मोटा होता है। इसका सिर छोटा और पाँव का अधिक हिस्सा देह के साथ जुटा रहता है। इसके पिछले और सामने के पॉव मछली की पूँछ और डैने का काम करते हैं।

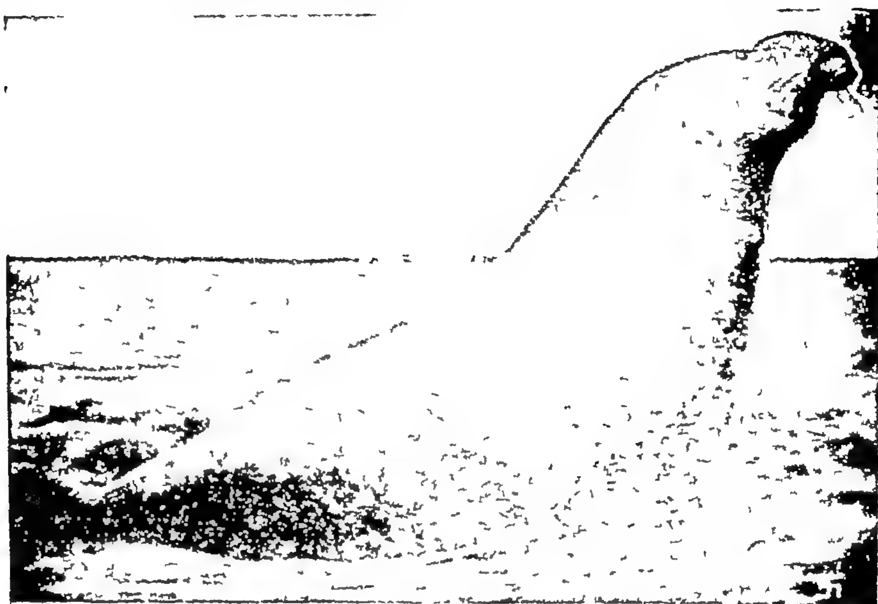
सील के कई जातियाँ होती हैं। इसकी कोई जाति लम्बाई में दो से लेकर चार हाथ और कोई बारह-तेरह हाथ तक होती है। अङ्गरेजी किताबों मे तुम जलहाथी (Sea-elephant), जलघोड़ा (Sea-horse), जलसिंह (Sea-lion)—इन सब जानवरो के बारे मे पढ़ोगे। ये सब समुद्र के ही जानवर हैं और इनके आकार-प्रकार हाथी, घोड़े और सिंह से कुछ-कुछ मिलते-जुलते हैं इसलिये ये जलहाथी, जलघोड़ा और जलसिंह कहे जाते हैं। लेकिन असल में ये सब सील जाति के ही हैं और इनके वासस्थान उत्तर और दक्षिण ध्रुव प्रदेश हैं।

सी-एलिफैंट या जलहाथी एक तरह का सील (मछली) होता है जो लम्बाई मे बीस से तीस फीट तक होता है। इसकी देह की मोटाई भी पन्द्रह से अठारह फीट तक होती है इस तरह जमीन पर के हाथी से यह आकार मे बड़ा होता है। हाथी की सूँड़ की तरह इसका थूथन लंबा होता है। यह सिर्फ





दक्षिण ध्रुव के समुद्र में पाया जाता है, लेकिन कभी-कभी दूसरे बड़े समुद्र में भी शिकार करने के लिये आ जाता है। बड़े आकार के इस सील के मुँह का अगला हिस्सा कुछ लंबा होता है जो मुँह के ऊपर झूलता रहता है। इच्छा करने पर सील इसे उलट-पुलट करके मोड सकता है। इसे हाथी के शुण्ड का एक नमूना ही समझना चाहिये। यह जब जमीन पर रहता है, बहुत धीरे-धीरे भद्दे ढंग से चलता है।



जलहाथी

जाड़े में यह किनारे आ आकाश की तरफ देखकर जोर से गरजता है। इसका गर्जन सुनकर और सब प्राणियों के होश गुम हो जाते हैं। यह जलहाथी जब पानी से निकलकर किनारे में आता है तब इसके साथ-साथ मादा भी बाहर निकल आती है। इसी समय इसके बच्चा पैदा होता है। बच्चे को सब तरह से लायक बनाने के लिये माँ-बाप कुछ समय के लिये खाना-पीना छोड़कर किनारे में ही रहते हैं। इस जाति के सील अब बहुत कम पाये जाते हैं, क्योंकि जमीन पर इसका शिकार बहुत आसानी से किया जा सकता है। नाविक लोग बंदूकों और लाठियों से इनकी हत्या कर डालते हैं।

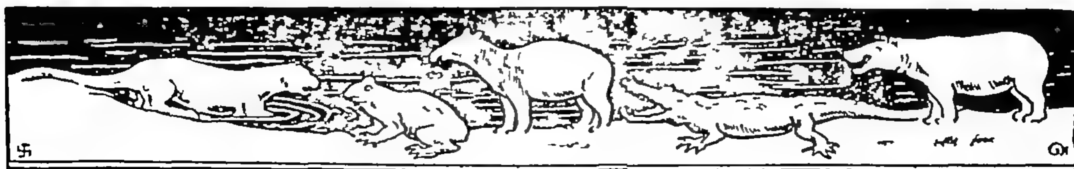




टेपिर

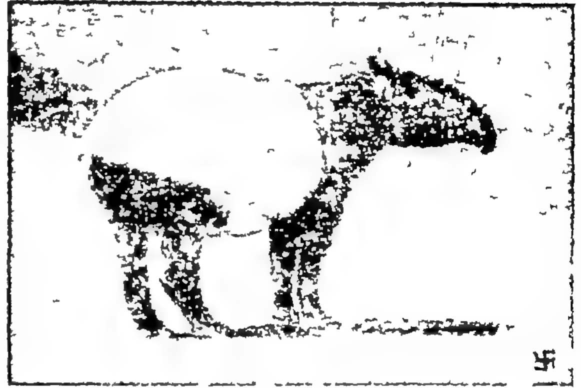
दक्षिण और मध्य अमेरिका में और एशिया के बोर्नियो, सुमात्रा, जावा आदि द्वीपो में तथा मलाया प्रदेश में टेपिर पाया जाता है। अमेरिका का टेपिर बिलकुल काला होता है; एशिया के टेपिर की पीठ और दोनो बगल कुछ सफेद और शरीर का बाकी हिस्सा काला होता है।

अमेरिका के टेपिर से एशिया का टेपिर आकार में कुछ बड़ा होता है। यह टेपिर भी देखने में जलहाथी के समान ही होता है। इसके मुँह में भी हाथी के शुण्ड के समान छोटा शुण्ड होता है; और उसके भीतर से लबालंबी छेद होता है। यह देखने मे हाथी के बच्चे के समान मालूम होता है— पाँव ठीक उसी के पाँव की तरह मोटे-मोटे। इसके सामने के पाँवो में चार और पिछले पाँवों में तीन खुर होते हैं। असल मे यह जमीन पर का जानवर है, लेकिन कीचड-सने जल में लेटे रहना पसंद करता है। इसी लिये इसका नाम जलहाथी दिया गया है। लगातार आठ-दस दिनों तक जल में





पड़ा रहना इसे अच्छा लगता है। इसमे इसे कुछ भी तकलीफ नहीं मालूम होती, साग-सब्जी, ईख, कन्दमूल आदि इसके खाद्य हैं। इसके लिये अखाद्य कुछ भी नहीं है। एक वार एक टेपिर नस की डिविया को जिसमें नस भरा हुआ था, निगल गया। हड्डी, पत्थर लोहे का टुकडा—कुछ भी इसके मुँह मे समाने से वच नहीं सकता।

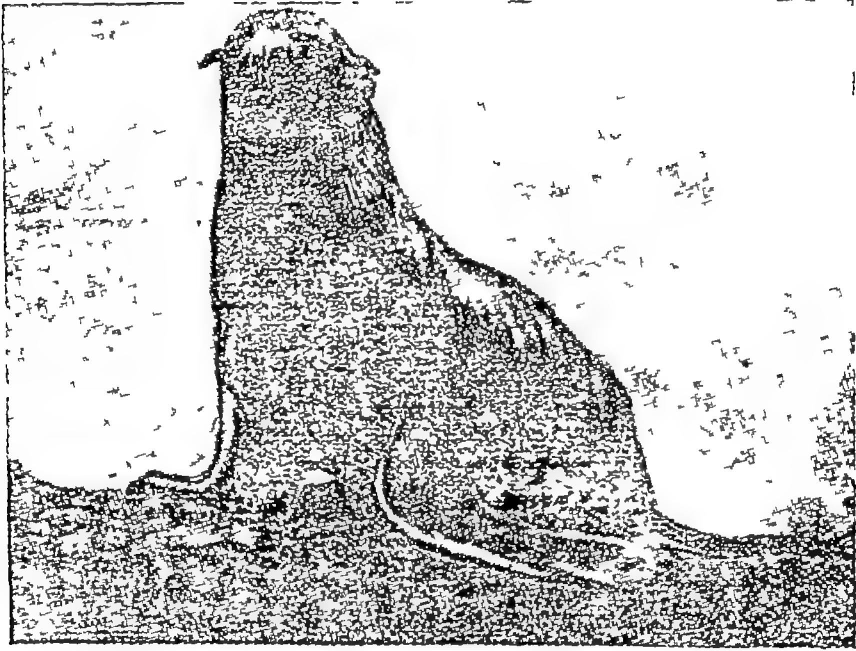


अमेरिका का टेपिर

इसके वच्चे की देह पर सादी लकीरें होती हैं। पोसने पर वच्चा पालतू वन जाता है।

टेपिर वहुत डरपोक होता है। लेकिन समय-समय पर अमेरिका के टेपिर के वारे मे ऐसी कहानियाँ सुनी जाती हैं जिनसे इसके साहस का परिचय मिलता है। अमेरिका के जग्वार की कहानी तो तुम पहले ही सुन चुके हो। यह कितना दवंग जानवर होता है! टेपिर का मांस खाना यह वहुत पसन्द करता है। कई वार ऐसा देखा गया है कि जग्वार ज्यों ही उछलकर टेपिर के ऊपर चढ वैठता है, टेपिर उसे लिये हुए किसी पत्थर या पेड़ की जड के पास चला जाता है और उसमे सटाकर उसे जोर से दवा देता है। उसका यह दवाना इतने जोर का होता है कि जग्वार की नानी मर जाती है और वहाँ से जान लेकर भागना उसके लिये सम्भव नहीं होता!





समुद्री घोड़ा या वालरस

सील की एक जाति को समुद्री घोड़ा या वालरस (Walrus) कहते हैं। इसका आकार जलहाथी से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है। सिर्फ चेहरा देखकर अगर नाम रक्खा जाय तो इसे समुद्री घोड़ा न कहकर समुद्री हाथी कहना ही ठीक होगा। हाथी के समान ही इसका रोबदार चेहरा होता है और मुँह के अन्दर से दो बड़े-बड़े दाँत निकले रहते हैं। ऊपर के जबड़े से ये दाँत निकलकर नीचे की





तरफ लटते रहते हैं। ये दाँत बिलकुल हाथी-दाँत-जैसे दो फीट तक लंबे होते हैं। ये दाँत बहुत ही तेज धारवाले होते हैं। वालरस काफी लंबा-चौड़ा और वजन में बहुत भारी होता है। एक-एक की लम्बाई बारह से पन्द्रह फीट तक होती है। देखने मे इतना भयानक होने पर भी समुद्री जानवरों में यह सबसे बढ़कर सीधा होता है। अपने लम्बे और तेज दाँतों से बर्फ मे छेद करके ऊँचे-नीचे स्थान में सहज ही चल-फिर सकता है। इसके मुँह पर बडे-बडे रोएँ मूँछ की तरह देखे जाते हैं। अपने दाँतों से यह छोटी-छोटी मछलियों और घोंघे-सीपो को भी पकडने का काम लेता है। अँगरेजी भाषा मे सी-हॉर्स या समुद्री घोड़ा कहने से जिस प्रकार हिपोपोटेमस समझा जाता है, उसी प्रकार वालरस भी।

वालरस समुद्र के नीचे बहुत गहरे जल मे रहता है। शिकारी द्वारा आक्रमण किये जाने पर यह समुद्र मे डूबकर जान बचाना चाहता है; लेकिन अगर इसे लडने के लिये मजबूर किया जाता है तो यह अपने बडे-बडे दाँतों से भयानक चोट भी पहुँचा सकता है। सील और वालरस अपने छोटे बच्चों को बहुत चाहते हैं। नर वालरस अपने बच्चों की रक्षा में अपनी जान दे देता है। शिकारी लोग पहले मादा वालरस और उसके बच्चों को मार डालते हैं, क्योकि वे जानते हैं कि नर वालरस आखिर तक सामना करते हुए लडता रहेगा।

आस्ट्रिया की राजधानी विएना के चिड़ियाखाने मे एक वालरस या समुद्री घोडा है जिसकी बुद्धिमत्ता की बात सुनकर तुम आश्चर्य करोगे। उसका नाम "असकर" रक्खा गया है। उसका रक्षक जब 'असकर', 'असकर' कहकर पुकारता है तब लोग समझते हैं कि वह असकर नाम के किसी आदमी को पुकार रहा है। लेकिन आदमी के बदले पानी के गड्ढे से एक समुद्री घोडा निकलकर सामने हाजिर होता है। रक्षक हुक्म देता है—"अपना टेबुल लाओ।" हुक्म पाते ही असकर एक छोटा टेबुल ले आता है और उसके ऊपर चायदानी, प्याला आदि सजकर रख देता है। चाय पीने के बाद रक्षक हुक्म देता है, टेबुल, चायदानी, प्याला सब पानी मे फेंक दो। वह सब-कुछ पानी मे फेंक देता है। फिर हुक्म होता है—'प्याला ले आओ'। पानी मे डूबकर वह प्याला ले आता है। 'चाय-





दानी ले आओ।' चायदानी ले आता है। 'टेबुल लाओ,' टेबुल भी ले आता है। इस तरह एक-एक करके सब चीजों को पानी से निकाल लाता है। अन्त में रक्षक ने कहा—"मेरे लिये हाथ धोने का पानी ले आओ।" हुक्म पाते ही वह एक टिन के गमले को जल मे फेंककर उसे अपने सिर से ठेलते हुए उसे लेकर हाजिर हो जाता है।



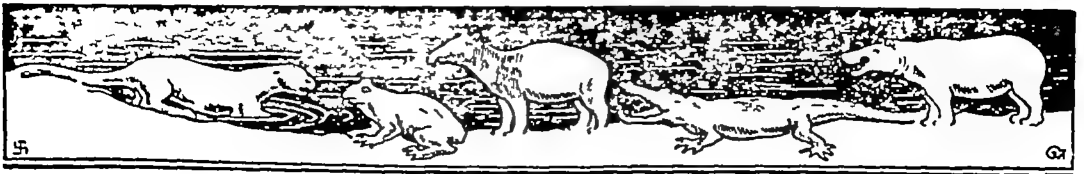
जलसिंह

जलसिंह भी साधारण सील मछली के समान ही होता है। इसके दो कान होते हैं और डैने की तरह जो दो पाँव होते हैं वे सील के डैने से अधिक चौडे और लबे होते हैं।

जलसिंह बडी फुर्ती से पानी के भीतर दौड़-धूप कर सकता है। इसकी गर्दन पर सिंह के समान ही पतला केसर होता है। इसकी चाल-ढाल देखकर सिंह की याद आ जाती है, इसीलिये इसका नाम जलसिंह रक्खा गया है। जलसिंह आकार में जलहाथी और वालरस से बहुत छोटा होता है। लेकिन जोर में कम नहीं होता और शिकार करने में भी बडा उस्ताद होता है।

सील मछली और जलहाथी से इसमें एक फर्क यह देखा जाता है कि सील मछली और जलहाथी पानी से निकलकर अक्सर किनारे आ जाते हैं। खासकर जब ज्यादा सर्दी पड़ती है उस समय ये किनारे मे आकर धूप तापते हैं; लेकिन जलसिंह ऐसा नहीं करता। यदि यह पानी से वाहर निकलता भी है तो किनारे में न आकर समुद्र के बीच मे ही किसी चट्टान या पहाड़ पर वैठा रहता है—जहाँ मनुष्य नहीं पहुँच सकता। वहाँ भी एक साथ वहुत समय तक यह नहीं देखा जाता। इसलिये जलसिंह को लोग वहुत कम देख पाते हैं।

सील पाल-पोसकर पालतू भी वनाया जा सकता है। पालतू वन जाने पर यह मनुष्य के





साथ किस तरह हिलमिल जाता है, इसकी कहानियाँ यदि तुम सुनोगे तो चकित होगे। विलायत मे एक साहब ने एक सील पाल रक्खा था। वह ठीक कुत्ते की तरह घर के बच्चो के साथ खेला करता था। अपने मालिक से वह इतना हिलमिल गया था कि मालिक उसे अपनी पीठ पर चढा लेता और दुलार करके उसके मुँह को चूमता था। इस तरह बार-बार चूमे जाने से वह इतना ढीठ हो गया था कि जभी मालिक को देखता, उसके सामने अपना सिर ऊँचा करके मुँह बढा देता।

सील के बारे मे एक और कहानी सुनी गई है। जिस आदमी ने उस सील को पाल रक्खा था उसके मुहल्ले मे एक बार महामारी फैली। इस महामारी मे बहुत से लोग मरने लगे थे। महामारी के भय से घर के मालिक ने एक ओझे को बुलवाया। पहले तो उस ओझे ने तन्त्र-मन्त्र की बहुत सी क्रियाएँ की, लेकिन उससे महामारी बन्द नहीं हुई। तब कोई उपाय न देख उसने सील को देखकर कहा—"इस कुलच्छन जानवर को हटाये बिना महामारी बन्द नहीं हो सकती।" घर का मालिक बेचारा करता ही क्या, उसने डरते-डरते सील को समुद्र मे फेंक दिया।

उस दिन के लिये तो यह बला टल गई, लेकिन दूसरे दिन शाम होते-होते सील वहाँ हाजिर हो गया। अपने मालिक और घर के दूसरे लोगों को देखकर वह मारे खुशी के सबके पाँवों के पास लोटने लगा। घर के बच्चे भी उसे देखकर आनन्द से फूले नहीं समाते थे।

लेकिन घर के मालिक की चिन्ता दूर नहीं हुई। उसने फिर उस ओझे को बुला भेजा ओझे ने आकर कहा,—"इस बला को दूर करना ही होगा। एक काम करो। सील की दोनों आँखों को फोड डालो और तब उसे समुद्र में फेंक आओ। ऐसा करने पर वह फिर लौटकर नहीं आयगा।" महामारी के डर से वह आदमी यह निठुर काम करने के लिये भी राजी हो गया। सील को अन्धा करके वह समुद्र मे फेंक आया। इसके बाद सात दिन बीत चले। बेचारे सील की कोई खबर नहीं ली गई। आठवें दिन रात में बडे जोर की झडी लगी। जिस समय जोर की हवा बह रही थी और साथ-साथ पानी बरस रहा था उस समय ऐसा मालूम हुआ कि बाहर कोई रो रहा है। पानी कुछ कम होने पर देखा गया कि वही सील सीढी के ऊपर मरा पडा है।





कितने आश्चर्य का प्रेम ! जिस मालिक ने उसकी आँखे फोड डालीं उस मालिक को और अपने खेलकूद के संगियों को वह नहीं भूला। अन्धा होने पर भी वह किसी तरह टटोलते-टटोलते वहाँ पहुँच गया और तब उसके प्राण छूटे !

ऊपर जिन सब जानवरों का हाल तुम्हें बताया गया है, वे देखने में जितने भयानक मालूम होते हैं, उनका स्वभाव उतना भयानक नहीं है। वे मनुष्य के हाथो से बराबर घायल होते हैं। एक वालरस को छोडकर और सब तो मनुष्य को देखते ही भाग जाते हैं। यह पहले ही कहा जा चुका है कि जलहाथी अपने बच्चों को लेकर समुद्र के किनारे आ जाते हैं और वहाँ एक-दो दिन नहीं बल्कि महीना-डेढ महीना तक अड्डा जमाये रहते हैं। जबतक उनके बच्चे अच्छी तरह चलने-फिरने और तैरने लायक नहीं होते तब तक वे किनारा नहीं छोडते।

इसी समय समुद्र के किनारे रहनेवाले लोग झुण्ड बाँधकर लाठियों और बर्छों के साथ उनपर चढ़ाई करते हैं और छोटे-बडे जलहाथियों का शिकार करके अपने घर ले जाते हैं। जलहाथी और सील का मास तो खाते ही हैं, इसके अलावा उनके चमड़े से भी बहुत काम लेते हैं। उस देश की स्त्रियों में सील के चमड़े की पोशाक की कदर बहुत ज्यादा है। उत्तर ध्रुव प्रदेश में एस्किमो जाति के लोग भोजन, कपड़े, कुत्ते के भोजन और तेल के लिये सील पर ही भरोसा करते हैं। उसके चमड़े से वे जाड़े मे ओढने के लिये कपडा और बिछावन बनाते हैं और तेल को पत्थर के चिराग में जलाते हैं। जहाज में भर-भरकर सील का चमडा और तेल वहाँ से दूर देशों को चालान किया जाता है।

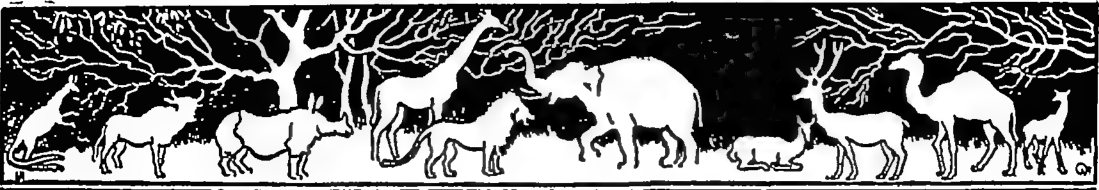
ऊँट की तरह सील भी अपने नथनो को मजबूती से बंद कर सकता है जिससे बाहर की कोई चीज उसमें घुसने न पावे। जब वह पानी के अन्दर रहता है तब ऐसा करना उसके लिये जरूरी होता है। सील पानी के नीचे बहुत देर तक बिना साँस लिये रह सकता है। एक और ताज्जुब की बात यह है कि पानी मे रहते हुए सील गर्चे बहुत मोटा हो जाता है, लेकिन एक साथ ही तीन-तीन महीने तक वह बिना कुछ खाये रह सकता है। वालरस हमारे देश के सियार के समान ही चालाक होता है। सियार की तरह वह भी सब-कुछ-खा लेता है—सडा-गला कुछ भी नहीं छोडता।



ह्वेल

अब तक जिन जानवरों का हाल तुम्हें बताया गया है उनके बारे में तुम कहोगे कि ये सब तो छोटे-छोटे जानवर हैं। उतने बड़े जानवर अब कहाँ पाये जाते हैं, जिनकी कहानियाँ तुम पुराणों में सुना करते हो? लेकिन तुम्हें यह जानकर अचम्भा होगा कि अब भी एक तरह का



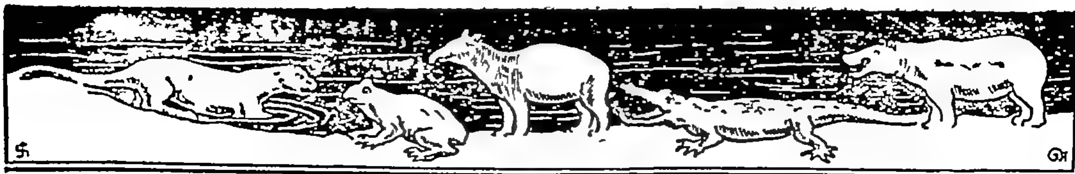


ऐसा जानवर पाया जाता है जो आकार-प्रकार में आज भी संसार के सब जानवरों से बड़ा होता है। इतना ही नहीं, बल्कि पुराने जमाने में भी इतना बड़ा जानवर बहुत कम ही पाया जाता था और वह जानवर है ह्वेल। ह्वेल का नाम सुनते ही तुम झट कह उठोगे—ह्वेल तो एक किस्म की मछली है। हाँ, सब लोग ह्वेल को मछली समझते हैं। लेकिन इस विद्या के जाननेवाले पण्डितों ने बहुत कुछ छानबीन करके बताया है कि ह्वेल मछली नहीं है।

अब, ह्वेल मछली क्यों नहीं है, यह तुम्हें बताता हूँ। ह्वेल मछली की तरह पानी का जीव है। यह समुद्र छोड़कर और कहीं नहीं पाया जाता। लेकिन जिस प्रकार मछली पानी के भीतर रह-कर साँस ले सकती है, ह्वेल वैसा नहीं कर सकता। साँस लेने और छोड़ने के लिये इसे पानी के ऊपर आना पड़ता है। एक बार डुबकी लगाने पर यह घंटा-डेढ़-घंटा तक पानी के अन्दर रह रकता है, इससे ज्यादा देर नहीं। साँस लेने और छोड़ने के लिये इसे पानी के ऊपर आना पड़ता है। मछली और ह्वेल में दूसरा फर्क यह है कि यह हाथी आदि जानवरों की तरह अपने बच्चों को दूध पिलाता है।

ह्वेल का खून ठंढा नहीं, गर्म होता है। जिन सब देशों में बहुत बर्फ गिरती है वहीं के समुद्रों में ह्वेल का जन्म होता है। इसी लिये भगवान् ने बर्फ से ढके हुए जल की सर्दी से इसका बचाव करने के लिये उपाय भी कर दिया है। इसके चमड़े के नीचे चर्बी की चिकनी तहें ठीक उसी तरह की होती हैं जिस तरह उस देश के लोग सर्दी से बचने के लिये लंबा और गर्म कोट पहनते हैं। चर्बी का यह कोट ही ह्वेल को बर्फ की सर्दी से बचाता है और देह को गर्म रखता है।

ह्वेल के दो भेद होते हैं—दाँतवाला और बिना दाँतवाला। दाँतवाला ह्वेल सिर्फ छोटी-छोटी मछलियों और केंकड़ों से ही अपना पेट नहीं भरता, बल्कि यह दूसरे ह्वेल और समुद्री जन्तुओं को भी चट कर जाता है। इसके सिर पर दो बड़े-बड़े गड्ढे होते हैं जिनमें तेल की तरह मोम होता है। इस मोम से बत्तियाँ बनाई जाती हैं। ह्वेल के जबड़े की हड्डी बहुत काम की होती है।





ह्वेल का मुँह जितना बडा होता है उतना बडा मुँह संसार के और किसी जीवजन्तु का नहीं होता। जब यह अपना जबडा खोलता है, ऐसा मालूम होता है मानो इसका विशाल सिर दो हिस्सों में फट गया हो। इसके जबडे की लंबाई लगभग १६ फीट होती है और जब यह अपने दोनो जबडों को खोलता है, ऊपर से नीचे लगभग १२ फीट तक वह एक खंदक-जैसा मालूम पडता है। इसके इतने बड़े मुँह मे एक छोटी डोंगी सवार-समेत मजे मे घुस जा सकती है!

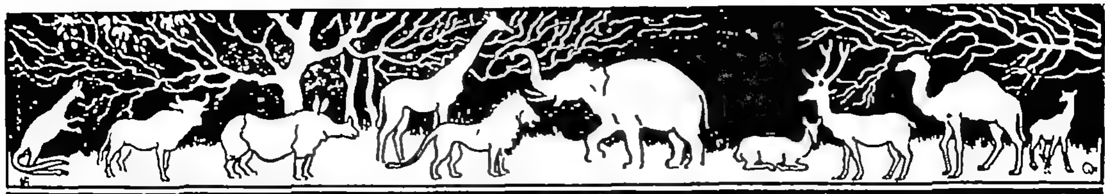
ह्वेल पानी के ऊपर आकर साँस छोडता है। इसकी नाक कहाँ होती है, जानते हो? मनुष्य की तरह चेहरे के ऊपर नहीं, बल्कि ठीक सिर के ऊपर एक छेद होता है। उसी से फुहारे की तरह यह जल छोड़ता हुआ तैरता रहता है। इससे यह मत समझो कि इस छेद से पानी भी अन्दर घुस जाता है। जल में डुबकी लगाते ही यह छेद बंद हो जाता है जिससे पानी अन्दर घुसने नहीं पाता।

ह्वेल आकार मे कितना बडा होता है? यो आमतौर से यह ६० से ७० फीट तक लंबा और घेराई में ३० से ४० फीट तक होता है। लेकिन एक सौ फीट तक लम्बा ह्वेल भी देखा गया है। कुछ समय पहले विलायत के पास उत्तर समुद्र मे एक ह्वेल पकडा गया था जो ६८ फीट लंबा था और वजन मे सात हजार मन से भी कुछ ज्यादा!

बहुत वर्ष पहले की बात है, इंगलैंड मे एक मरा हुआ ह्वेल दिखलाया गया था जो १३२ फीट लंबा और वजन में २०० टन यानी लगभग ६ हजार मन था! इसका सिर २० फीट लंबा था और एक साथ ही १५२ छोटे-छोटे बच्चे इसके खुले जबडे मे खड़े हो सकते थे! दूसरा ह्वेल, जो लंदन मे दिखलाया गया था, वजन में सात हजार मन था। इसका सिर २२ फीट लंबा था और पीठ की हड्डी ७० फीट लंबी थी। यह एक हजार वर्ष का पुराना था।

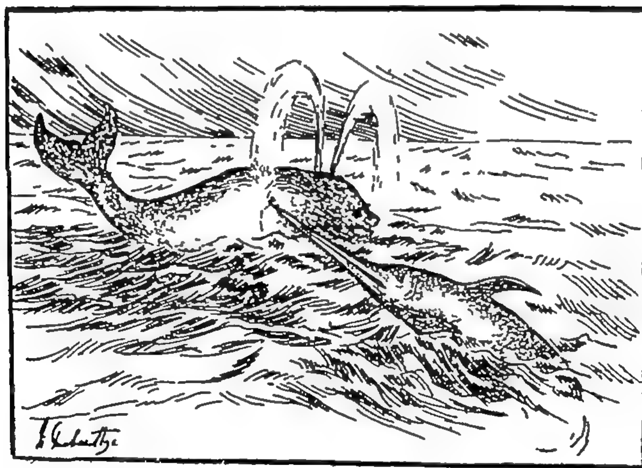
एक बार एक ह्वेल लन्दन की टेम्स नदी मे पकडा गया था। कई दिनो के बाद एक आदमी इस ह्वेल को देखने गया। यह देखने के लिये कि इसके अन्दर क्या है दो लंबे बाँसो से ह्वेल का मुँह खोला गया। वह आदमी ह्वेल की जीभ पर से होकर भीतर घुसा। उसकी जीभ बहुत मुलायम हो

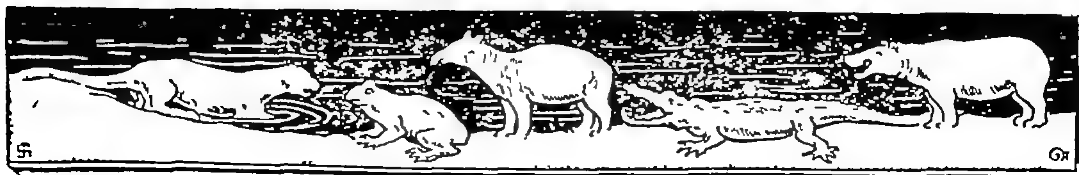




गई थी जिससे उसपर चलते हुए वह आदमी धीरे-धीरे नीचे धँसता गया और आखिर उसके पेट में समा गया। तब दूसरे लोग दौड़कर वहाँ आये और एक दूसरा बाँस उसके मुँह में घुसाया गया जिसको पकड़े हुए वह बाहर खींच लिया गया। यदि इस तरह वह नहीं खींचा जाता तो न मालूम वह कहाँ चला जाता और उसकी क्या गति होती! इसी से तुम समझ सकते हो कि ह्वेल कितना बड़ा होता है।

रामायण की पोथी में यह ह्वेल तिमि कहा गया है। उस समय की तिमि ही इस समय ह्वेल कही जाती है।







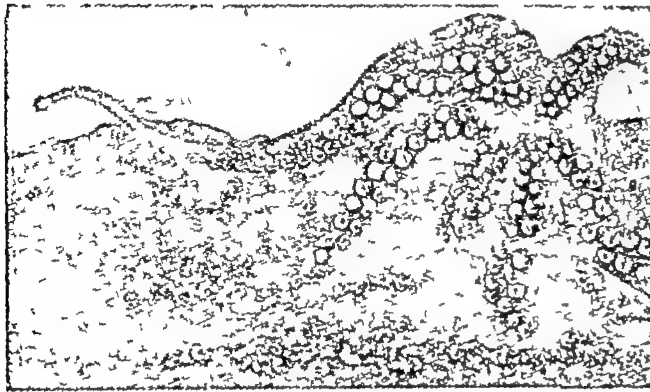
अक्टोपस

समुद्र मे जो जीवजन्तु पाये जाते हैं उनमे अक्टोपस का आकार-प्रकार बड़ा अद्भुत होता है। यह यूरोप, पश्चिम महासागर तथा प्रशान्त महासागर में पाया जाता है। यह भयंकर जीव है। कहानियों में इसे 'जलराक्षस' कहते हैं और सचमुच यह है भी ऐसा ही। यह समुद्र के तल में पत्थर की दरार में छिपकर या घास-फूस-लता से ढँके हुए पत्थरो पर बैठकर शिकार की ताक मे रहता है। शिकार पकडने मे यह बडा ही चालाक होता है। इसके सिर मे आठ बाँहें





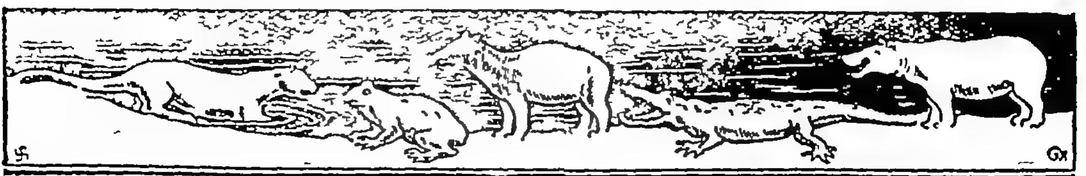
होती हैं। ये बाँहे हाथी के सूँड की तरह जबरदस्त और साँप की पूँछ की तरह पेंच कसने में मजबूत होती हैं। इसलिये शिकार एक बार इसके चंगुल मे फँस जाने पर फिर किसी तरह छूट नहीं सकता। ज्योही कोई मछली या इसी तरह का कोई प्राणी इसके पास होकर गुजरता है, इसकी एक लंबी बाँह तीर के समान छूटकर शिकार को आगे से ही घेर लेती है। तब अक्टोपस उसे खींचकर अपने मुँह के पास ले आता है और फिर तोते के समान अपनी चोंच से उसे छिन्न-भिन्न कर डालता है। अक्टोपस १० फीट से २८ फीट तक लंबा देखा गया है। इसकी बाँहे ५ फीट तक लम्बी होती है। मादा अक्टोपस ४० हजार से ५० हजार तक अंडे देती हैं। कभी-कभी तो २—३ लाख तक अडे देती भी देखी गई हैं। लेकिन इनमे ५—७ ही जीते रहकर बड़े हो पाते हैं। बाकी बच्चों को मछलियाँ खा जाती हैं। यदि यह बात नहीं होती तो क्या होता, जानते हो? अबतक समुद्र में सिर्फ अक्टोपस-ही-अक्टोपस होते और छोटी मछलियों के लिये तो वहाँ कोई जगह ही नहीं होती। इसका नाम अक्टोपस इसलिये पड़ा है इसके आठ पाँव या बाँहे होती हैं जो इसके सिर मे गड़ी हुई रहती हैं।



मादा अक्टोपस अपने लाखो अडो को से रही है

अक्टोपस बिना छेड़े मनुष्य पर हमला नही करता। लेकिन जब यह चोट कर बैठता है तब बड़ा भयानक शत्रु बन जाता हैं। समुद्र का यह राक्षस १५ से २५ मिनटों के भीतर मनुष्य की देह के सारे मास और खून को चट कर जा सकता है।

अमेरिका के क्रेग साहब गहरे समुद्र मे डुबकी लगाकर तल तक पहुँच जाने में उस्ताद हैं।





एक बार जब वे समुद्र के नीचे पहुँचकर इधर-उधर घूम फिर रहे थे, एक अक्टोपस के चंगुल में फँसकर उन्हें लड़ाई करनी पड़ी थी। उन्होंने अपनी इस लड़ाई का जो हाल लिखा है वह तुम्हें सुनाता हूँ। क्रेग साहब ने लिखा है—"मैं समुद्र में ५० फीट नीचे बायस्कोप के लिये फोटो ले रहा था। समुद्र-तल में एक चट्टान में मुझे गहरी काली सूराख दिखाई पड़ी। यह सूराख लगभग २० फीट गहरी थी और इसकी चौड़ाई ४० फीट थी। मैं बड़ी सावधानी के साथ इस सूराख में घुसने लगा।



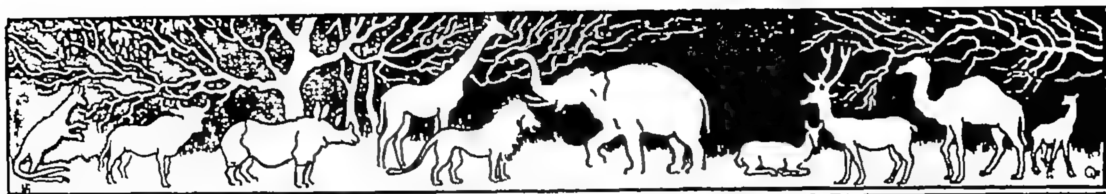
मादा अक्टोपस अपने अंडों पर पानी छिड़क रही है

एक चट्टान के ऊपर पाँव रखकर जब मैंने नीचे की ओर झाँका, तब मुझे दो बड़े-बड़े अक्टोपस दिखाई पड़े। मैं कुछ मिनटों तक वहीं चुपचाप खड़ा रहा। इतने में उन दो जानवरों में से एक अपना पाँव फैलाकर मेरे पाँव को छूने लगा। मैं अपने दोनों हाथों को बगल में दाबे उसी तरह खड़ा रहा। एक-दो मिनट के बाद वह अक्टोपस वहाँ से हटकर अपने साथी से मिलने चला गया और मैं जल्दी से ऊपर जाने के लिये तैयार होने लगा। मैं अभी उसकी पहुँच से बाहर नहीं हो पाया था कि उसने अपनी एक लंबी बाँह बड़ी तेजी से फैलाकर



कटल-फिश





के अन्दर रखकर भी नथनों से साँस ले सकता है। इसके दाँत बहुत ही पैने होते हैं। इसकी देह काँटों से ढँकी रहती है जिससे पानी या कीचड में जब यह लेटा रहता है, दूर से लकड़ी के कुंदे-जैसा दीख पडता है। कभी-कभी पानी मे एक साथ ही बहुत-से घडियाल इस तरह तैरते रहते हैं कि अलग से मालूम होता है, मानों लकडी का बेडा तैर रहा हो। घडियाल अपने शिकार को जब पकडता है, उसके मास को चीर-फाडकर सीधे निगल जाता है। निगलने के पहले नहीं चबाता, जिससे इसके पेट में खाना जल्द हजम नहीं होता, और जब तक इसके पेट का खाना हजम नहीं होता, यह अपने नथनों को पानी से बाहर किये पानी मे तैरता रहता है। इसलिये तुरत के मारे आदमी या जानवर के मास से यह सडे-गले मास को ज्यादा पसन्द करता है। घड़ियाल जब भूखा नहीं होता, यह आदमी या जानवर को पानी के अन्दर खींचकर कीचड़ के नीचे गाड़ देता है जिससे उसका मास सड़-गल जाने पर यह आसानी से उसे निगल सके।

शिकारियों ने लिखा है कि जो घड़ियाल की इस आदत को जानता है वह कई बार इसके चंगुल से बचकर निकल भागा है। घड़ियाल से पकड़े जाने पर उसने दम साधकर इस तरह बहाना कर लिया है, मानो वह मुर्दा हो। घडियाल भी उस आदमी को मुर्दा समझकर कीचड़ के नीचे गाड़ देता है और वहाँ से चल देता है। इस बीच में गडा हुआ आदमी अपने ऊपर का कीचड़ हटाकर वहाँ से निकल भागता है। इस तरह नदी में बहुत-से मृत जानवरो को, जो फेंक दिये जाते हैं, घडियाल निगलकर नदी के पानी को जहरीला नहीं होने देता।

ऊपर कहा गया है कि घडियाल जब भरपेट खा लेता है, आराम से लेटे रहना पसंद करता है। उस समय यह कीचड के नीचे भी आराम से पडा रहता है। एक बार एक फौज के सिपाही ने रात में इस तरह लेटे हुए एक घडियाल के ऊपर ही खीमा गाड दिया था। रात में जब वह सोने चला तब वहाँ की धरती उसे हिलती हुई-सी मालूम हुई। उसने समझा कि भूकम्प हो रहा है। फिर जब हिलना बंद हो गया तब वह आराम से सो गया। भोर में जब वह सोकर उठा





तब उसे पता चला कि उसने एक घड़ियाल के ऊपर खीमा गाड़ दिया था जो वहाँ जमीन के नीचे छिपा हुआ था !

घड़ियाल सैकड़ों वर्ष तक जिन्दा रह सकता है। जिन्दा रहने की हालत में यह बराबर बढ़ता ही रहता है। कोई-कोई घड़ियाल लंबाई में तीस फीट तक देखा गया है। इसका चमड़ा बड़ा कीमती होता है। उससे जूता, सूटकेश आदि बनते हैं।

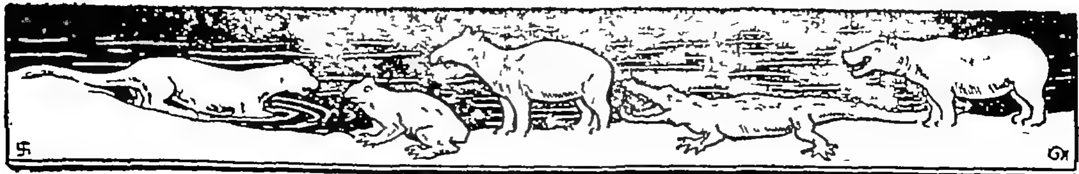
अब तुम्हें घड़ियाल की अमीरी की बात सुनाता हूँ। अफ्रीका के उत्तर भाग में नील नदी में बड़े-बड़े घड़ियाल पाये जाते हैं। जाड़े के दिनों में घड़ियाल पानी से निकलकर धूप में बालू पर मुँह खोले लेटा रहता है। दूर से देखो तो मालूम होगा, मानो कोई बहुत बड़ा और मोटा पेड़ हो। इसके जबड़ों और दाँतों को देखकर बड़े-बड़े पहलवानों की छाती भी काँप उठती है। लेकिन उस देश में एक चिड़िया होती है जो घड़ियाल के मुँह के भीतर घुस जाने में भी कुछ भय नहीं पाती। सिर्फ मुँह के भीतर ही नहीं—बल्कि गले के भीतर भी घुस जाती है। वह भय क्यों नहीं पाती ? कारण यह है कि वह घड़ियाल की नौकरानी होती है—मुँह और गले के अन्दर घुसकर सफाई का काम करती है।

घड़ियाल बड़ी-बड़ी मछलियों और जानवरों को निगल जाता है। पकड़ने पर आदमी को भी नहीं छोड़ता। इसलिये इसके जबड़ों में काँटे और हड्डियाँ तथा दाँतों के बीच मांस के टुकड़े अटके रहते हैं। बड़े-बड़े जोंक और कीड़े-मकोड़े भी घड़ियाल के मसूड़ों में अड्डा जमाये रहते हैं—वहाँ का खून चूसने के लिये ! इसलिये बेचारा पानी से निकल किनारे में बालू पर आकर बैठ जाता है और घंटों मुँह खोले रहता है। इसी समय वह चिड़िया भी वहाँ पहुँच जाती है और मजे में इसके मुँह और गले के अन्दर घुसकर कीड़े-मकोड़ों और मांस के टुकड़ों को निकाल-निकालकर खा जाती है और काँटा, हड्डी आदि को निकालकर फेंक देती है। इस तरह कई चिड़ियें एक साथ ही बेधड़क होकर घड़ियाल के मुँह के अन्दर बार-बार घुसकर और बाहर निकलकर सफाई का काम करती हैं। और, घड़ियाल ? वह तो मौज से बैठा रहता है !



जेब्रा

घोड़े और गधे की जाति का ही जेब्रा होता है। घोडे की तरह इसके हर पाँव में एक खुर होता है यानी इसके खुर फटे नहीं होते। दक्खिन अफ्रिका के पहाडी जंगलो के सिवा जेब्रा और कहीं नहीं पाया जाता। इसकी देह पर सफेद और काली लकीरें होती हैं जिससे यह देखने मे बड़ा





सुन्दर मालूम पड़ता है। लेकिन घोड़े और गधे की तरह यह सहज ही पोस नहीं मानता। इसके बच्चे को पकड़कर अगर पालतू बनाने की कोशिश करें तो भी यह घोड़े या गधे की तरह पालतू नहीं बनता। कभी-कभी सर्कस कंपनियों में जेब्रा को गाड़ी में जोतकर उससे गाड़ी खिंचवाने की कोशिश की गई है, लेकिन जेब्रा कूद-फाँदकर और लगाम तोड़कर काबू में बाहर हो गया है।

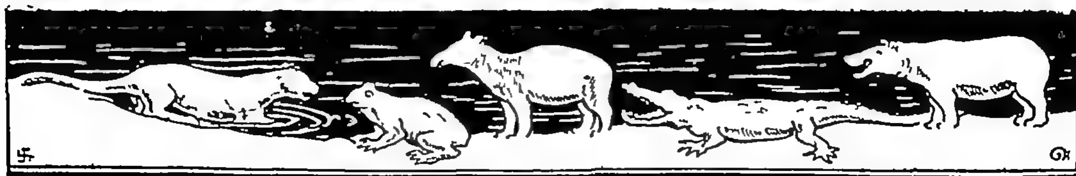
कलकत्ते के अलीपुर के चिड़ियाखाने में एक जेब्रा था जो किसी के काबू में नहीं रहता था। एक बार अफ्रिका से एक नया सिंह आया और उसके साथ अफ्रिका का एक आदमी भी आया। बड़े-बड़े भयानक जानवरों को वश करने में वह आदमी उस्ताद समझा जाता था। जिन सब बाघ-सिंहों के पिंजड़ों के पास जाने का किसी को साहस भी नहीं होता था वह वहाँ जाकर लोहे के सीकचों के अंदर हाथ घुसाकर जानवरों को पुचकारता और उनके सिर थपथपाता। दो-तीन दिनों के अंदर ही उस आदमी ने जेब्रा के ऊपर अपना जादू डालकर उसे बिलकुल वश में कर लिया। एक दिन जब लोगों ने उसे जेब्रा के घेरे के अंदर घुसते देखा तो सबने समझा कि जेब्रा उसका खून किये बिना नहीं छोड़ेगा। लेकिन लोग यह देखकर दंग रह गये कि जेब्रा बिलकुल पालतू भेंड़ की तरह वहाँ चुपचाप खड़ा था और वह आदमी उसके सिर और गले पर हाथ फेर रहा था। मानो, वह आदमी उसका बहुत दिनों का जानपहचानी हो।





जंगली सूअर

संसार के सब देशों में सूअर पाया जाता है। पालतू सूअर मनुष्य से कितना हिलमिल जाता है और वह कितने काम का होता है, यह तो तुमने देखा ही होगा। लेकिन जंगली सूअर को अगर तुम देखो तो जान पड़ेगा कि इसके समान भयानक जानवर बहुत कम ही होंगे। जंगली सूअर के दो बड़े-बड़े दाँत हाथी के दाँत की तरह निकले रहते हैं। ये दाँत जितने मजबूत होते हैं, उतने ही तेज भी। जंगली सूअर इतना जबरदस्त होता है तथा इसका चमड़ा इतना कड़ा और खुरदरा होता है कि यह मनुष्य, घोड़े यहाँ तक कि सिंह या बाघ पर भी चोट किये बिना नहीं रहता। हमारे देश में





कुछ समय पहले अँगरेज लोग बडे शौक से घोड़े पर सवार होकर जंगली सूअर का शिकार करते थे। अब भी बाढ के समय, जब जंगलो मे पानी भर जाता है, कभी-कभी जंगली सूअर भागकर देहातों में चला आता है और लोगों को घायल कर देता है।

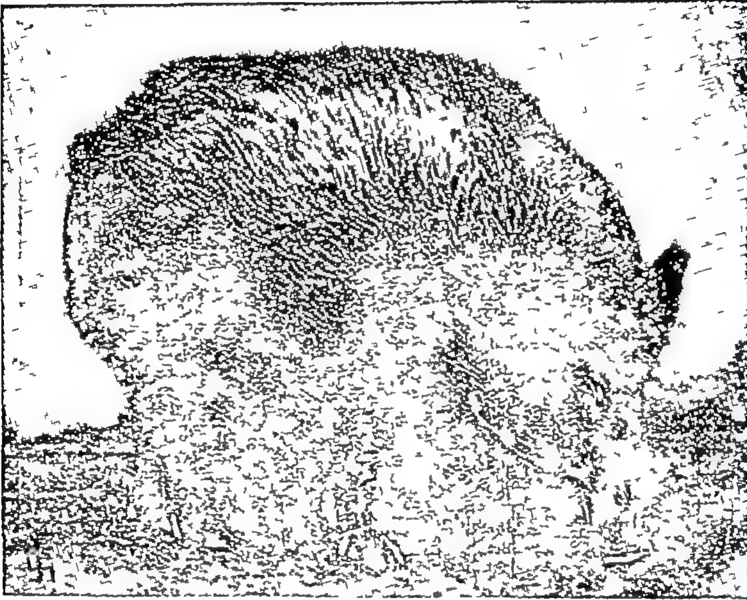
अफ्रिका मे एक तरह का जगली सूअर पाया जाता है जिसे 'वार्ट हॉग' कहते हैं। इससे



वेवग्सा जाति का जगली सूअर

बढ़कर बदसूरत जानवर शायद ही कोई हो। यह बहुत छोटा भी नहीं होता। वजन मे ढाई मन या इससे कुछ ज्यादा ही होता है। इसकी पीठ और सिर पर केसर की तरह लंबे-लंबे बाल होते हैं, लेकिन देह के चमड़े पर रोएँ नहीं होते। हाथी के दाँत की तरह दो जोडे टेढ़े दाँत इसके मुँह के दोनो तरफ निकले रहते हैं। यह रात मे अपने आहार की खोज मे निकलता है। पेडों की जड छोडकर और कुछ नहीं खाता।

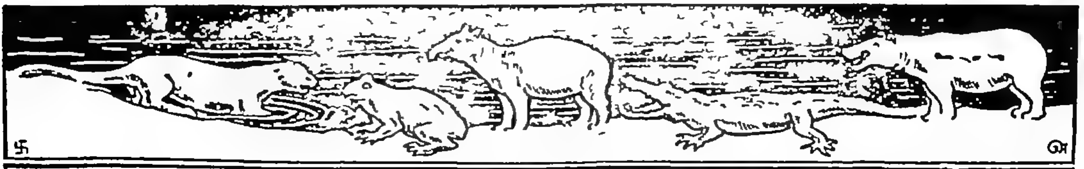




वार्ट हौग

बाघ और सूअर में भिड़न्त

एक शिकारी ने बाघ और जंगली सूअर के बीच भिडन्त होने का जो हाल लिखा है वह तुम्हें सुनाता हूँ—"सुन्दरवन मे नदी के किनारे एक सूअर का बच्चा चर रहा था। इसी समय एक बाघ कहीं से आकर सूअर के बच्चे के ऊपर उछल पडा। बाघ अभी उछला ही था कि पीछे से तीर की तरह छूटता हुआ एक बडा-सा जंगली सूअर आ पहुँचा। जब बाघ और सूअर आमने-सामने हुए, दोनों बड़े जोर से गरज-गरजकर पैतरेबाजियाँ दिखाने लगे। दोनो का गरजना अभी बंद भी नहीं हुआ था कि इतने मे बाघ उछलकर सूअर पर जा पडा और सूअर ने अपने दोनो तेज दाँतों



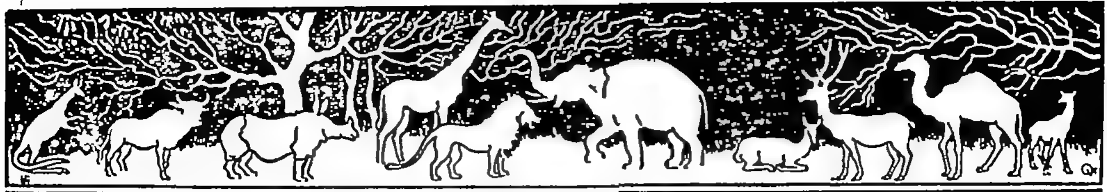


को बाघ के पेट के अंदर घुसेड दिया। अब बाघ अपने नखो और पंजो से सूअर को बुरी तरह घायल करने लगा, लेकिन किसी तरह भी वह उन दाँतों को अपने पेट से छुडा नहीं सका। एक ओर बाघ जान पर खेलकर सूअर के साथ लड रहा है और दूसरी ओर सूअर अपने दाँतों से उसके पेट को चीरफाड रहा है। इसी तरह दो-तीन मिनट तक दोनों मे गुत्थमगुत्थी चलती रही, फिर बाघ थककर वहीं लेट गया और उसमे हिलने-डुलने की भी ताकत नहीं रह गई। कुछ क्षणो मे ही बाघ मर गया। लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिये कि बाघ और सूअर की लडाई मे हमेशा सूअर ही जीतता है। एक दूसरे शिकारी ने बाघ और सूअर की लडाई का जो हाल लिखा है उसमें दोनों का जोड़ बराबर रहा। वह कहानी यों है—जेम्स इंगलिश नाम का एक गोरा साहब अपनी नील की कोठी की देखभाल कर रहा था। इतने में उसको खबर लगी कि कोठी से कुछ दूर पर बाघ ने एक गाय मारी है। वहाँ जाकर देखा तो हाल की मारी गई गाय की लाश मिली। करीब ही बाघ के पद-चिह्न भी मिले। बस, क्या था? वहीं एक गढा खोदा गया। काँटों और लकडो से वह घेर दिया गया और उसमें साहब अपने गुमाश्ते के साथ बैठ गया। कुछ देर के बाद गडे की तरफ अलमस्त चाल से आता हुआ एक सूअर दिखाई पडा। साहब ने बंदूक उठाकर जैसे ही उसकी छाती का निशाना साधा वैसे ही सूअर ने अपना सिर ऊपर उठाया और उसका आकार साफ-साफ दिखाई पडने लगा। इसी समय एकाएक जंगल से गुर्राहट और गर्जन सुनाई पडा। सूअर चौकन्ना-सा होकर लापरवाही से खडा था। तुरन्त ही एक जबरदस्त पट्ठा बाघ उस अखाडे मे आ कूदा। अब दोनों लडाके



वार्ट-हॉग—एक बदसूरत जानवर!





पैतरेबाजियाँ दिखाने लगे। बाघ घात लगाकर कभी छपकता और कभी सूअर के चारों ओर रेंगता-सा चलता कि किसी तरह पीछे से उसपर हमला करे। सूअर भी उसके आक्रमण का खयाल करके अपने पैंतरे बदलता और अपना सिर बाघ की ओर ही रखता। दाएँ-बाएँ गोलाकार चक्कर में शेर और सूअर सँभले और कुछ देर तक हमले का मौका देखते रहे। इसके बाद बाघ एक बार लंबा होकर जमीन से मिल-सा गया और फिर दहलानेवाले गर्जन के साथ बडी तेजी से सूअर पर टूट पडा। बाघ ने सूअर के जबड़े पर कसकर एक थाप जमाई जिससे सूअर लडखडाने लगा। लेकिन फिर सँभलकर और गुस्से से जलती आँखों से पैंतरा बदलकर अटूट गर्जन और मजबूत सिर से दाएँ और बाएँ बाघ पर तीन-चार वार किये। शेर की देह में घाव हो गये और खून के झरने बहने लगे।

पहली बार की इस कुश्ती में सूअर को ही ज्यादा चोट लगी। उसके सिर और गालों पर खाल और मांस के चिथडे लटक रहे थे, ऊपर सिर की खाल उधेडकर सूअर की आँखों पर आ पडी थी। उधर शेर साहब पर भी बुरी बीत रही थी, छाती और बगल के छेदों से फव्वारे छूट रहे थे।

सूअर क्रोध से भन्ना रहा था। बिगडकर और ललकार करके वह बाघ पर टूट पडा। बाघ ने सूअर के पहले दाव को बचाया और जैसे बिल्ली चूहे पर टूट पडती है उसी तरह उछलकर सूअर की गर्दन पर आ गिरा। शीघ्र ही सूअर के अगले पुट्ठों में बाघ के कीले घुस गये और उसके पंजों ने सूअर को फाडना शुरू किया। भँभोरने और फाडने से भारी-भरकम सूअर की बुरी दशा होने लगी। सूअर लडखडाकर आगे को गिरा। मगर सूअर के गिरने का फल हुआ बाघ का सूअर के सिर पर होकर आगे गिर पडना। बाघ के आगे गिरते ही सूअर उसकी छाती पर चढ़ बैठा। अपने अगले पैर बाघ की छाती पर रखकर तीन-चार विकट हमले सूअर ने किये। अपने पैने और बडे-बडे दाँतों से उसने बाघ की छाती को फाड डाला। बाघ पंजे और मुँह चलाता था; पर उसकी तो तोमडी बंद थी और सूअर का भी नाकोदम था। चोट करके बाघ को छोड़कर





सूअर लड़खडाता और थका हुआ-सा कुछ दूर जा बैठा। उधर बाघ भी हाँफते हुए एक ओर वहीं पडा-पडा फूँ-फाँ करके अपना गुस्सा जाहिर कर रहा था। इस तरह तीसरी बार की इस कुश्ती में भी कोई फैसला नहीं हुआ—दोनों का जोड बराबर रहा।

आखिर दोनों की तडप और पीडा को कम करने के लिये साहब ने दो आवाजें कीं—'धाँय-धाँय'। जंगल गूँज गया। और, दोनों लडाके वहीं शान्त हो गये।



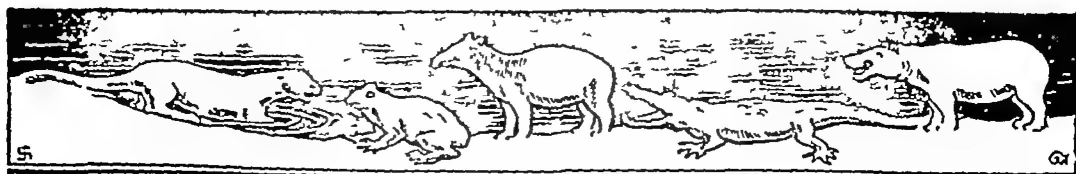




भैंसा

पालतू भैंस जिस तरह शान्त होती है, जंगली भैंसे उसी तरह भयानक होते हैं। जंगली भैंसे दल वाँधकर चलते हैं। झुण्ड के सामने पडने की तो वात ही नहीं, एक जंगली भैंसा जिस समय क्रोध से पागल होकर दौड़ता है उस समय उसके सामने अगर कोई वाघ या सिंह भी आ जाय तो जान वचाकर भागते-भागते उसकी नानी मर जाती है।

एक वार एक जंगली भैंसे और एक वडे वाघ के वीच लडाई छिड़ गई थी। भैंसे ने अपने





सींगों से बाघ पर चोट की; लेकिन दो-एक बार के बाद ही वह उछलकर बाघ के ऊपर जा बैठा। इसके बाद दोनों में गर्जन और नोच-खसोट चलने लगी। बाघ की नोच-खसोट की परवा न करके भैंसे ने जोर से एक झटका दिया जिससे बाघ दूर जा गिरा। बाघ सँभलकर जबतक उठे-उठे तबतक भैंसे के सींगों की ठोकरों और उसके पाँवों के दबाव से उसका कचूमर निकल गया। भैंसा बाघ की लहूलुहान देह को रह-रहकर देखता, फिर पूँछ उठाकर उछलता और सींगों से मिट्टी खोदता।



मलया के जंगली भैंसे

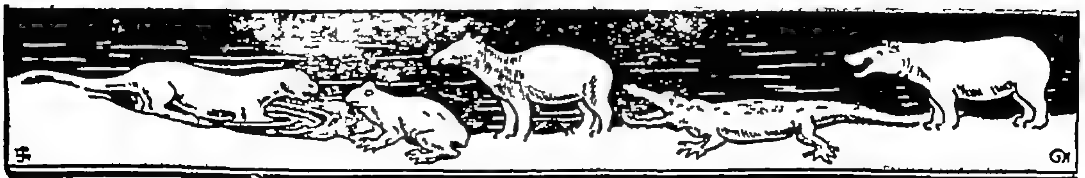
एक बार पालतू भैंसों का एक दल एक नहर को पार कर रहा था। इसी समय भैंस के एक बच्चे को घड़ियाल ने पकड़ लिया। उसकी चिल्लाहट को सुनकर सब भैंसे दौड़े वहाँ आ गये और सबने मिलकर उस घड़ियाल को घेर लिया। इसके बाद उन्होंने सिर झुकाकर अपने-अपने सींगों से कीचड़ में घड़ियाल को ढूँढ़ निकाला। इसके बाद हरएक ने सींग से उसे मार-मारकर बिलकुल बेदम कर दिया। घड़ियाल को भैंस के बच्चे खाने का मजा मिल गया।





बाइसन

जंगली भैंसे की एक जाति को ही बाइसन कहते हैं। यह उत्तर अमेरिका में पाया जाता है। इसका चेहरा देखने में बड़ा खूँखार होता है। आज से पचास-साठ वर्ष पहले यह झुण्ड बाँधकर अमेरिका के मैदानों में चरा करता था। टिड्डी-दल की तरह सैकड़ों मील तक सिर्फ झुण्ड-के-झुण्ड बाइसन ही देख पड़ते थे। इनके सामने अगर कोई ट्रेन पड़ जाती तो उसे तोड़फोड़कर चकनाचूर कर डालते और जान-माल को मटियामेट कर देते। इसके सिवा इनके ऊधम से खेतों में कोई फसल नहीं होने पाती। जब लोग बहुत तंग आ गये तब उन्होंने इनका शिकार करना शुरू कर दिया। एक-एक साल में तीस-तीस लाख बाइसन मारे जाने लगे। इस तरह कुछ ही सालों के बाद यह हालत हो गई कि सरकारी चिड़ियाखाने के सिवा और कहीं एक भी बाइसन नहीं रह गया। १८७१ ई० में जहाँ एक ही झुण्ड में चालीस लाख बाइसन देखे गये थे वहाँ १८९७ ई० में एक भी जंगली बाइसन नहीं देखा गया। इतने थोड़े समय मे बाइसन का अमेरिका से जो इस तरह लोप हो गया, इसका कारण यूरोप के लोगों को उसके चमड़े का लोभ था।



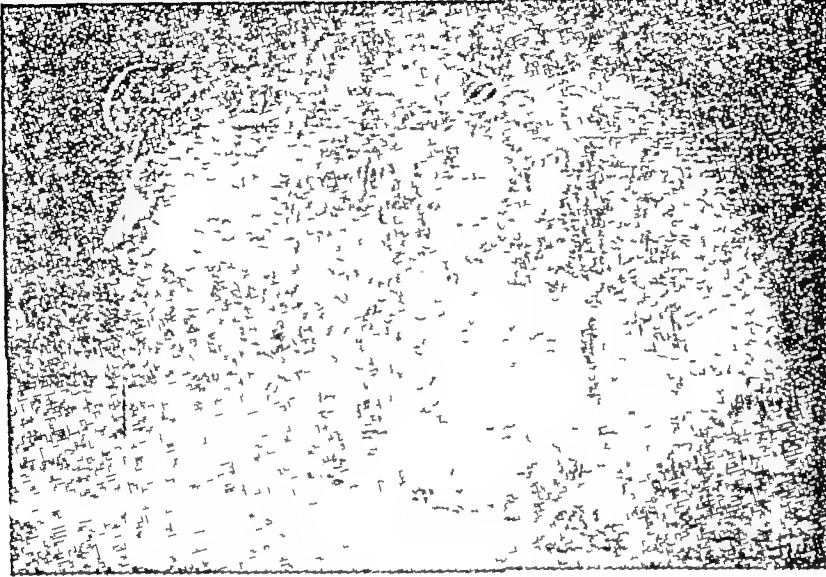


लामा

जिस तरह बैल या ऊँट से लोग बोझा ढोने का काम लेते हैं उसी तरह दक्खिन अमेरिका में लामा से बोझा ढोने का काम लिया जाता है। यह ऊँट से कुछ-कुछ मिलता-जुलता भी है, लेकिन ऊँट की तरह इसकी पीठ पर कूबड़ नहीं होता और न यह बालू पर चल ही सकता है। यह देखने में बड़ा सुन्दर लगता है और इसका सारा बदन घने लंबे बालों से ढँका रहता है। पहाड़ी जगहों में यह आसानी से चल-फिर सकता है। यह करीब तीन फीट ऊँचा होता है। यह मजबूत होता है और अपनी पीठ पर एक मन से अधिक का बोझा ढोकर ले जा सकता है। इसके बारे में एक विचित्र बात यह देखी जाती है कि जितना बोझ यह ढो सकता है उसकी हद से अगर थोड़ा भी ज्यादा बोझ इसके ऊपर लाद दिया जाय तो यह जमीन पर बैठ जाता है और तबतक टस-से-मस नहीं होता जबतक बोझ कम न कर दिया जाय।

यह ऊँचे पहाड़ों पर पाया जाता है। इसके चार भेद होते हैं। दो प्रकार के लामा हमें ऊन देते हैं और दो बोझा ढोने के काम में आते हैं। लामा के ऊन से ही अलपाका कपड़ा बुना जाता है जिसे लोग गरमी के दिनों में पहनते हैं। लामा को बहुत खिलाने की जरूरत नहीं होती। यह बड़ा ही सीधा जानवर होता है और मनुष्य के साथ बहुत जल्द हिलमिल जाता है; लेकिन अगर यह तंग किया जाता है तो थूक फेंकता है।





याक

सभी देशो में मनुष्य के काम में आने लायक कोई-न-कोई जानवर जरूर होता है। ऊँट या लामा जिस तरह रेगिस्तान और पहाडी मुल्को मे लोगो के काम आते हैं उसी तरह मध्य एशिया के हजारों फीट ऊँची जमीन पर और तिब्बत मे जहाँ सर्दी बहुत ज्यादा पडती है, याक मनुष्य का दोस्त होता है। इसे भेड और बैल के बीच का जानवर समझना चाहिये। इसके सींग लंबे और देखने में सुन्दर होते हैं। इसके पाँव छोटे छोटे और देह पर भेड की तरह लंबे बाल होते हैं। पीठ पर बोझा लादकर यह पहाडो की चढाई मे प्रतिदिन २० मील तक चल सकता है। तिब्बती लोग याक का दूध पीने के काम मे लाते हैं। इसके बालों से रस्सी, खीमा और उमदा कपडा तैयार किया जाता है।



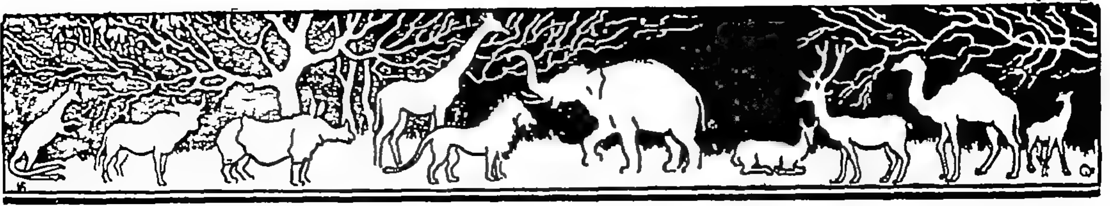


कंगरू

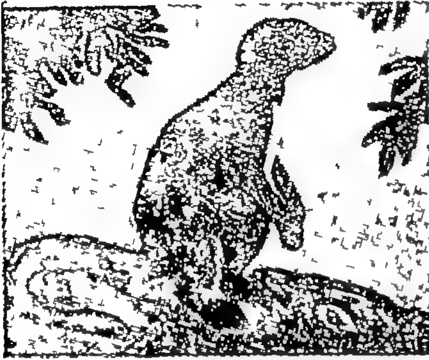
तुमलोग कोट-कमीज पहनते हो। उसमे पाकेट होती है। अपनी पाकेट मे तुम रूमाल, लट्टू, गोली या खाने की कितनी ही चीजें भी रख लेते हो। इसी तरह के कई जानवर भी होते हैं जिनकी देह मे एक थैली-जैसी चीज लटकती रहती है—ठीक पाकेट की तरह। और, यह पाकेट कहाँ होती है? पिछले दोनों पाँवों के बीच मे पेट के ऊपर। पाकेट क्या होती है—इसे एक छोटामोटा थैला ही समझो।

इस तरह के पाकेट वाले जानवर कंगरू, ओपोसम, ओमवेट, कसकस आदि होते हैं। ये सब आस्ट्रेलिया और अमेरिका मे पाये जाते हैं। कंगरू, खास आस्ट्रेलिया देश का जानवर है। इसके सामने के दो पाँव छोटे और पिछले पाँव लंबे और मोटे होते है। इसलिये यह और जानवरों की तरह सीधी तरह से नहीं चल सकता। इसकी पूँछ बहुत लंबी और मजबूत होती है जो चलते समय पाँव का ही काम देती है। यह मेढक की तरह उछलता हुआ चलता है और एक छलाँग मे दस-बारह हाथ से कम नहीं जाता। जब यह अपने पिछले पाँवों पर खड़ा होता है, ऊँचाई मे आठ फीट तक ऊँचा होता है। अपने पिछले पाँवों और पूँछ के बल पर यह हवा मे छलाँगे मारता हुआ





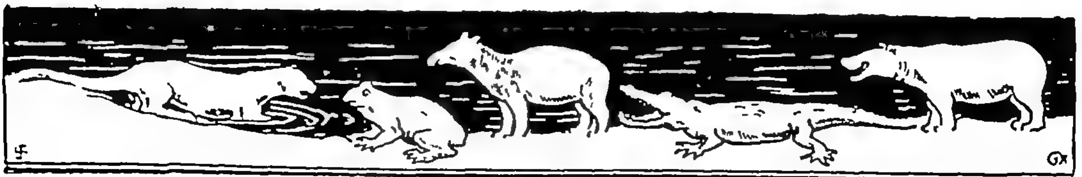
चलता है उस समय तेज-से-तेज घोडा और शिकारी कुत्ता भी इसका पीछा नहीं कर सकता। एक साधारण कंगरू भी ९ फीट ऊँचे घेरे तक को फाँद जा सकता है। कभी-कभी यह ग्यारह फीट तक ऊँचा घेरा फाँदते देखा गया है। यह सिर्फ घास-पत्ती आदि खाकर जीता रहता है। पिछले पाँवों से लत्तियाँ चलाकर यह बडे-बड़े जानवरों के भी छक्के छुडा देता है।

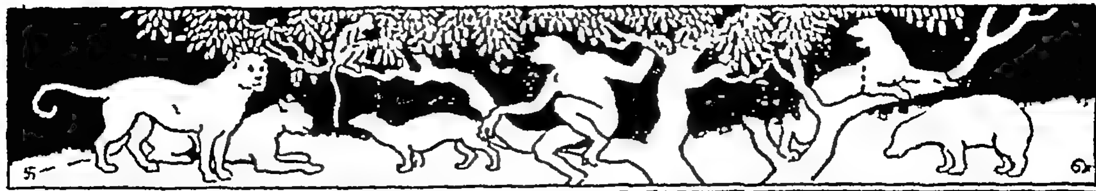


कंगरू का बच्चा

कंगरू सीधा जानवर होता है, लेकिन अगर इस-पर चोट की जाती है तो यह बड़ी बहादुरी से अपने दुश्मन का सामना करता है। शिकारी कुत्ते जब कंगरू का पीछा करते हैं तब यह पानी की तरफ भागता है और पानी में ही जाकर खड़ा हो जाता है। कुत्ते जब वहाँ पहुँचते हैं तब यह अपने अगले पंजो से उन्हें पानी के नीचे तबतक दबा रखता है जबतक कुत्ते मर न जायँ। और, अगर यह भागकर अपनी जान नहीं बचा सकता तो घूमकर अपने शत्रु का सामना करता है। ज्यों ही कुत्ता पास आता है, कंगरू अपने पिछले पाँवों से लत्तियाँ चलाकर तेज चंगुलों से कुत्ते को चीर-फाड़ डालता है।

यह अपनी पाकेट से क्या काम लेता है, जानते हो? तुम्हारी तरह यह अपनी पाकेट में रुपया, पैसा, रूमाल, गोली या बिस्कुट तो रखता नहीं। फिर क्या रखता है? अपने बच्चों के पैदा होने के बाद महीने-डेढ-महीने तक यह उन छोटे-छोटे बच्चों को पाकेट में रखकर घूमता-फिरता है। खाते, सोते, चलते-फिरते सब समय बच्चे इसी पाकेट में मजे से रहते हैं। इसके बाद बच्चा उस थैली से बाहर निकलता है और मुलायम घास-पत्ती खोज-खोजकर खाता है। कंगरू का चमड़ा





बड़ा मुलायम होता है। उससे जूता, बैग आदि कितनी ही चीजें तैयार होती हैं। इसके लिये हर साल हजारों कंगरुओं की हत्या की जाती है।

मादा कंगरू का शिकार करना बड़ा निठुर काम है। इसके छोटे-छोटे बच्चे इसकी पाकेट में रहते हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि मादा कंगरू जिस समय झुककर घास खाती है उस समय इसका छोटा बच्चा भी अपना मुँह थैली से बाहर निकालकर घास को कुतरता रहता है। लेकिन जब बच्चा इस लायक हो जाता है कि वह बाहर निकलकर चर सके उस समय खतरा होने पर फौरन अपनी माँ के पेट की थैली में घुस जाता है।

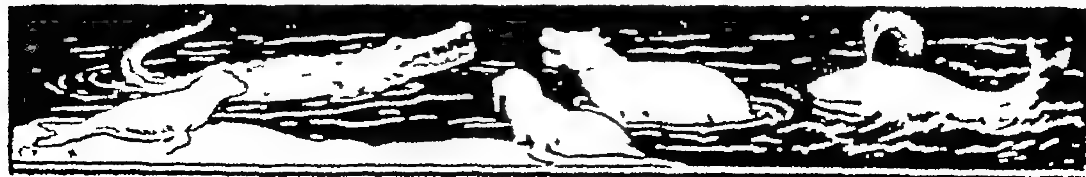
शिकारी कुत्ते का हमला होता है और बच्चा फौरन उस थैली में घुस जाता है। मादा कंगरू अपनी जान बचाने के लिये भागती है। लेकिन पेट में बच्चे का बोझ होने से यह बहुत तेज नहीं दौड़ सकती। इसलिये जब यह दौड़कर थक जाती है और कुत्तों को नजदीक आते हुए देखती है तब अपने छोटे बच्चे को जबरदस्ती थैली से निकालकर जमीन पर रख देती है। इसके बाद यह दूसरी तरफ भागती है और कुत्ता इसका पीछा करता है। अगर यह भागकर बच जाती है तब तो दूसरे रास्ते से लौटकर फिर उस जगह पर आ जाती है जहाँ इसका बच्चा रहता है। और, अगर भाग कर नहीं बच सकती तो अपने बच्चे के लिये जान दे देती है।



ओपोसम

सब चिड़ियाखाने में कंगरू रक्खे जाते हैं। कलकत्ते के चिड़ियाखाने में भी एक कंगरू है। उसे वहाँ जाने पर तुम देख सकोगे।

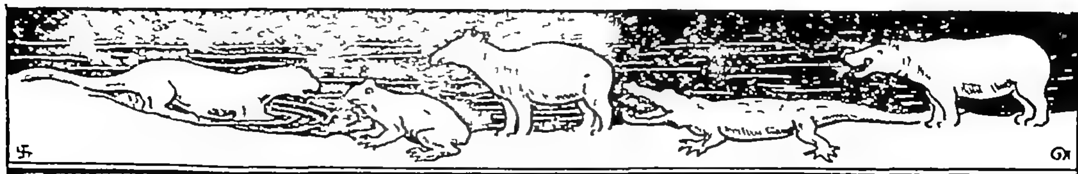
ओपोसम वह जानवर है जो कंगरू की तरह अपने बच्चे को अपनी पाकेट में रक्खे रहता है। यह अद्भुत जीव है—मुँह बहुत-कुछ सियार की तरह, पूँछ चूहे की तरह और





सारे शरीर पर ऊन! यह सब तरह की सागसब्जी खाता है और जब इससे भी इसकी राक्षसी भूख नहीं मिटती तब यह बहुत-से चूहों और खरगोशो को भी मारकर खा जाता है तथा किसानो के खेतों की फसल बरबाद कर डालता है। बंदर की तरह ही यह पेड पर चढने और एक से दूसरे पेड पर छलाँगें मारने मे उस्ताद होता है। लेकिन इसकी पूँछ मे गजब की ताकत होती है। पूँछ इतनी जोरदार होती है कि यह उससे फलदार पेड की डाली को चिपककर पकड़ लेता है और सिर के बल झूलते हुए फल खाता रहता है। इस तरह पेड़ों पर मजे में रहता है; लेकिन जमीन पर यह इतना फुर्तीला नहीं होता। कुत्ते और आदमी इसका पीछा करके इसे पकड़ लेते हैं। यह बहुत तेज नहीं दौड सकता। शिकारी कुत्ते या आदमी जब इसका पीछा करते हुए इसके पास पहुँच जाते हैं, यह जमीन पर पाँव फैलाकर इस तरह लेट जाता है मानों मरने का बहाना किये हुए हो। इस हालत में अगर इसे कोई मारे, इसके ऊपर पानी डाले, चाहे जो कुछ करे यहाँ तक कि जान से मार भी डाले—फिर भी यह ज्यों-का-त्यों पडा ही रहेगा—जरा भी टस-से-मस नहीं होगा। इस तरह सब-कुछ करके जब शिकारी समझता है कि अब जिन्दा नहीं है, वहाँ से चल देता है। इसके बाद फौरन् यह धूर्त उठ बैठता है और वहाँ से रफूचक्कर हो जाता है।

आमतौर से ओपोसम करीब २२ इंच लंबा होता है। इसकी पूँछ १५ इंच लंबी और काँटेदार होती है जिससे यह डालियों को आसानी से मजबूती के साथ पकड़ सकता है। कंगरू की पाकेट की तरह नहीं होने पर भी इसकी पाकेट बहुत छोटी नहीं होती। आठ-दस बच्चों को एक साथ ही पाकेट में रखकर यह पेडों पर चढ़ सकता है, मैदान में दौड़ सकता है। बच्चे जब कुछ बडे होते हैं और थैली मे नहीं समा सकते तब मादा अपनी पीठ पर उन्हें चढ़ा लेती है। वे अपने छोटे-छोटे चंगुलों से उसके रोएँ पकड़े रहते हैं। फिर जब मादा अपनी पूँछ को मोड़कर ऊपर उठाती है, बच्चे भी अपनी पूँछ को उसी तरह मोड़कर माँ की पूँछ में जकड़ देते हैं। अब इसी हालत मे वे पेडो पर उछलते हुए और मैदान मे दौडते हुए चलते हैं और जहाँ जो कुछ पाते हैं, खा डालते हैं।





उत्तर अमेरिका में किसानों के खेत, फलों के बागीचे, पालतू चिड़ियाँ, उनके अंडे—सब कुछ ये नष्ट कर डालते हैं। इसलिये वहाँ के किसानों को ओपोसमों के शिकार करने की बडी फिक्र रहती है। वे चाँदनी रात में दस-बारह शिकारी कुत्तो को साथ ले कर ओपोसमों का पीछा करते हैं। पीछा किये जाने पर ओपोसम गाछ पर चढ़ जाते हैं। इसके बाद पेड के चारो तरफ नीचे में कुत्तों को रखकर दो-तीन आदमी उस पेड़ पर चढ़ जाते हैं। फिर डालियों को झुकाकर और हिला-डुलाकर ओपोसमो को नीचे जमीन पर गिरा देते हैं। वहाँ कुत्ते उनकी धज्जियाँ उडा डालते हैं।

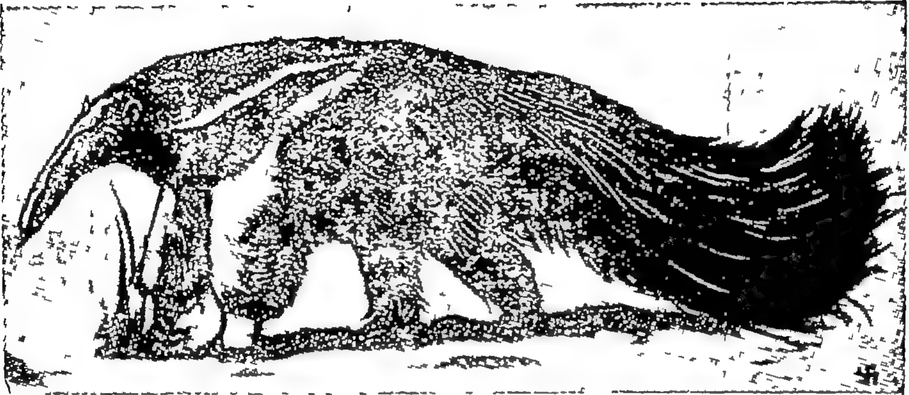


ओमबैट

कसकस और ओमबैट भी इसी तरह के पाकेट वाले जीव हैं। कसकस बिल्ली के आकार का होता है। यह न्यूगिनी टापू में पाया जाता है। इसका माथा और देह करीब अठारह इंच और पूँछ भी करीब-करीब उतनी ही लंबी होती है। इसकी पूँछ की करामात भी कम नहीं है। यह हाथ या पाँव की तरह अपनी पूँछ से काम लेता है। डाली में अपनी पूँछ को लिपटाकर यह सिर के बल लटक जाता है और खतरा होने पर ऐसा बहाना कर देता है मानों मरा हुआ हो। इसके रोएं दूर से ठीक सूखी पत्तियों की तरह मालूम होते हैं जिससे शिकारी को धोखा हो जाता है।

ओमबैट जमीन के नीचे बिल बनाकर रहता है। यह एक गज लंबा होता है। इसके दाँत और चंगुल मजबूत होते हैं। यह घास खाता है। आकार-प्रकार में यह छोटे कद के भालू से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है।

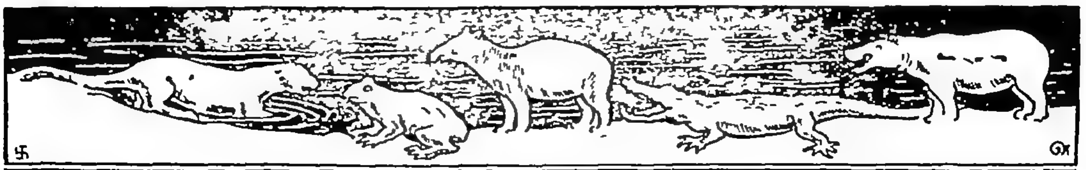




चींटीखोर जानवर

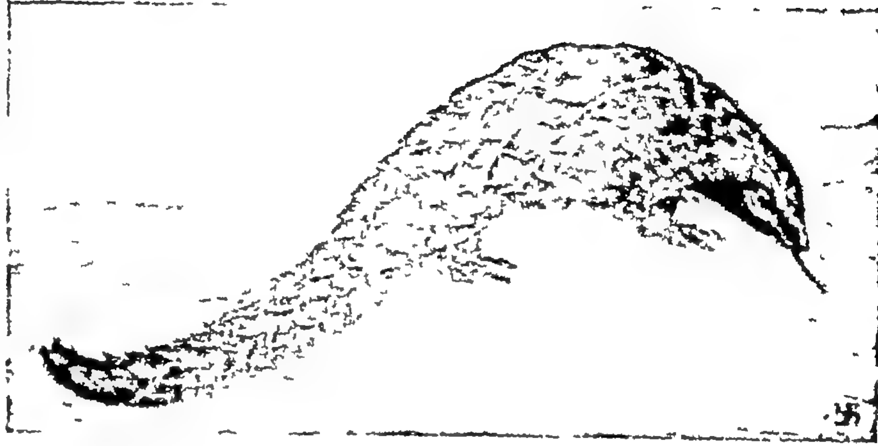
अब तुम्हें कुछ ऐसे जानवरों के हाल बताता हूँ जो चींटियो को खाना ज्यादा पसंद करते हैं और जिनके मुँह मे दाँत नहीं होते। इनमे एक भी जानवर हमारे देश में नहीं पाया जाता। दक्षिण अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशो मे ये सब जानवर पाये जाते हैं।

सबसे बड़ा चींटीखोर जानवर करीब चार फीट लंबा होता है और इसकी पूँछ चँवर की तरह होती है। यह पूँछ भी चार फीट से कम लंबी नहीं होती। मुँह छछून्दर की तरह लंबा होता है और देह पर लबे भूरे रंग के रूखे बाल होते हैं। पूँछ पर के बाल इतने बड़े और घने होते हैं कि पूँछ को ऊपर उठाकर उससे यह धूप और वर्षा में छाते का काम लेता है। इसके मुँहमें दाँत नहीं होते। इसके बदले में चाबुक की तरह लंबी जीभ होती है जिसके ऊपर कोई लसीली-सी चीज





लगी रहती है। सामने के पाँवों में लंबे और तेज नख होते हैं। इन तेज नखों से ही यह मिट्टी के ढेर को हटाकर चींटियों को बाहर कर देता है और तब अपनी लसीली जीभ से उन्हें पकड़कर खाने लगता है। इसके नखों में इतना जोर होता है कि इनसे यह पत्थर के टीले तक को चीरफाड़ सकता है। पाँव मुड़े रहने के कारण यह सीधा होकर नहीं चल सकता। लेकिन उछल-उछल-कर दौड़ सकता है। इसके साथ सियार, कुत्ता, बाघ, भालू आदि दौड़ नहीं सकते।



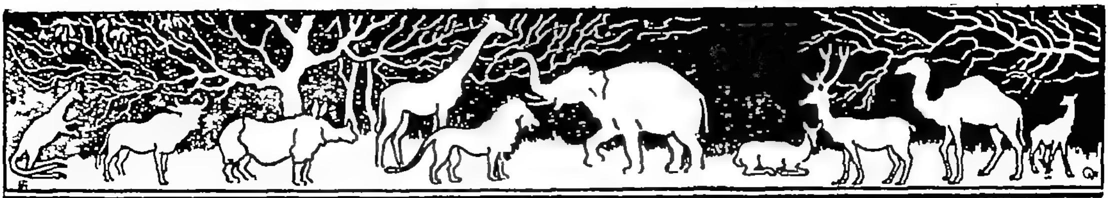
पैंगोलिन



अर्डवर्क

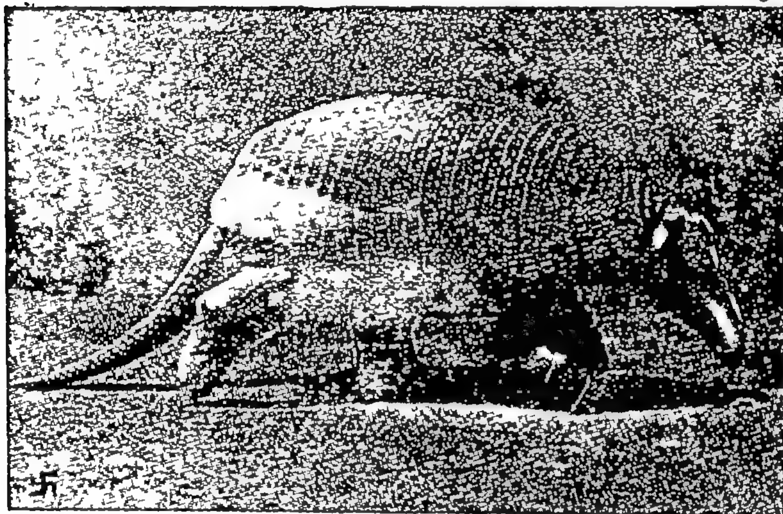
रात में यह अपने खाने की तलाश में बाहर निकलता है। जहाँ चींटियाँ रहती हैं वहाँ जाकर अपने तेज नखों से वह बिल की मिट्टी को हटा देता





है और तब उससे चीटियाँ बाहर निकली हैं तब अपनी जीभ से उन्हे पकड़कर एक साथ बहुतो को निगल जाता है।

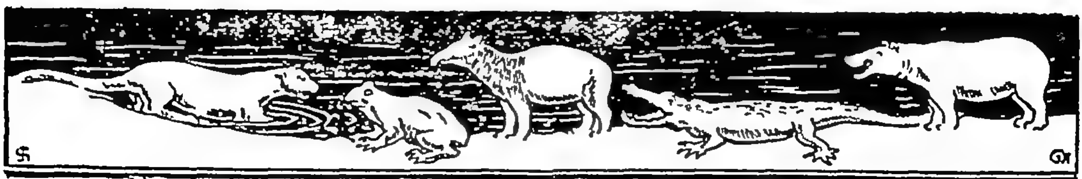
पेंगोलिन भी ऐसा जानवर है जो सिर्फ चीटियाँ खाकर ही जीता है। यह अफ्रीका, एशिया और अमेरिका में पाया जाता है। चींटीखोर की तरह इसके भी लंबे-लंबे तेज नख और लसीली जीभ होती है। इसकी देह सिर से पूँछ तक कड़े बालो से ढँकी रहती है। ये बाल मजबूती से बुने हुए होते हैं। यह बहुत नहीं दौड़ सकता, इसलिये दिन-भर यह अपनी माँद मे रहता है और रात में चींटियों का शिकार करने निकलता है।



अर्माडिलो

अर्डभर्क की गिनती भी चींटीखोर जानवरों में ही की जाती है। इसका चेहरा बड़ा ही अद्भुत होता है। यह ६ फीट तक लंबा होता है। इसकी नाक लंबी और कान बड़े-बड़े होते हैं। पाँव ठिगने कद के और मोटे होते हैं जिनमें तेज नखो वाले पंजे होते हैं। अपने इन पंजों से ही यह जमीन खोदकर अपने रहने के लिये बिल बनाता है। यह अपनी लंबी चिपचिपी जीभ से चीटियों को पकड़कर खा जाता है।

अर्माडिलो दक्षिण अमेरिका का जानवर है। यह बहुत कम देखा जाता है। इसे बिलकुल





चींटीखोर जानवर नहीं कह सकते। यह बड़ा पेटू होता है और सब कुछ खा सकता है। साग-भाजी, अनाज, कीड़ा-मकोड़ा, और ताजा या सड़ा-गला मांस सब यह खा जाता है— जानवरों की लाशों को भी नहीं छोड़ता और इस तरह यह सफाई का काम करता है। लेकिन इसकी देह की बनावट बड़ी विचित्र होती है। तसवीर में देखो, किस तरह इसकी देह चमड़े के कवच से ढकी हुई है। अर्माडिलो का यह कवच लोहे का नहीं—बल्कि चमड़े का होता है। जिस तरह कछुए की पीठ पर चोइटे होते हैं उसी तरह इसके सिर, पीठ और पूँछ ये सब चोइटों से ढँके रहते हैं। इसके छोटे छोटे पाँवों में लम्बे और तेज नख होते हैं जिनसे यह मिट्टी में गढ़ा खोदकर अपना घर बनाता है। जमीन में गढ़ा खोदने में यह मनुष्य से भी बढ़कर होता है। अगर तुम इसके बिल को खोदना चाहो तो यह जमीन के नीचे और भी खोदता चला जायगा। एक बार एक आदमी आठ घंटे तक लगातार अर्माडिला के बिल को खोदता रहा और



अर्माडिलो की एक उपजाति

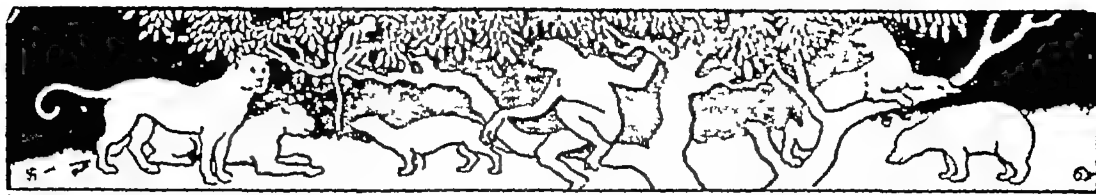
तब उसे जाकर इस जानवर का पता चला। इस बीच में उसे ६ गढ़े खोदने पड़े थे। यह बड़ा लड़ाकू जानवर होता है और जंगली लोग इससे बहुत डरते हैं। अक्सर यह रात में ही भोजन करता है। खूँटी की तरह इसके छोटे-छोटे ६० दाँत मजबूत जबड़ों में जड़े रहते हैं। इसकी जीभ पाँच इंच लंबी होती है और उसपर भी काँटे जैसे बहुत छोटे छोटे दाँत उगे रहते हैं। यह अपने मजबूत नखों से पत्थर तक को चीर डालता है। यह तीन फीट से ज्यादा लम्बा नहीं होता।



कुछ विरल जीवजन्तु

बहुत पुराने जमाने में ऐसे बहुत-से जीव-जन्तु पाये जाते थे जिनके रूप इस समय बहुत बदल गये हैं। इस समय ऐसे बहुत-से जानवर हैं जिनका पहले कहीं चिह्न तक नहीं पाया जाता था। इसके सिवा जहाँ पहले घने जंगल थे वहाँ अब लोग बस गये हैं या खेती होने लगी





है किसी-किसी जानवर का इतना अधिक शिकार किया गया कि अब उसका मानों लोप ही हो गया है। इसी तरह के कुछ जानवरों को जो अब बहुत कम देखे जाते हैं, यहाँ परिचय दिये जाते हैं।

अफ्रिका मे 'बोंगो' जाति के हिरन पहले बहुत पाये जाते थे; लेकिन अब ये विरल ही देखे जाते हैं। यह हिरन देखने मे बडा सुन्दर होता है। इसकी देह पर बहुत ही सुन्दर सादे रंग की लकीरें खिची रहती हैं। इसकी देह का रंग कुछ-कुछ बैंगनीपन लिये रहता है। यह ऊँचे पहाडों के नीचे के भाग मे घने पेडों और झाडियों के बीच अपने को छिपाये रहता है। इसके नर और मादा दोनो के सींग होते हैं। जब यह छोटा रहता है, भेंड के बच्चे के समान मालूम पडता है। जंगली लोगों का विश्वास है कि सडे-गले पेडों के जो भाग बच जाते हैं, उन्हें ही यह 'बोंगो' हिरन खाता है और रात में कीचड या भींगी जमीन और भींगी हुई घास पर न सोकर अपने सींगों के बल पेड से लटक जाता है!

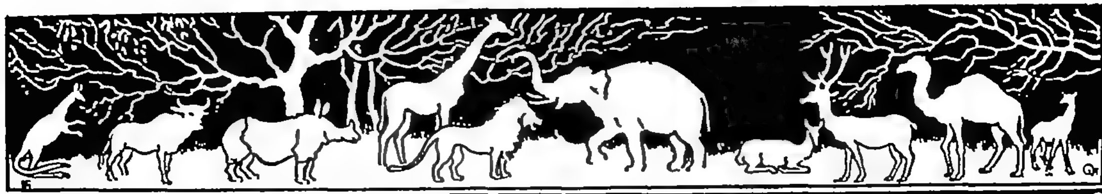
तीन-चार वर्ष पहले पूर्व अफ्रिका के किसी घने जंगल मे एक 'बोंगो' हिरन पकडा गया था। लेकिन वह बहुत दिनों तक जिन्दा नहीं रह सका। पालतू होने पर यह हिरन गाय-बकरी की तरह पोस मान लेता है।



ओकापी

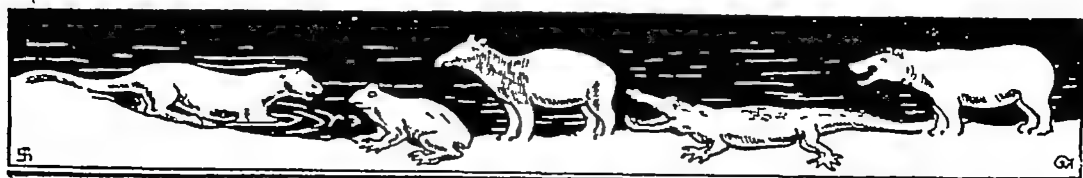
बेलजियम कंगो के घोर जंगल में एक जानवर पाया जाता है जिसे 'ओकापी' कहते हैं। यह मांस खाता है और लम्बाई में ज्यादा से ज्यादा पाँच फीट और ऊँचाई मे दो फीट होता है। यह बडा खूँख्वार होता है और इसका दंश साँप के दंश से भी बढकर विषैला होता है। बहुत दिनो तक लोगों को इस जानवर का कोई भी पता नहीं था। पहले पहल १९१५ ई० मे अमेरिका के एक साहब ने इसका पता लगाया और इसके कई फोटो लिये। उस समय एक

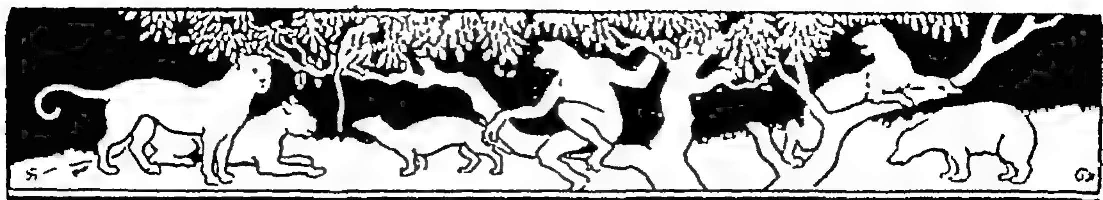




ओकापी पकड़ा भी गया था, लेकिन वह कुछ ही दिनों में मर गया। यह जानवर बड़ा ही चौकन्ना होता

पंडा और उसका बच्चा





है। दूर से मनुष्य की आवाज सुनकर या उसकी गन्ध पाकर यह घने जंगल में छिप जाता है। यह अकेला रहना पसंद करता है। दो ओकापी एक साथ बहुत कम देखे जाते हैं। माता ओकापी अपने बच्चे को छिपाकर रखती है।

इस तरह का एक और जानवर, जो तिब्बत और चीन में पाया जाता है, उसका नाम 'पंडा' है। यह भी विरल ही देखा जाता है। आकार में छोटा होने पर भी यह देखने में काफी सुन्दर होता है। इसे चटकदार लाल रंग का भालू भी कह सकते हैं। पहाड़ी जगहों में ही यह रहता है। इसे जिन्दा पकड़ना बहुत ही कठिन काम है। यह बड़ा आराम-पसंद जानवर होता है। बाँस के झुर-मुटों को खोज-खोजकर उसकी कच्ची कोंपलें खाया करता है। यह रोजाना चार बार खाता है। हरेक बार खाना खाने के बाद एक-दो घंटा सोता है और फिर दौड़-धूप, उछल-कूद शुरू कर देता है। रबर का गेंद, काठ का बक्सा या कोमल चटाई लेकर यह बहुत तरह के खेल खेलता है। इसके बाद जब भूख लगती है तब फिर खाता है और आराम करता है। आराम कर लेने पर फिर वही दौड़-धूप और उछल-कूद!

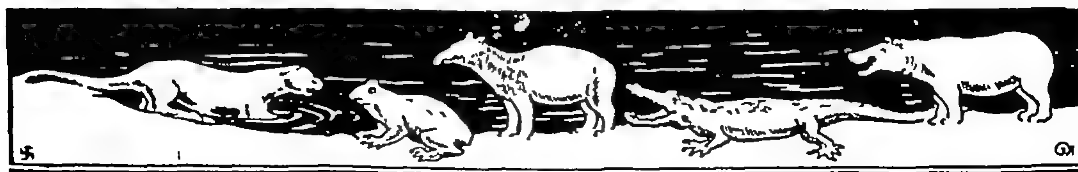
अमेरिका की राजधानी न्यूयार्क के चिड़ियाखाने में जो पंडा है उसे भोर में दूध और अंडा खाने के लिये दिया जाता है। बीच-बीच में उसे भोजन के साथ शहद और मछली का तेल भी दिया जाता है। दोपहर में सिर्फ दूध दिया जाता है। फिर तीसरे पहर शहद में मिलाकर कमला नीबू का रस और शाम में दूध और अंडा। रात में पकाया हुआ अन्न, बाँस की कोंपल और साग-सब्जी खाता है।

पोस मान लेने पर यह बड़ा सीधा हो जाता है। लोग इसको साथ लेकर जहाँ चाहें, जा सकते हैं। अबतक जो पंडे चिड़ियाखाने में लाकर रक्खे गये हैं वे सब-के-सब बच्चे ही हैं। लन्दन के चिड़ियाखाने में जो पंडा है उसका वजन इस समय २४ सेर है। दो वर्ष पहले जब वह तिब्बत से लाया गया था, उसका वजन १२ सेर के लगभग था। बढ़ने पर इसका वजन चार मन तक हो सकता है!



हिरन

हिरन देखने में बहुत सुन्दर और सीधा जानवर होता है। इसकी देह की गठन हल्की



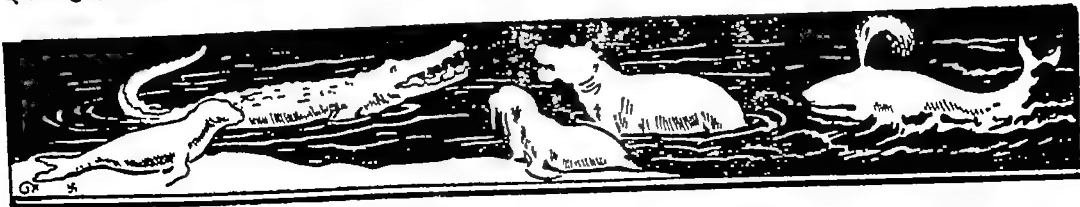


और आँखें बड़ी-बड़ी होती हैं। यह बहुत तेज दौड़ सकता है। हिरन के कितनी ही जातियाँ होती हैं। कुछ हिरन ऐसे होते हैं जिनके नर और मादा दोनों के सींग होते हैं। और, कई जातियों के हिरनों मे सिर्फ नर के ही सींग होते हैं। कस्तूरी हिरन के, नर-मादा किसी के भी, सींग नहीं होते। जिस तरह मयूर के रंग-बिरंगे पर गिर जाते हैं और फिर नये उग आते हैं उसी तरह हिरन के सींग भी साल मे एक बार गिर जाते हैं और उनकी जगह पर छोटे-छोटे सींग उग आते हैं। पहले ये मूठ की तरह होते हैं और फिर बढ़ते-बढ़ते सींग की तरह हो जाते हैं। नये सींग जब तक नरम रहते हैं, मखमल की तरह मुलायम चमड़े से ढँके रहते हैं। सींगों के कड़ा हो जाने पर ऊपर का चमड़ा सूखकर गिर जाता है। हिरन दल बाँधकर चलते हैं और अपनी जमात के सरदार का हुक्म मानते हैं।



कस्तूरी हिरन

दक्षिण अफ्रिका और आस्ट्रेलिया के सिवा संसार के और सब देशों में हिरन पाये जाते हैं। इनमें कुछ बड़े आकार के हिरनों का यहाँ हाल लिखा जाता है—





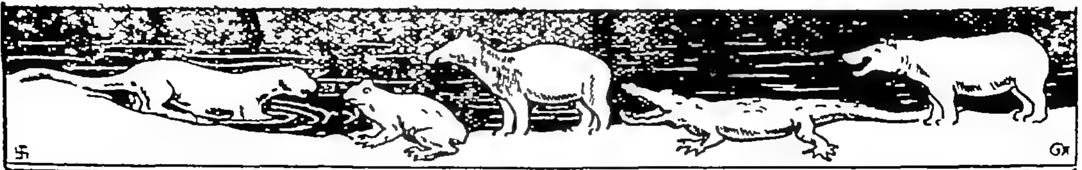
चीता हिरन

हिन्दुस्तान में यह हिरन प्रायः सब जगह देखा जाता है। इसकी देह का रंग कुछ लाली लिये हुए होता है जिसके ऊपर सादे रंग के छोटे-छोटे धब्बे होते हैं। यह लगभग साढ़े तीन हाथ लम्बा होता है और देखने में बड़ा खूबसूरत मालूम पड़ता है। इसके सींग बड़े-बड़े होते हैं और उनमें कई शाखाएँ निकली हुई होती हैं। यह जिस जगह पर रहता है वहाँ झुण्ड बाँधकर दिन में झाड़ियों और झुरमुटों में छिपा रहता है और रात में चरने के लिये निकलता है। सोते समय बच्चों को बीच में रखकर चारों तरफ से उन्हें घेरकर सोता है। हरएक झुण्ड में कई पहरेदार भी रहते हैं जो औरों के सोने समय पहरा देते हैं।



चीता हिरन

बंगाल के सुन्दरबन में जिस तरह बहुत-से हिरन पाये जाते हैं उसी तरह वहाँ झुण्ड-के-झुण्ड बंदर भी रहते हैं। कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि हिरन जिस पेड़ का पत्ता खाना पसंद करता है, झुण्ड-के-झुण्ड बंदर उस पेड़ पर चढ़कर पत्तो को तोडकर नीचे गिरा देते हैं। इसके बाद बहुत-से हिरन वहाँ आकर पत्ते खाने लगते हैं। अगर किसी कारण से हिरनों के आने में देर होती है तो





वन्दर एक तरह की आवाज करते हैं, जिसे सुनकर खाने के लोभ से झुण्ड-के-झुण्ड हिरन वहाँ पहुँच

लाल हिरन



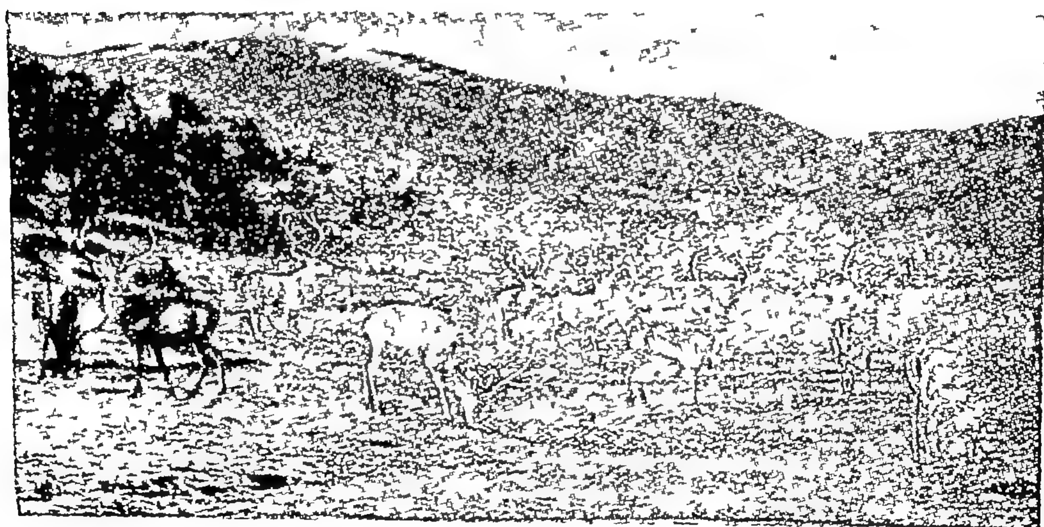
जाते हैं। इसी समय अगर एकाएक दूर पर कोई बाघ आता हुआ दीख पड़ता है तो बन्दर कुछ ऐसी आवाज करके इशारा करते हैं कि झुण्ड के सब हिरन पल-भर मे ही भागकर न मालूम कहाँ छिप जाते हैं।

सभर हिरन

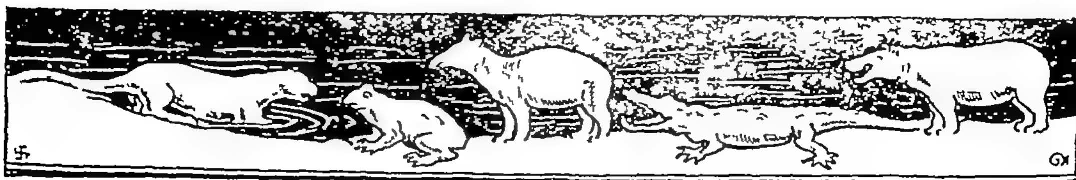
हिमालय पहाड़ की तराई मे और आसाम, उड़ीसा, मध्यभारत और विन्ध्याचल के जंगलों मे संभर हिरन देखे जाते हैं। यह हिरन पाँच हाँथ तक लंबा और तीन हाथ ऊँचा होता है। इसके सींग भी बड़े-बड़े होते हैं। हर सींग मे तीन शाखाएँ होती हैं। इसका रंग मटमैला होता है और रोएँ मोटे और कड़े होते हैं।

बारहसिगा

बारहसिगा यूरोप के बहुत-से स्थानो मे और एशिया के उत्तर भाग में पाये जाते हैं। यह



बारहसिगे





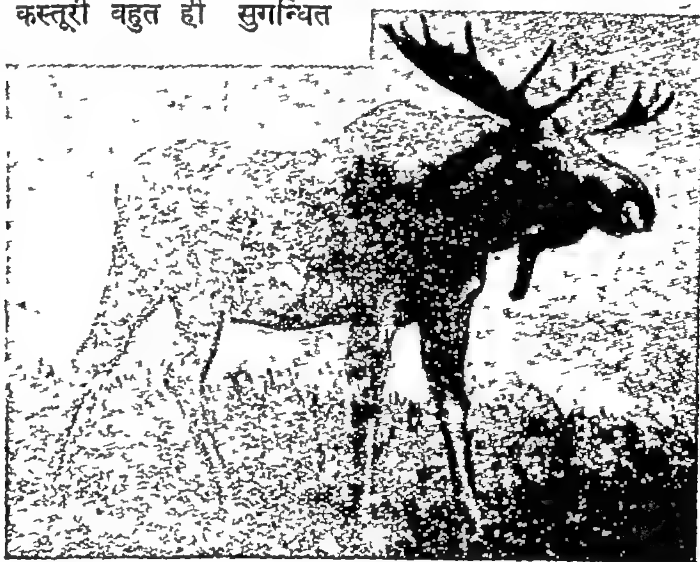
हिरन बहुत बड़ा होता है। इसके सींग बहुत बड़े-बड़े होते हैं। एक जोड़े सींगो मे बारह शाखाएँ होती हैं। दो बारहसिगों मे जिस समय लडाई छिड़ती है, उस समय बीच-बीच मे उनके सींग एक-दूसरे से इस तरह जकड़ जाते हैं कि वे किसी तरह छुडा नहीं सकते। दोनों में कशमकश चलने लगती है और आखिर दोनो जमीन पर गिरकर मर जाते हैं। इस जाति के हिरन का बच्चा पैदा होने के कुछ ही घंटे बाद पानी मे तैर सकता है।

कस्तूरी हिरन

हिमालय, तिब्बत और चीन में कई जातियों के कस्तूरी हिरन पाये जाते हैं। ये बहुत ऊँची पहाड़ी जगहो मे रहते हैं। इनके पेट के चमडे के नीचे एक थैली होती है जिसमें से कस्तूरी निकलती है। यह कस्तूरी बहुत ही सुगन्धित होती है। इत्र, सेंट और दवा बनाने में कस्तूरी काम आती है।

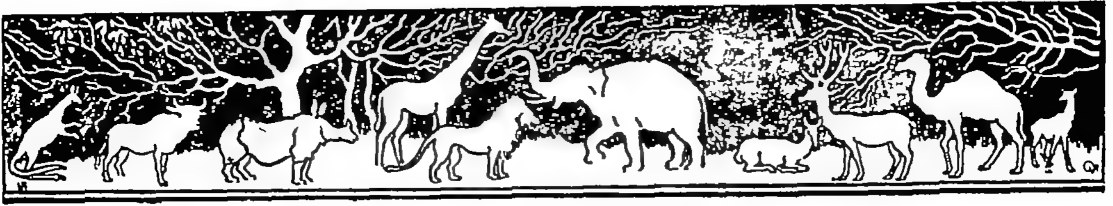
एल्क हिरन

एल्क जाति का हिरन और सब हिरनो से बडा होता है। ऊँचाई मे हाथी की तरह मालूम होता है। इसका सींग जड़ की तरफ गोल और आगे की तरफ चिपटा तथा चौडा होता है। सींग के सिरे पर अंगुलियों की तरह कई शाखाएँ भी निकली रहती हैं।



एल्क हिरन





इसके सींग की एक खास बात यह होती है कि दूसरे सब हिरन अपने सिर को हिलाये विना सींगों को हिला नहीं सकते, लेकिन, यह सिर को हिलाये विना भी सींग हिला सकता है।

एशिया और यूरोप के उत्तर भाग में तथा उत्तर अमेरिका में एल्क हिरन पाये जाते हैं।

नारवे, स्वीडन, लैपलैंड आदि देशों में एक प्रकार के हिरन पाये जाते हैं जो आकार में काफी बड़े और मोटे होते हैं। ऊँचाई में यह हिरन लगभग तीन हाथ होता है। इसके सींग लम्बाई में तीन हाथ से कम नहीं होते। इसके—नर और माद दोनों के सींग होते हैं।

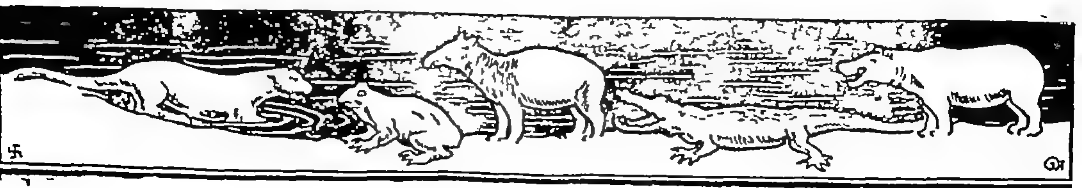


ब्लैक बक

हमलोग गाय और घोड़े से जो काम लेते हैं, नारवे, स्वीडन और लैपलैंड के लोग वे ही सब काम इस हिरन से लेते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि वे इसका दूध खाते हैं, इसकी चर्वी को जलाते हैं, और चमडे से अपनी पोशाक तैयार करते हैं।

कुछ ऐसे जानवर होते हैं जो देखने में वहुत-कुछ हिरन से मिलते-जुलते हैं। अँगरेजी में इन्हें 'ऐन्टीलोप' कहते हैं। ये असल में भेड़ और बैल जाति के जानवर हैं। गाय और बैल से ये वहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं।

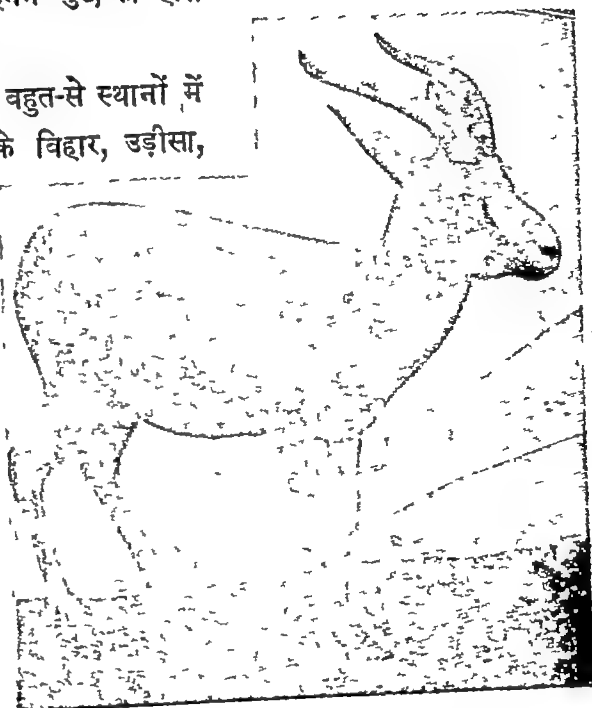
इनके सींगों को यदि अच्छी तरह देखा तो, मालूम होगा कि इनमें और गाय-बैल के सींगों में कोई अन्तर नहीं है। गाय, वैल और वकरे के सींगों की तरह इनके सींग भी खोखले और हल्के होते हैं। उनमें शाखाएँ नहीं निकलतीं और न वे पुराने होकर गिर जाते हैं। उनकी जगह पर नये उग आते हैं। हिरन के सींग ठोस और भारी होते हैं और साल में एक बार पुराने





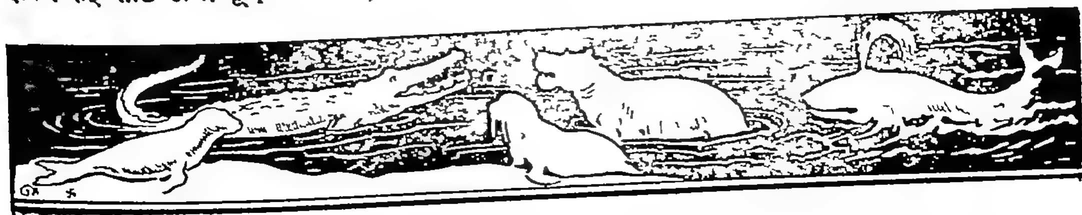
होकर गिर पड़ते हैं। नर और मादा दोनो के सींग होते हैं। ये अफ्रिका मे वहुत वड़ी संख्या में और किस्म-किस्म के पाये जाते हैं। इसके सिवा यूरोप, भारतवर्ष और अमेरिका में भी इस जाति के हिरन पाये जाते हैं। इनमें कुछ का हाल यहाँ लिखा जाता है—

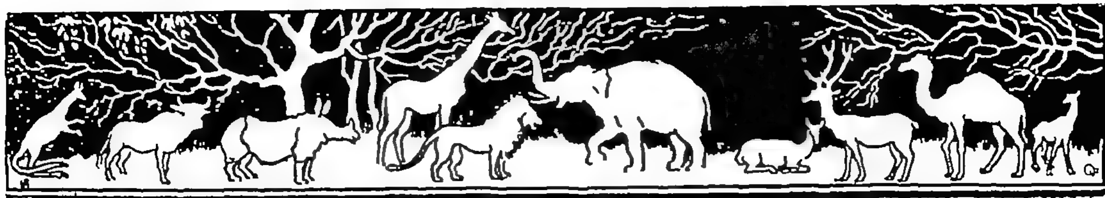
नीलगाय—एशिया और अफ्रिका के वहुत-से स्थानों में ये पाई जाती हैं। नीलगाय हमारे देश के विहार, उड़ीसा, पंजाव, राजपूताना, मध्यप्रदेश और संयुक्तप्रान्त में वहुत देखी जाती है। इसकी देह का रंग हल्का वादामी और पेट के नीचे का भाग नाभि के पास सादा होता है। यह देखने में वहुत सुन्दर होती है। इसकी आँखें वड़ी-वड़ी, कोमल और मन को मोह लेनेवाली होती हैं। इसके सींग लगभग एक फुट लंवे होते हैं। नर और मादा दोनो के सींग होते हैं।



ईरान देश का हिरन

स्प्रिंगवक—ये दक्षिण अफ्रिका में वड़े-वड़े झुण्डों में पाये जाते हैं। इनकी संख्या इतनी अधिक होती है कि एक जगह पर वहुत दिनो तक रहने से इनके लिये चारा नहीं जुटता। यह पशु वड़ा खूवसूरत होता है और इसका गठन सुकुमार होता है। यह सीधा होकर कई फीट ऊँचा कूद सकता है, जिससे इसका नाम स्प्रिंगवक पडा है।





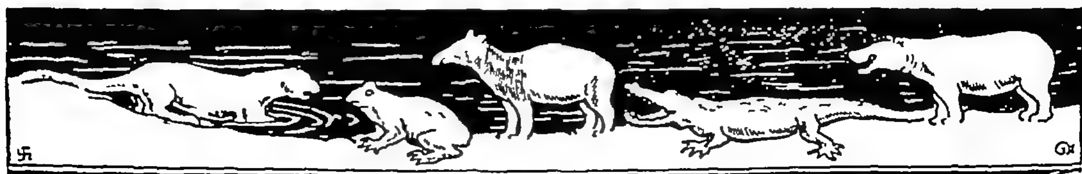
एक जगह से दूसरी जगह जिस समय ये चारे की खोज में निकलते हैं उस समय झुण्ड-के-झुण्ड चलते हुए उसी तरह देख पड़ते हैं जिस तरह बाढ़ का पानी। लाखों की संख्या में ये सट-कर एक साथ चलते हैं; उस समय अगर इनके सामने बाघ-सिंह भी पड़ जायँ और उनके लिये भाग निकलने का कोई रास्ता नहीं हो तो इनके पाँवों के नीचे पड़कर वे कुचल दिये जाते हैं।



हिरन की एक जाति—रेनडिअर

जेम्सबक—अफ्रिका का यह हिरन देखने में कुछ-कुछ गधा जैसा मालूम पड़ता है। इसके सींग बहुत ही मजबूत और तेज होते हैं। बाघ जब इसपर चोट करता है तब यह अपने तेज सींगों को बाघ के पेट के अन्दर घुसेड़ देता है जिससे बाघ को मांस के लोभ में अपनी जान गँवानी पड़ती है।

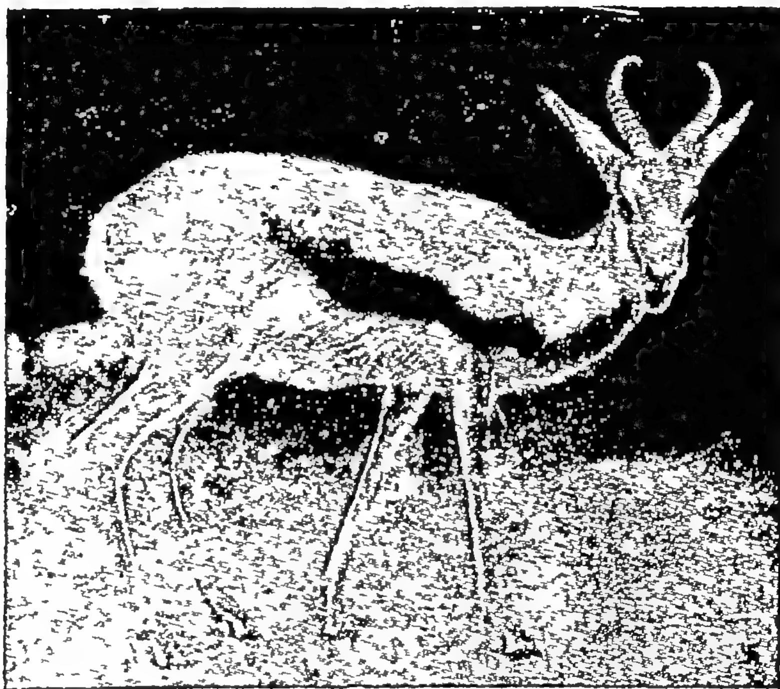
एलैंड—अफ्रिका का हिरन और सब हिरनों से बड़ा बैल के कद का होता है। इसके कंधे तक की ऊँचाई ६ फीट होती है। इसके सींग डेढ़ फीट लम्बे और सीधे होते हैं। रंग हल्का बादामी





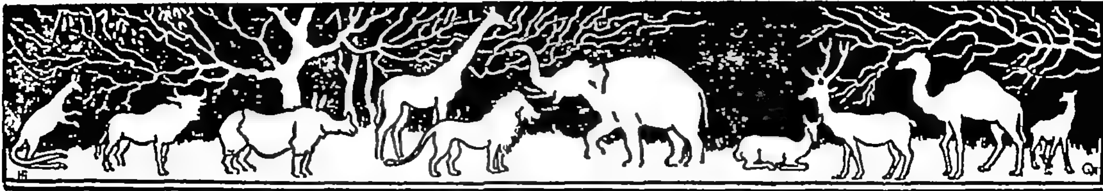
होता है। यह जंगलों, झाड़ियों या पहाड़ियों में आमतौर से रहता है। बरसात के बाद यह इन सब जगहों से निकलकर खुली जगहों में चरने के लिये आता है।

नू-दक्षिण अफ्रिका का जानवर है। यह देखने में बड़ा विचित्र होता है। हिरन, बैल और घोड़ा—तीनों से इसकी शक्ल-सूरत मिलती है। इसका सिर बहुत बड़ा, पाँव बहुत पतले और पूँछ लम्बी होती है। नर और मादा दोनों के सींग होते हैं। देह पर काले और खुरखुरे बाल होते हैं और गरदन पर कड़ा केसर होता है। इसकी पूँछ घोड़े की पूँछ की तरह होती है। यह लंबाई में ६ फीट तक और ऊँचाई में लगभग चार फीट होता है, यह झुण्ड बाँधकर चलता है और उछल-कूद करने और लत्तियाँ चलाने में उस्ताद होता है। इसकी एक जाति—जिसकी पूँछ सफेद रंग की होती है—अब बहुत कम देखी जाती है। काले रंग की पूँछवाले



स्प्रिंग बक





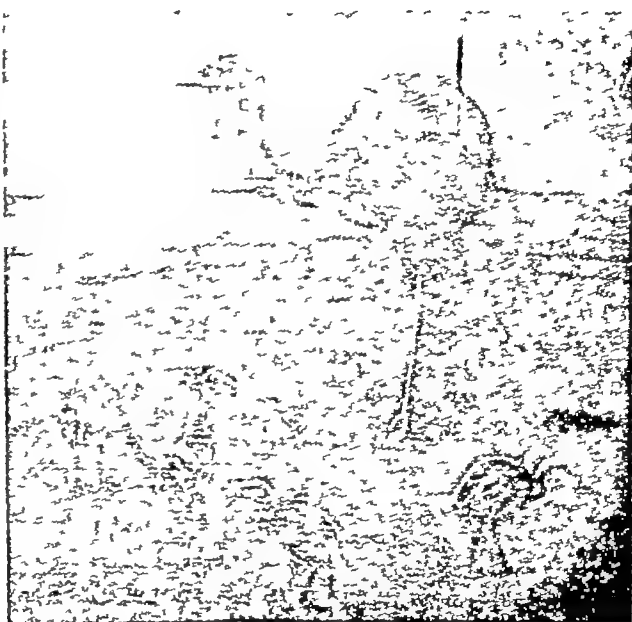
इस समय नहीं उड़नेवाले जो पत्ती पाये जाते हैं उनमें शुतुरमुर्ग सबसे बड़ा और मशहूर है। यह अफ्रिका और अरब देशों में पाया जाता है। इसकी ऊँचाई ६ से ८ फीट तक होती है और यह अपनी लंबी गरदन को चाहे जैसा झुका सकता है और मोड़ सकता है। जंगली हालत में यह जिराफ, जेब्रा और हिरन के साथ रहना पसंद करता है। चूँकि यह पंखों से उड़ नहीं सकता, इसलिये इसके पाँवों मे बहुत जोर होता है। इसके पाँव काफी मोटे और मज-बूत होते हैं। रेगिस्तान मे बालू पर जब यह दौडने लगता है तब ऐसा मालूम होता है

शुतुर-मुर्ग



कि कोई डाकगाड़ी फी घंटे ६० मील के हिसाव से दौड़ रही हो। यह ठीक है कि वहुत देर तक यह इतना तेज नहीं दौड सकता। हाँ, थक जाने पर भी इतना तेज जरूर दौडता है कि घोड़ा भी इसकी वरावरी नहीं कर सकता।

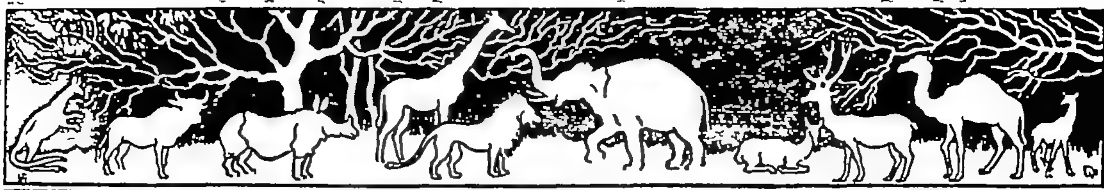
शुतुरमुर्ग एक सीध मे न दौड़कर टेढ़ामेढ़ा दौड़ता है। इसलिये शिकारी इसके नजदीक पहुँच जाता है। शिकारी का सामना होने पर नर शुतुरमुर्ग उससे लड़ता है। इसके पॉव ही इसके हथियार होते हैं। इसके पॉव वड़े मजवूत होते हैं। इसका अंदाजा तुम इसी वात से कर सकते हो कि यह दो आदमियो को एक साथ अपनी पीठ पर चढ़ाकर ले जा सकता है। यह अपने पाँवों से अपने शत्रु पर चोट करके उसे घायल कर दे सकता है।



दक्षिण अमेरिका का शुतुरमुर्ग

इसके अंडे वहुत वड़े-वड़े होते हैं। ४२ दिनों तक यह अंडों को सेता है। नर शुतुरमुर्ग रातभर और मादा दिन-भर अंडों को सेती है। अफ्रिका, फ्रास आदि देशो में लोग शुतुरमुर्ग पालते हैं और साल मे एक वार इसके परो को काटकर इकट्ठा करते हैं। उतने ही पर काटे जाते हैं जिनसे इस पत्ती को सर्दी में कोई कष्ट न हो। यह पत्थर का टुकडा, लोहा या इसी तरह की कड़ी चीजें भी निगल जाता है। एक शुतुरमुर्ग के पेट में पत्थर के वड़े-वड़े टुकड़े,





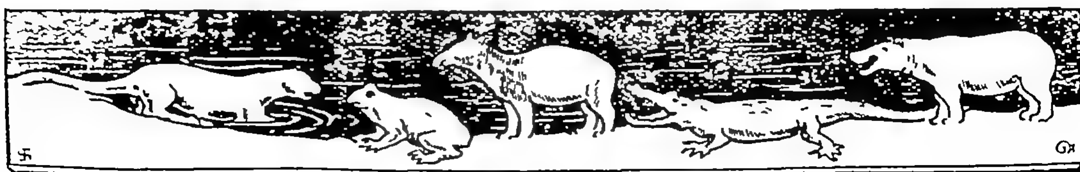
लोहे के सात काँटे, दो चावियाँ, कई पैसे और रुपये, रूमाल, चाँदी का तमगा और माला के १४ दाने पाये गये थे। इतना ही नहीं, वल्कि एक शुतुरमुर्ग छाते के एक हिस्से को भी निगल गया था जिससे वह मर गया।

सभी चिडियाखाने मे शुतुरमुर्ग रक्खे जाते हैं। किसी चिड़ियाखाने में तुम्हें जाने का कभी मौका मिले तो इस पक्षी को जरूर देखना।



पेंगुइन

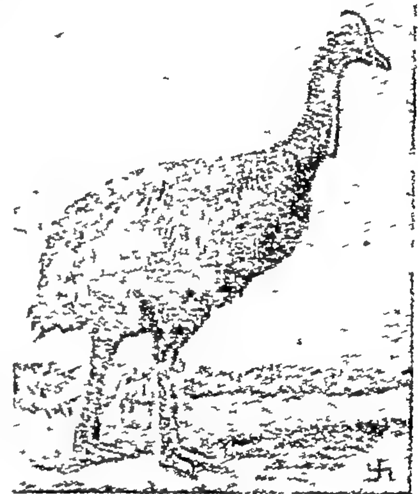
पेंगुइन की तसवीर देखकर क्या तुम बता सकते हो कि यह जमीन पर चलनेवाला कोई जानवर है, या पानी में तैरनेवाली मछली या आकाश में उड़नेवाली कोई चिड़िया ? इस पक्षी की चालढाल देखकर तुम चक्कर में पड़ जाओगे। जमीन पर जब यह चलता है तब मालूम होता है, मानों कोई सज्जन हाथ में छड़ी लिये धीरे-धीरे चल रहे हो! लेकिन पानी मे यह बड़ी आसानी से तैर सकता है। पानी मे यह अपने पाँवों को पीछे की ओर फैला देता है और अपने



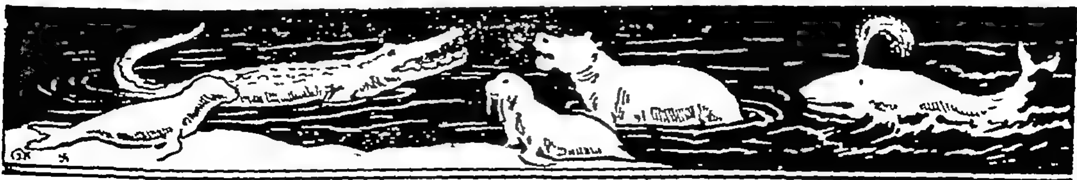


डैनों को एक-एक करके चलाते हुए जब तैरने लगता है तब ऐसा मालूम होता है, मानों कोई आदमी डोंगी मे बैठा हुआ डाँड़ चला रहा हो। पानी मे इसे तैरते देखकर मछली में और इसमें कोई फर्क नहीं मालूम होता। मछली के डैने की तरह इसमें पंख नहीं होते। वे डाँड़ की शक्ल के होते हैं जिससे यह अपने पंखों से उड़ने का काम नहीं ले सकता।

यह दक्षिण ध्रुव-प्रदेश का रहनेवाला है। वहीं यह समुद्र के किनारे रहता है जिससे इसे बहुत चलने-फिरने की जरूरत नहीं होती। मछलियो को पकड़कर यह खाता है। पेंगुइन उड़ क्यो नहीं सकता, जानते हो? हजारो-लाखो वर्षों से यह ऐसे देश में रहता आया जहाँ किसी मनुष्य की पहुँच नहीं हो सकती थी। वहाँ समुद्र के किनारे बर्फीली जगह में इसका कोई दुश्मन नहीं था जिससे इसे उड़कर भागने की जरूरत पड़े। इसीलिये यह उड़ना भूल गया। अभी इसके जो दुश्मन हो रहे हैं वे अगर शुरू मे ही इसके दुश्मन होते तो यह कभी भी उड़ना नहीं भूलता। आज तो मनुष्य उस सुनसान टापुओं मे जहाजों से पहुँचकर इसका शिकार करते हैं।


कसोवरी

पेंगुइन जमीन पर अंडे देता है। झुण्ड-के-झुण्ड पक्षी एक साथ रहते हैं और सब मिलकर जिस समय बोलने लगते हैं, बड़ा शोरगुल मच जाता है। दूर से इन्हे देखो तो मालूम होगा, मानों समुद्र के किनारे लड़के-लड़कियो का झुण्ड हवाखोरी के लिये आया हो। यह इतना सीधा होता है कि मनुष्य को बिलकुल अपने पास पहुँचने देता है। यह भागने की कोशिश नहीं करता। इसकी इस ढिठाई और सीधापन के कारण ही जहाजी लोग इसे मार डालते हैं। इसे मारकर इसके शरीर से





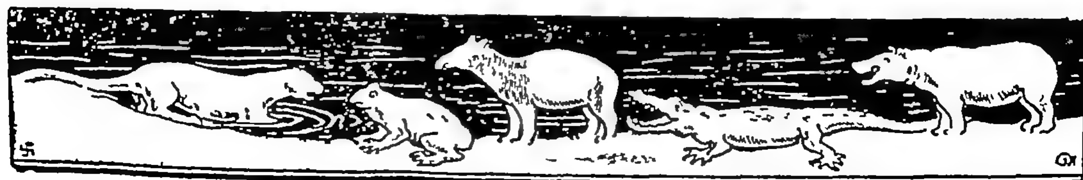
तेल निकाला जाता है और इसके पर बेच दिये जाते हैं जिनसे स्त्रियों के पहनने की भाँति-भाँति की पोशाकें बनती हैं।

मनुष्य में जिस तरह ब्याह होता है ठीक उस तरह तो नहीं, लेकिन पेंगुइन पक्षी के नर-मादा में भी एक तरह का ब्याह होता है जैसा और किसी पशु-पक्षी में नहीं देखा जाता। साल में एक समय नर पेंगुइन एक पत्थर लेकर मादा पेंगुइन के पाँव के पास रखता है। मादा पेंगुइन को अगर ब्याह के इस प्रस्ताव पर कोई उज्र नहीं होता तो वह चोंच से उस पत्थर को उठाकर अपने पास ले आती है। इसका मतलब होता है कि उन दोनों का 'ब्याह' हो गया। एक बार एक बड़ी मजेदार घटना हो गई थी। एक साहब दक्षिणी मेरु-प्रदेश में एक पत्थर के ऊपर बैठकर कुछ लिख रहा था। इसी समय एक पेंगुइन वहाँ पहुँचकर उसके पतलून के नीचे के हिस्से को ठुकराने लगा। साहब बार-बार उसे वहाँ से भगा देने की चेष्टा करने लगा, मगर वह माननेवाला नहीं था। बाद मे साहब ने देखा कि पेंगुइन ने उसके पाँव के पास एक पत्थर लाकर रख दिया है। साहब के पतलून को ही वह मादा पेंगुइन समझने की भूल कर बैठा था!



कस्टोवर्मा की एक उपजाति

आस्ट्रेलिया और न्यूगिनी का कसोवरी पक्षी भी शुतुरमुर्ग की तरह उड़ नहीं सकता। यह पाँच फीट ऊँचा होता है। इसके पर बाल की तरह होते हैं। यह शुतुरमुर्ग की तरह बहुत नहीं घूमता-फिरता। यह जंगलों में रहता है। यह अपने पाँवो के पंजों से हथियार का काम लेता है। एक बार एक शिकारी दो ताजी कुत्तों को साथ लेकर कसोवरी का शिकार करने गया। कुत्तों ने फौरन उसपर हमला कर दिया, लेकिन वह कुछ भी नहीं डरा और अपने पाँव





अन्धाधुन्ध चलाकर एक कुत्ते को वहीं जमीन पर लिटा दिया। दूसरे कुत्ते ने उसके कलेजे को चीर-फाड़ डाला, लेकिन इतने पर भी वह लड़ता ही रहा। अगर शिकारी बीच में पड़कर दोनों को छुड़ा नहीं देता तो वह उस कुत्ते को भी मार डालता। वह शिकारी दयालु था। उसने कसोवरी के घाव पर मरहम-पट्टी कर दी और उसे भरपेट खाने के लिये दिया। इसके बाद उसे छोड़ दिया और वह जंगल में चला गया।

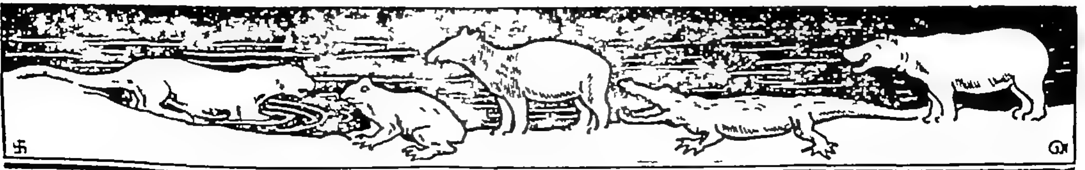






साँप

साँप संसार के प्रायः सभी देशों में पाये जाते हैं। साँप के दो जातियाँ होती हैं—एक वह जो विषैली होती है और दूसरी जो विषैली नहीं होती। अकेले हिन्दुस्तान में ही कुल मिलाकर तीन सौ से अधिक जातियों के विषवाले और बिना विषवाले साँप पाये जाते हैं। इनके अलावा समुद्र में पाये जानेवाले साँप अलग ही होते हैं। समुद्र मे जो साँप पाये जाते हैं वे सब-के-सब बहुव जहरीले होते हैं। कुछ साँप फणवाले होते हैं और कुछ के फण नहीं होते। हमारे देश में साँप केवल वन जंगलों और झाड़ियो में ही नहीं, बल्कि खेत, रास्ता, घाटबाट, सड़क, गली, फूस के घर और उसकी कच्ची दीवारो और छप्परो में—यहाँ तक कि बड़े-बड़े मकानों और महलो के अन्दर भी देखे जाते हैं। गाँवों में जो लोग रहते हैं वे इतने गरीब होते हैं कि जूते पहनकर नहीं चल सकते। अँधेरी रात में काफी रोशनी भी वहाँ नहीं होती। इसी से साँप के काटने से हर साल हजारो आदमी हमारे देश मे मर जाते हैं।



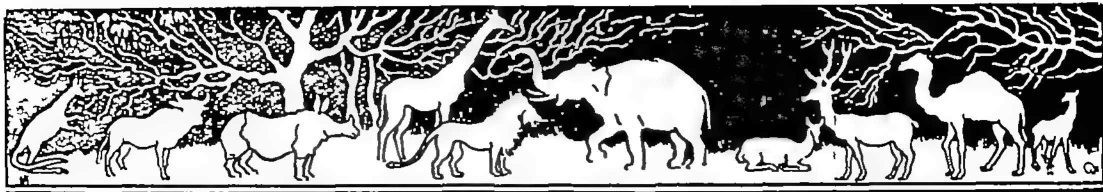


जितने विषैले साँप होते हैं उन सबके जहर की तेजी एक समान नहीं होती। अपने देश के गेहुमन (कोब्रा), किंग कोब्रा, करैत, साँखर, कोरल बड़े ही जहरीले होते हैं। संसार में जितने विषैले साँप होते हैं उनमें किंग कोब्रा ही सबसे बढ़कर विषैला समझा गया है। यह सिर्फ सबसे बढ़कर विषैला ही नहीं होता, बल्कि जहरीले साँपों में सबसे ज्यादा लंबा भी होता है। इसका देशी नाम 'हमियादराद' है। यह बस्तियों में रहना पसंद नहीं करता। यह आम तौर से घने जंगलों में पाया जाता है। यह हिमालय की तराई के घने जंगलों, सुन्दरवन, आसाम, उड़ीसा, दक्षिण भारत, बर्मा, स्याम, इंडोचीन, मलय द्वीप, दक्षिण चीन और जावा, सुमात्रा, बोर्नियो तथा फिलीपाइन द्वीपों में खास तौर से पाया जाता है। बर्मा और स्याम के घने जंगलों में सागौन के पेड को काटकर हाथियों द्वारा उन्हें खींचकर जंगल से बाहर लाते हैं। वहाँ किंग कोब्रा के काटने से बड़े-बड़े बलवान् हाथी भी मर जाते हैं। किंग कोब्रा की लंबाई आम तौर से १४–१५ फीट होती है। लेकिन १८ फीट तक लंबा भी यह देखा गया है। इसका रंग फीका हरा और फीका पीला या कत्थई होता है। इसकी देह पर काले रंग के गोल-गोल धब्बे होते हैं। यह पेड़ पर भी चढ़ सकता है और पानी में भी तैर सकता है। तैरते समय यह अपने सिर के एक बड़े हिस्से और गर्दन को ऊपर उठाये रहता है।

साँपों में हमियादराद राक्षस होता है, क्योंकि यह दूसरे साँपो को निगल जाता है। जब साँप नहीं मिलते तो यह चूहों, मेढकों और छोटी-छोटी चिडियों को भी पकड़कर अपनी भूख मिटाता है। चाहे जिस किसी साँप को देखते ही यह निगल नहीं जाता—बिना विषवाले साँप को ही यह अपना खाद्य बनाता है।

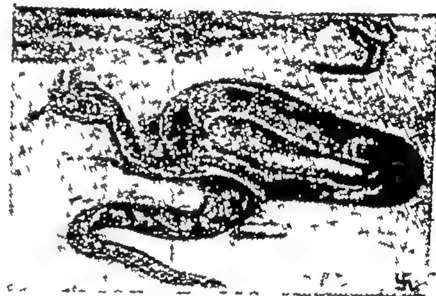
कलकत्ते के चिड़ियाखाने में कई किंग कोब्रा हैं। वे शीशे के बक्स मे बंद रहते हैं। रक्षक ऊपर से बक्स का ढक्कन खोलकर एक बिना विषवाले साँप को नीचे गिरा देता है। उस साँप के नीचे गिरते ही हमियादराद उसपर टूट पड़ता है और उसकी गरदन पकड़कर सिर की ओर से उसे धीरे-धीरे निगलना शुरू कर देता है। इस तरह १०–१५ मिनटों में वह साँप



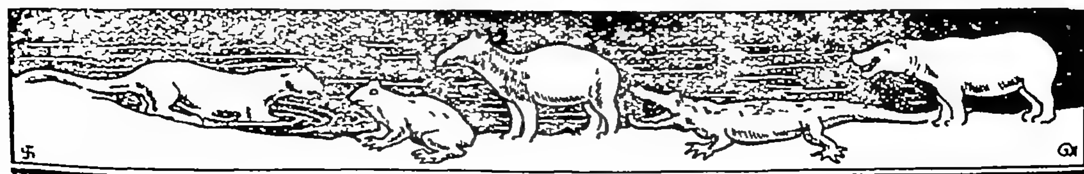


को बिलकुल निगल है और भरपेट भोजन पाकर आराम करता है। वह अपने रक्षक को कुछ-कुछ पहचानता भी है। उसके बक्स के पास जब रक्षक पहुँचता है तब आहार पाने के लिये वह अपने सिर को उठाने लगता है। इतना ही नहीं, बल्कि रक्षक जब साँप को लेकर वहाँ पहुँचता है, वह खिसककर उस छेद के सामने आ जाता है जिससे होकर उसका रक्षक साँप को नीचे गिराता है।

मादा साँप सूखी पत्तियों को इकट्ठा करके अपना घोंसला बनाती है और उसी पर अंडे देती है। इसके बाद अंडों को अपने शरीर की गेडुलियों से लपेटकर तब तक सेती है, जबतक कि उनमें से बच्चे नहीं निकलते। इस बीच में यह अपने आहार की खोज में एक बार भी नहीं निकलती। जिस समय यह अपने अण्डों को सेती रहती है उस वक्त अगर कोई आदमी या जानवर वहाँ पहुँच जाय और उसके पहुँचने से जरा भी गोलमाल हो तो फौरन् काटने दौड़ती है।


सींग वाला साँप

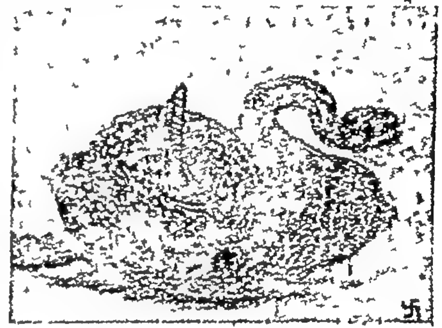
एक बार की बात है। वर्मा देश का एक आदमी एक जंगल में होकर जा रहा था। संयोग से उसका पाँव एक हमियादराद साँप के घोसले पर पड गया। साँप उस समय अंडों को गेडुलियो से लपेटे सोया था। पत्तों की खड़खड़ाहट सुनते ही चौंक पडा और उस आदमी का पीछा करने लगा। वह आदमी दौडता हुआ बहुत दूर आगे निकल गया और जब उसने घूमकर देखा, उस समय भी साँप उसका पीछा ही कर रहा था। साँप से अपना पीछा छुडाने के लिये वह एक छोटी नदी में कूद पडा; लेकिन वहाँ भी साँप ने उसका पीछा नहीं छोडा। अब उस आदमी ने अपनी जान पर खतरा देखकर जल्दी से अपनी पगडी को खोलकर नदी के किनारे फेंक दिया। साँप उस पगडी को ही अपना शत्रु समझकर बार-बार उसी पर चोट करने लगा। तबतक वह आदमी छिपकर वहाँ से खिसक गया।





किंग कोब्रा में बहुत ज्यादा विष होता है। इसके काटे हुए किसी मनुष्य या जानवर के जिन्दा रहने की बात अब तक नहीं सुनी गई है। जिस समय यह चोट करता है, इसके तेज दाँत से काटे हुए स्थान में घाव हो जाता है और साथ ही दाँत से निकलकर जहर उस घाव में चला जाता है। इसके बाद उस आदमी के खून मे जहर फैल जाता है जिससे उसका खून जमने लगता है और वह मर जाता है।

गेहुमन, करैत, कोरल आदि साँप भी बहुत जहरीले होते हैं। करैत के शरीर पर सादे धब्वे होते हैं। कोरल साँप का शरीर चित्रित—गाढ़ा लाल और काला—होता है। सिर के नीचे डेढ़-दो इंच लाल इसके बाद फिर इसी तरह काला—इस प्रकार सादे, लाल और काले रंगो के धब्बो से ढका रहता है। यह काफी लंबा भी होता है। अफ्रिका का लम्बा साँप किंग कोब्रा के समान ही भयानक होता है और बिना छेड़े ही मनुष्य पर चोट कर बैठता है।



झुनझुना साँप

हमारे देश में एक किस्म का बिना विष वाला साँप होता है, जिसे धामन कहते हैं। यह मनुष्य पर चोट नहीं करता, बल्कि देखते ही भागने की चेष्टा करता है। लेकिन यह गाय के थनों से दूध पी जाता है। यह १२ फीट तक लंबा होता है। दलदल जमीन में यह आम तौर से देखा जाता है।

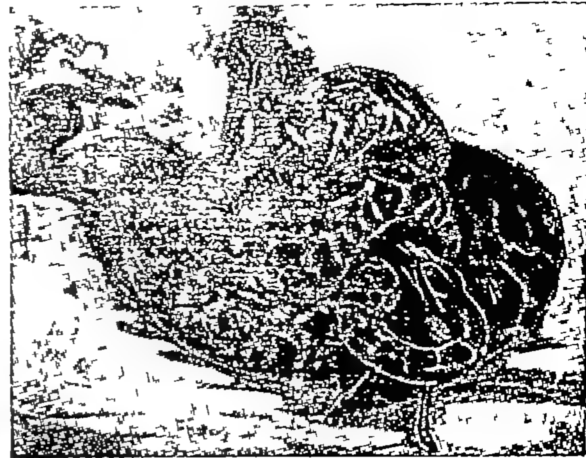
सुनसान पाकर यह पानी से चुपके से निकलता है और वहाँ चरती हुई किसी गाय को देखकर उसके पिछले पाँवो में लिपट जाता है और अपना सिर थनों के पास ले जाकर उनमें से दूध चूसने लगता है। इस प्रकार इच्छा-भर दूध पीकर यह गाय को वहीं छोड़कर चला जाता है। कहते हैं कि जिस गाय के दूध को एक बार भी धामन पी ले, फिर वह दूध दुहने लायक नहीं रह जाती।





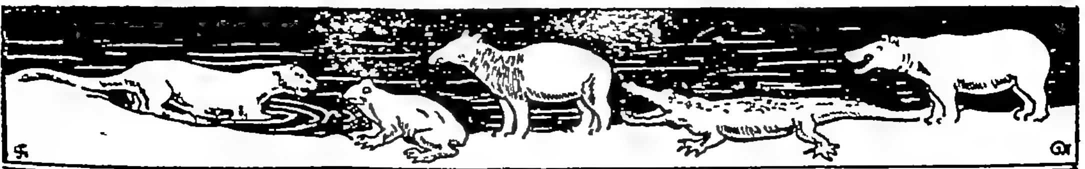
गेहुमन साँप कई तरह के होते हैं। आम तौर से यह साँप छः फीट तक लंबा होता है। गेहुमन, करैत, आदि साँप गाँवों में मिट्टी और फूस के घरों मे पैठ जाते हैं और लोगों को काट खाते हैं। इनके काटने से ही हमारे देश में ज्यादा लोग मरते हैं।

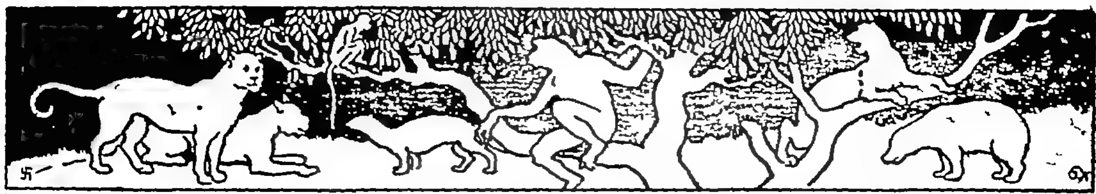
एक तरह का और साँप होता है जिसे 'रैटिल' या 'झुनझुना साँप' कहते हैं। इस साँप की पूँछ के आखरी हिस्से मे गोल गोल हड्डियों की चकत्तियाँ होती हैं जिनसे इसके चलते वक्त खर-खर आवाज होती है। झुनझुना जैसी आवाज होने के कारण ही इसका नाम झुनझुना साँप पड़ गया है। इस आवाज को सुनकर दूसरे जानवर जान जाते हैं कि रैटिल साँप आ रहा है और वे जान लेकर भागते हैं। नहीं तो इस साँप का जहर इतना तेज होता है कि इसके काटने से कोई बच नहीं सकता। यह साँप खास तौर से उत्तर अमेरिका में पाया जाता है। यह लंबाई मे ८ फीट से ज्यादा नहीं होता। लेकिन यह बड़ा भयानक होता है। इसका काटा हुआ आदमी नहीं बचता। यह खरगोश, चूहा, मूसा, मेढक आदि छोटे-छोटे जन्तुओं को अपना आहार बनाता है।



अजगर

सब साँपों के विष-दाँत एक समान नहीं होते। किसी-किसी का यह दाँत पिचकारी की नली के समान खोखला होता है। किसी-किसी साँप के दाँत के अन्दर छिद्र नहीं होता। इसके बदले दाँत में नली के समान कटा हुआ गड्ढा होता है। यह गड्ढा इतना बड़ा होता है कि विष उस में भरकर उपलाता नहीं। विष उसी में रह जाता है। इस तरह के विष-दाँत करैत, गेहुमन आदि





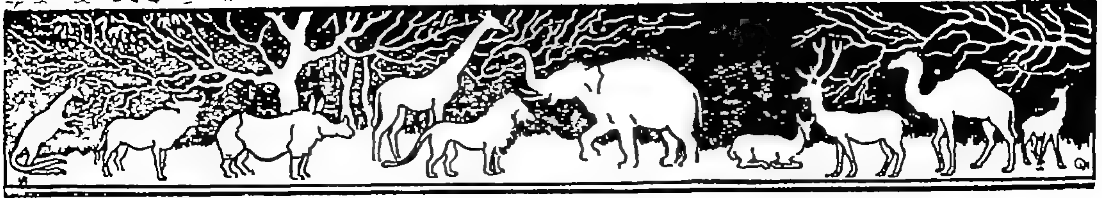
साँपों के होते हैं। जिन साँपों के फण नहीं होते उनके विष-दाँत काँच की पिचकारी के समान खोखले होते हैं।



अनाकोडा

अब तुम्हें कुछ ऐसे साँपों का हाल बताता हूँ जो आकार में बहुत बड़े होते हैं, लेकिन उन्हे विष बहुत कम होता है। वे अपने शिकार को पकड़-कर उसे जीते-जी निगल जाते हैं। वे अपने शिकार को गेडुलियो से लपेट-कर कसते हैं। उनका यह कसना इतनी मजबूती से होता है कि शिकार का दम ही नहीं निकल जाता, बल्कि उसकी रीढ़-पसलियाँ तक चकनाचूर हो जाती हैं इस। जाति के साँप मनुष्य या जानवर को विषैले साँपो की तरह काट नहीं खाते। इस जाति के साँप को 'अजकर' कहते हैं। अजगर साँप एशिया, अफ्रीका, दक्षिण, मध्य और उत्तर अमेरिका तथा वेस्ट इंडीज में कमवेश पाये जाते हैं। भारत में जो अजगर होता है वह लंका, दक्षिण चीन, मलय द्वीप और जावा में पाया जाता है। अजगर साँप की तीन जातियाँ होती हैं—अजगर, बोया और अनाकोडा। ये सब साँप पेड़ पर चढ़ सकते है और पानी में तैर सकते हैं। अजगर ११-१२ से, ३० फीट तक लंबा होता है। दक्षिण अमेरिका के ब्राजिल और





पेरू में पाये जानेवाले अनाकोंडा बहुत ही भयानक होते हैं। यह साँप पेड पर चढ सकता है, पानी में, तैर सकता है और मनुष्य या किसी जानवर पर विना कारण चोट कर सकता है। इसकी लँबाई ३० से ४० फीट तक होती है।

अजगर झाडीदार पथरीली जमीन मे या पहाडियो और छोटी-छोटी नदियों के किनारे की झाड़ीदार जमीन में रहना पसंद करता है। चूँकि पानी में डुबकियाँ लगाना इसे अच्छा लगता है, इसलिये पानी के पास यह खास तौर से देखा जाता है। पानी के पास रहने से चिडियाँ और जानवर आसानी से इसे शिकार के लिये मिल जाते हैं।



पेडपर चढ़ने वाला अजगर

पत्थर की चट्टान की तरह अजगर चुपचाप अपने शिकार की घात में तबतक पडा रहता है, जबतक कोई जानवर इसके इतने नजदीक न पहुँच जाय कि यह उसपर चोट कर सके। शिकार के पहुँचते ही यह अपना बहुत बड़ा मुँह खोलकर धनुष से छूटे हुए तीर की तरह उस-पर-चोट करता है और जबड़ों के अन्दर शिकार के आते ही फौरन् यह अपनी गेंडुलियो में उसे कसने लगता है। इस तरह कसे जाने पर शिकार का दम घुटने लगता है और उसकी मृत्यु हो जाती है!

अजगर पेड़ पर चढ़ने मे भी उस्ताद होता है। पेड़ की डालियो मे अपने धड़ को लपेटे हुए घंटो तक यह विना हिले-डुले पड़ा रहता है और टकटकी बाँधकर जमीन की ओर देखता रहता





है। उधर होकर कोई शिकार गुजरता है तो यह फौरन् उसे पकड़ लेता है। दक्षिण अमेरिका की सबसे बड़ी नदी अमेजन की शाखानदियो में अनाकोंडा नाम का जो अजगर पाया जाता है वह बढ़ने पर चालीस फीट या इससे भी ज्यादा लंबा होता है। यह पेड पर मजे में चढ जाता है। अकसर यह नदियों या नालों मे या चट्टान पर कटे हुए पेड़ की तरह शिकार की ताक मे पड़ा रहता है। अनाकोंडा पानी से बाहर जमीन पर उतना फुर्तीला नहीं रहता जितना पानी में या पेड़ों पर। यह मनुष्य पर भी चोट करता है।

अजगर साँप विषैला नहीं होता। विष की थैली उसके दाँतों की जड़ में होती ही नहीं।

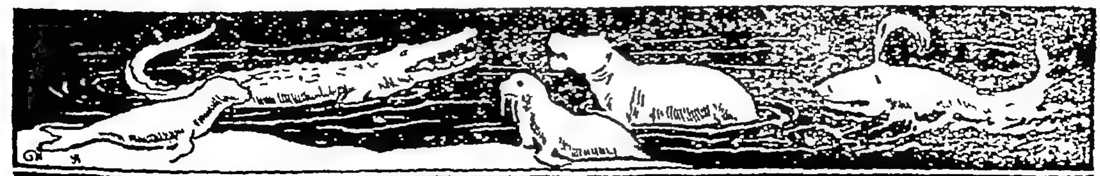
अजगर को विष क्यो नहीं होता और दूसरे साँपों को क्यों होता है, इसके बारे में एक मजेदार कहानी तुम्हें सुनाता हूँ—

इस समय जितने विषैले साँप पाये जाते हैं उन सब को अजगर से विष मिला है। बहुत पुराने जमाने में सिर्फ अजगर ही विषैला था। उस जमाने में अजगर का रंग बिलकुल सफेद था, और उसका विष इतना तेज था कि अगर वह सड़क से चलते हुए किसी मनुष्य के पाँवों के चिह्नों को काट खाता था, तो उस मनुष्य की—चाहे वह कितनी ही दूर आगे चला गया हो—मृत्यु हो जाती थी। लेकिन अजगर खुद इस बात को नहीं जानता था कि उसके जहर में इतनी तेजी होती है। इसलिये एक दिन उसने एक कौए से कहा—

"अरे कौए, तू जाकर देख कि जब मैं चलते हुए मनुष्य के पाँवों के चिह्नों को काट खाता हूँ, तब इससे उसकी मृत्यु होती है या नहीं?"

इस पर कौआ पड़ोस के एक श्मशान मे गया और वहाँ जाकर देखा—जैसा वहाँ वालों में रिवाज था—लोग हँस रहे हैं, गा रहे हैं, नाच रहे हैं, ढोल पीट रहे हैं और उछल-कूद मचा रहे हैं।

यह देखकर कौआ वहाँ से लौटा और अजगर से कहा कि तुम्हारे विष से मृत्यु होना तो दूर रहा, उलटे लोग खुशियाँ मना रहे हैं।





यह सुनकर अजगर इतना क्रोधित हुआ कि वह एक पेड़ पर चढ़ गया और अपने सारे विष का थूक दिया। इसके बाद दूसरे रेंगनेवाले जानवर वहाँ पहुँचे और उस विष को लील गये। उसी विष के असर से आज तक लोगों की मृत्यु होती है।

जिस पेड़ पर अजगर थूका, वह भी विषैला हो गया और उसका रस आज तक वाणों को विष से बुझाने में काम आता है।

इसपर अजगर ने उन दूसरे जानवरों से यह वादा कराया कि वे तब तक किसी प्राणी को नहीं काटेंगे जबतक वे छेड़े न जायँ।

गेहुमन ने कहा—"अगर मुझे कोई इस तरह से छेड़ेगा जिससे मेरी आँखों में चकाचौंध हो जाय और एक दिन में सात वार आँसू गिरें, तो मैं डसूँगा।"

वाघ ने भी ऐसा ही कहा—जिसके दाँत को जंगली लोग उतना ही विषैला समझते हैं, जितना अजगर और दूसरी किस्म के साँपों के। उन्हें अपना विष रखने दिया गया।

जल में रहनेवाले साँप और मेढक ने कहा कि हमलोग अपनी इच्छा से विना छेड़े जाने पर भी डसेंगे। इस पर उनका विष पिवल़ गया और उनके दाँत बिलकुल बेकार बन गये।

दक्षिण अफ्रिका के जंगलों में कभी-कभी अजगर और चीता बाघ के बीच भीषण युद्ध देखा जाता है। कई शिकारियों ने इस युद्ध का हाल लिखा है। इस भिड़न्त में या तो किसी एक की मृत्यु हो जाती है या दोनों मर जाते हैं।

एक शिकारी ने लिखा है—अजगर झाड़ी में छिपा हुआ घात में था कि उसके नजदीक होकर उसका कोई शिकार गुजरे और वह उसपर चोट करे। उधर चीता भी अपने शिकार वन्दर, वकरे या मुर्गे की तलाश में इधर उधर घूम रहा था।

अजगर अपने सामने एक चलते हुए जानवर को देखकर उसपर चोट कर वैठा और उसे अपनी गेड़ुलियो में कसने की चेष्टा करने लगा। चीते को अजगर ने अपने तीन





गेंडुलियों मे कस लिया था; उसका सिर उसकी चौथी गेंडुली के नीचे छिपा हुआ था, जिससे चीते के जबड़ों के दंश से उसकी रक्षा हो सके।

सॉंप विलकुल हिलडुल नहीं रहा था। चीता उसकी पकड़ में आ गया था। वह अपने शिकार के कमजोर पड़ने और उसके ठंढे हो जाने की वाट जोह रहा था।

इधर चीता अपने आगे के एक पंजे और पीछे के पाँव से साँप की खाल को खरोंच-खरोच कर उसकी धज्जियाँ वना रहा था। किन्तु इतने पर भी साँप हिलडुल नहीं रहा था। कभी-कभी उसकी देह की कोई हरकत भी होती थी, तो सिर्फ अपनी पकड़ को और मजवूत वनाने के लिये।

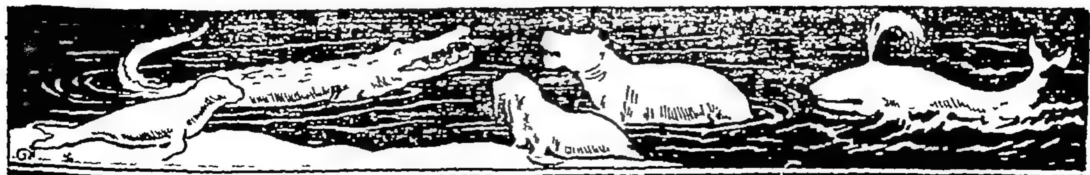
आखिर पीड़ा से घवराकर और चीते की छाती को अपनी गेंडुली में कसने के खयाल से—जिससे चीते का काम जल्द तमाम हो जाय—साँप ने अपनी गेंडुली के नीचे से अपने सिर को हटा लिया।



वोया

इस मौके को पाते ही चीते ने वड़ी फुर्ती से, जब तक साँप अपनी गेंडुली से उसकी छाती को कसे-कसे, चोट की और अजगर की गरदन उसके जवड़े के अन्दर आ गई। चीते के दाँत साँप के माँस और हड्डी को काटते हुए आर-पार कर गये और अजगर वहीं ढेर हो गया।

लड़ाई खत्म हुई। साँप की गेंडुलियाँ धीरे-धीरे कमजोर होने लगीं और फिर खुलने लगीं। साँप घास पर छटपटाने और लोटने-पोटने लगा। और चीता? उसके पिछले पाँव और देह का पिछला हिस्सा कुचलकर विलकुल लोथ जैसा वन गया था। लेकिन अव भी उसकी तेजी नहीं गई थी। अपने अगले पाँवों पर शरीर का भार रखकर वह अजगर की हरएक हरकत





को बड़े गौर से देख रहा था और इस बात के लिये .तैयार था कि जरूरत पड़ने पर फिर लड़ाई की जाय।

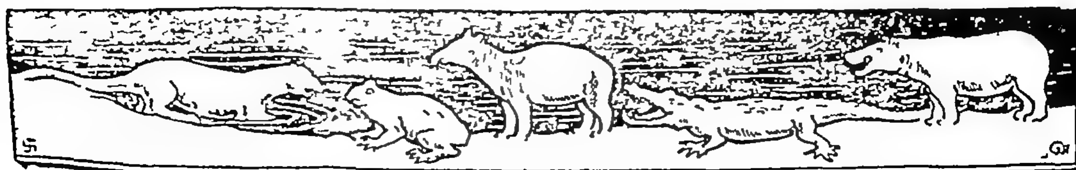
अफ्रिका के पोर्ट एलिजाबेथ अजायबघर के रक्षक साइमन्स साहब ने एक आपबीती घटना का हाल यों लिखा है—

एक बार मैं खरगोश के शिकार की खोज में जंगल में घूम रहा था। पेड़ों के झुरमुट में मैं डालियों के सूखे पत्तों को हटा-हटाकर आगे बढ रहा था। एकाएक मेरा हाथ किसी चीज पर पडा जो खिसकती हुई मालूम पडी। वह मुझे ठंढी मालूम हुई। मैंने फुर्ती से अपना हाथ पीछे खींच लिया, क्योंकि मुझे ऐसा लगा कि मेरा हाथ काले मम्बा साँप से छू गया है। लेकिन वह मम्बा साँप न होकर अजगर था। उस अन्धेरे में अजगर ने चोट की और अपने मुँह से मेरी कमीज और कंधे की मांसपेशियों को पकड लिया। इसके बाद अपनी पूँछ से मेरे शरीर को इधर-उधर टटोलने लगा, जिससे वह अपनी गेंडुलियों से मुझे कस सके। उसकी पूँछ को मैंने दोनों हाथों से कसकर पकड लिया। मेरे बचने का एक उपाय यही था कि उसकी पूँछ द्वारा अपने शरीर या गरदन को लपेटे जाने से बचाये रक्खूँ। इसलिये मैं अपनी सारी ताकत लगाकर अजगर की पूँछ को पकड़े हुए था।

इस हालत में कुछ देर तक रहने के बाद मेरे मन में एक खयाल उठा। मैंने अजगर की गरदन को अपने दाँतों से पकड़ लिया और खूँखार जंगली जानवर की तरह दाँतों को खूब जोर से दबा दिया। दाँत धँसकर उसकी रीढ तक पहुँच गये।

इसके एक क्षण बाद साँप की मासपेशियाँ ढीली होने लगीं और उसका शरीर छटपटाने लगा। फिर अपने कमरबंद से लटकते हुए छुरे को पकड़कर उससे मैंने अजगर के सिर को काटकर धड से अलग कर दिया।

एक बार किसी चिडियाखाने में एक अजगर को उसका रक्षक मुर्गी का बच्चा लेकर खिलाने जा रहा था। अजगर तीर की तरह बडी तेजी से झपटा, लेकिन उसका निशाना चूक गया और मुर्गी को



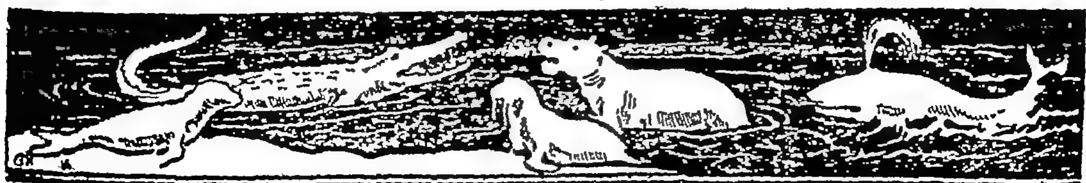


पकड़ने के बदले रक्षक के हाथ को पकड़ लिया। इसके बाद फौरन अजगर ने उस आदमी की बाँह और गरदन को अपनी गेंडुलियो से लपेटकर कसना शुरू कर दिया और उसे अपने काबू मे कर लिया। वह जरा भी हिलडुल नहीं सकता था। लेकिन उसी समय चिड़ियाखाने के और दो रक्षक वहाँ दौड़ आये और बहुत कोशिश करके अपने साथी को अजगर के पंजे से छुडाया। अजगर ने जो दाँत गड़ाये थे उन दाँतों को तोड़कर ही उस रक्षक की जान बचाई गई।

इसी से तुम समझ सकते हो कि अजगर कितना खूँखार होता है! वह एक बार अपने जबड़ों से जिस चीज को पकड़ लेता है फिर उसे मजबूर हुए बिना छोड़ता नहीं। पेड़ पर चढ़कर अपनी पूँछ को डाल से लपेट लेता है और सिर के बल लटका रहता है। जहरीले साँपों से जितना लोग डरते हैं उतना अजगर से नहीं; क्योकि अजगर का जब पेट भरा रहता है तब आदमी पर चोट नहीं करता।

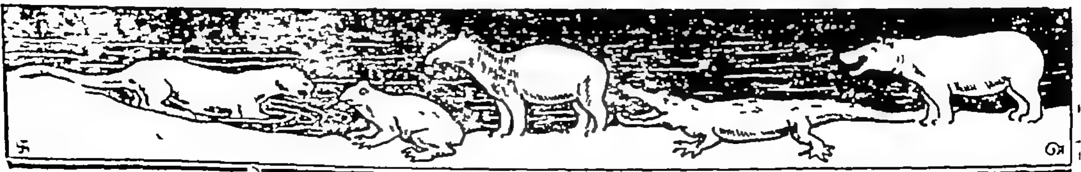
एक बार एक चिड़ियाखाने मे एक अजगर बहुत दिनो तक भूखा रहने के बाद नींद से जगा तो एक कम्बल को निगल गया!

लन्दन के चिड़ियाखाने मे एक ही पिंजड़े मे दो अजगर रक्खे गये थे। उनमें एक ग्यारह फीट और दूसरा नौ फीट से कुछ ज्यादा लंबा था। रक्षक ने उस पिंजड़े मे दो कबूतर डाल दिये। उसने अपने सामने ही बड़े अजगर को एक कबूतर निगलते देखा था। दूसरे दिन सुबह मे जब वह साँपो को देखने गया तब वहाँ एक ही अजगर को पाया जो बहुत ही फूला हुआ मालूम पड़ता था। छोटा अजगर पिंजड़े से गायब था। बड़ा अजगर उसे निगल गया था। बड़े अजगर ने एक कबूतर को निगलकर दूसरे कबूतर को उस छोटे अजगर के मुंह में चिपके हुए देखा। वह झपटा और कबूतर के साथ-साथ उस साँप के सिर को भी अपने दाँतों से पड़क लिया। उसके दाँत गड़ गये जिससे वह छोटे साँप को अपने मुंह से नहीं निकाल सका। इसलिये उसने कबूतर के साथ-साथ अपने साथी अजगर को भी अपने पेट में डाल लिया। फिर २८ दिनो तक उस साँप ने कुछ भी नहीं खाया इसके बाद जब नींद से जगा तब उसे एक मोटा कबूतर खाने के लिये दिया गया।



वीवर

उत्तर अमेरिका और कनाडा देशों में चूहे की किस्म के छोटे जानवर पाये जाते हैं जिन्हें वीवर कहते हैं। वीवर करीव दो फीट लंबा होता है और इसकी पूँछ करीव दस इंच लंबी होती है। इसकी जैसी पूँछ किसी भी जानवर की नहीं होती। वह चिपटी होती है और उसपर वाल न होकर चुंदरे होते हैं। इसी से यह पानी में तैरते समय पतवार का काम लेता है। यह पानी में





तैरना वहुत पसंद करता है, इसलिये यह पानी के पास ही अपना घर वनाता है। इसके घर वनाने की कारीगरी को देखो तो तुम इसे पक्का इंजीनियर ही समझोगे। यह नदी के किनारे पानी के नीचे एक या दो विल वनाता है और उसी में आराम से रहता है। लेकिन यह जानता है कि गर्मी में जव नदी मे पानी कम हो जायगा, किनारे मे इसका विल इसके दुश्मनों की नजरो मे पड़ जायगा। इसलिये एक पक्के इंजीनियर की तरह यह नदी की धारा के आरपार वाँध वाँधना शुरू कर देता है। इससे गर्मी के दिनो मे नदी का पानी वहने नहीं पाता है; और वाढ़ आने पर वीवर उस वाँध में सूराख कर देता है जिससे काफी पानी वह जाय और इसके घर मे पानी घुसने न पावे।

वाँध वाँधने के लिये वीवर सामान कहाँ से लाता है? यह सामान इसे किनारे मे ही मिल जाता है। इसके दाँत वहुत मजवूत होते हैं जिससे यह पेड़ की डालियों को काट डालता है। पेड़ पर चढ़कर अपने पिछले पाँवों के वल वैठ जाता है और अपने अगले पंजो को पेड़ के तने पर रख देता है। तव यह तने के चारों तरफ दाँतों से कुतरना शुरू कर देता है। कुतरते-कुतरते जव यह देखता है कि अव पेड़ गिरने-गिरने पर है, यह उछलकर पानी मे चला जाता है या किसी ऐसी जगह पर हट जाता है जहाँ कोई खतरा नहीं हो। इसके वाद ही पेड़ गिरता है और वीवर पेड़ की डालियो को काटकर अगल कर देता है तथा तने को छोटे-छोटे टुकड़ो मे काट डालता है। लकड़ी के इन्हीं कुंदों से यह धारा के आरपार वाँध वाँधना शुरू करता है। कुंदों को चौड़ा करके रखता है। वीवर पानी में डूवकर कीचड़ ले आता है और उसी कीचड़ से लकड़ी के कुंदों को जोड़ने मे गारे का काम लेता है। पेड़ की डालियों की छाल को यह छील डालता है—क्योंकि वह इसके खाने के काम मे आती है—और तव उन डालियों को कुंदों मे जड़ देता है। इस तरह वीवर सख्त मिहनत करके लकड़ी के कुंदों की दीवार उस धारा के आरपार खड़ी कर देता है और उस दीवार में पेड़ की डालियाँ गारे से जकड़ दी जाती हैं।

अगर धारा का वहाव तेज नहीं होता, तो वाँध एक सीध मे एक किनारे से दूसरे किनारे तक वाँधा जाता है। लेकिन अगर वहाव वहुत तेज होता है तो वीवर टेढ़ामेढ़ा वाँध वाँधता है जिससे

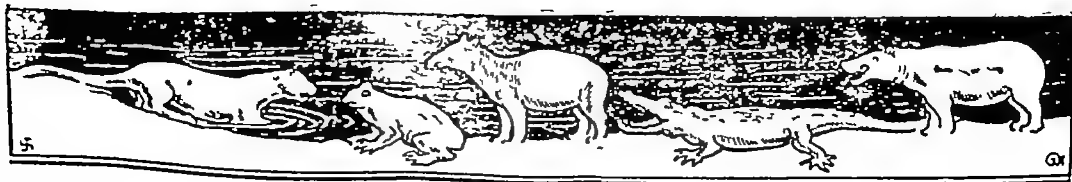


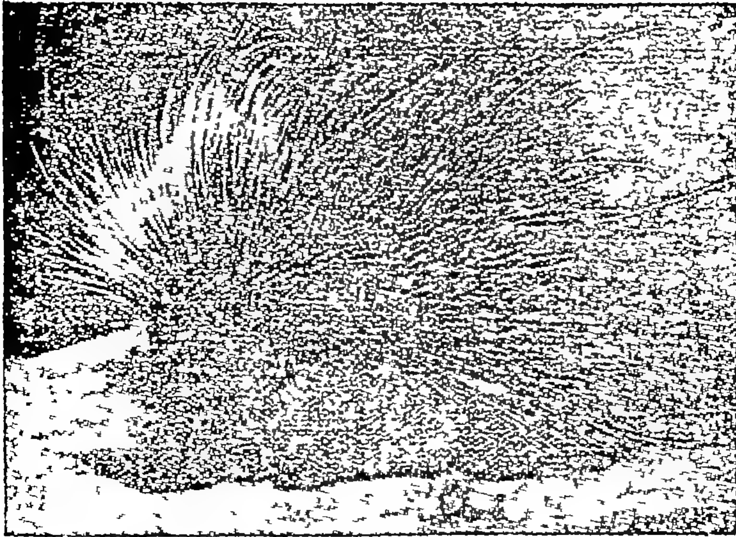


तेज धारा का दवाव बाँध पर नहीं पड़ सके। यह बाँध मेहराव की तरह होता है। बहाव के साथ जो मिट्टी बहकर आती है वह बाँध के साथ जमा होती जाती है। इस तरह कुछ ही समय में एक बडा बाँध बँध जाता है।

बीवर जो घर बनाता है वह छोटी झोपड़ी की तरह होता है। घर बनाने मे भी वे ही सामान काम में लाये जाते हैं जो बाँध वाँधने में। लकड़ी के कुंदो, डालियों और पत्थरों से वह घर बड़े सुन्दर ढंग से तैयार किया जाता है। भीतर की तरफ दो सुरगों से होकर निकलने का रास्ता बनाता है, ये सुरंगें इसके घर से होकर भीतर ही भीतर पानी तक चली जाती हैं। घर का भीतरी हिस्सा बहुत साफ-सुथरा रहता है। कीचड़ के गारे से पलास्तर की गई दीवार और छत इतनी मोटी होती है कि इसका घर एक छोटे किले की तरह मालूम होता है। नीचे जमीन पर घास और टहनियाँ बिछी रहती हैं जो दरी, गलीले और विछावन का काम देती हैं। इसी घर में नर और मादा बीवर तथा उनके बच्चे खूब आराम से रहते हैं।

वर्षों पहले की बात है। कनाडा में एक रेलवे लाइन के पास नदी में कुछ बीवरो ने एक वाँध वाँध दिया। इससे नदी में वाढ़ आ गई और चारों तरफ पानी भर गया। वाढ़ के पानी से रेलवे लाइन को डूवते देखकर रेलवे के अफसरों ने नदी में वीवरो द्वारा बाँधे हुए बाँध को कटवा दिया। वीवरों ने फिर उस बाँध की मरम्मत कर दी। फिर रेलवे के आदमियो ने वाँध काट दिया और फिर वीवरो ने उसकी मरम्मत कर दी। इस तरह पन्द्रह बार वीवरो ने उस वाँध की मरम्मत की। इसके वाद जव इन्होने देखा कि अव वाँध वाँधना वेकार है तव ये वीवर वहाँ से चले गये।





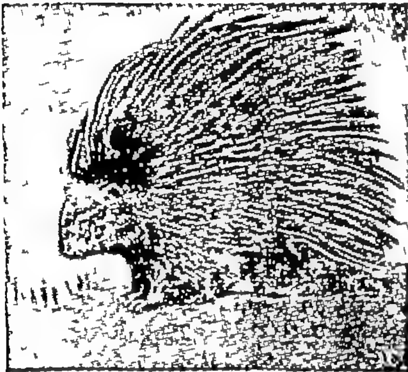
साही

साही पाँच से दस इंच तक लंबा होता है। यह भी जमीन में बिल बनाकर रहता है। हमारे देश में यह जंगल-झाड़ियो मे पाया जाता है। इसकी पीठ पर लंबे नुकीले काँटे होते हैं। ये सब काँटे जब खड़े हो जाते हैं तब यह देखने में बड़ा भयानक मालूम पड़ता है। लेकिन यह बड़ा सीधा जानवर होता है। किसी पर चोट नहीं करता। कुत्ता, सियार, चीता, साँप आदि जानवर जब इसको देखकर इसपर हमला करने के लिये दौड़ पड़ते हैं उस समय यह बिलकुल सिकुड़कर बैठ जाता है। पीठ पर के नुकीले काँटे खड़े हो जाते हैं। साही उस समय एक बड़े





फुटबॉल की तरह देख पड़ता है जिसमें हजारों काँटे खुभे हुए हों। ज्यों ही कुत्ता, सियार या बाघ पास में पहुँचता है, काँटे उसकी देह में चुभ जाते हैं और घाव कर देते हैं। घाव से साही का दुश्मन छटपटाने लगता है और वहाँ से भागकर जान बचाता है।

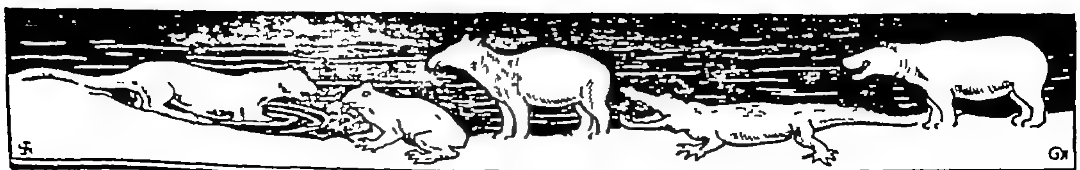


साही—सिकुड़कर बैठे हुए फुटबॉल की तरह दीख पड़ता है।

साही पेड़ की छालों, कोंपलों और पौधों को खाकर जीता है। यह बिना पानी के भी रह सकता है। जब यह चलता है, इसकी देह पर के काँटे आपस में रगड़ने से एक तरह की आवाज करते हैं। इसी आवाज से लोग जान जाते हैं कि साही आ रहा है

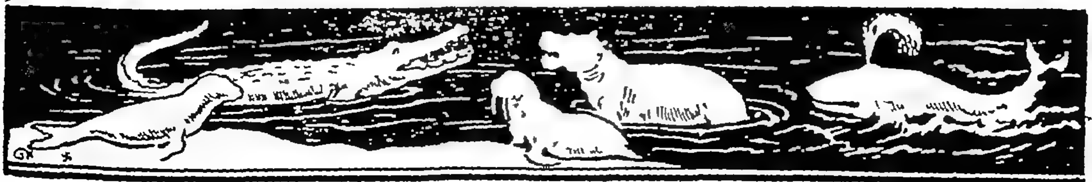
साही के काँटे की कलम से क्या तुमने कभी लिखा है ?





चमगादड़

कुछ जानवर ऐसे होते हैं जो अँधेरे में रहना पसंद करते हैं। दिन का उजाला इन्हें अच्छा नहीं लगता। शाम होने पर अँधेरे रात मे ये शिकार की खोज में चुपचाप निकलते हैं। चूहा, छछूंदर, उल्लू पक्षी और चमगादड़ इसी तरह के जानवर हैं।



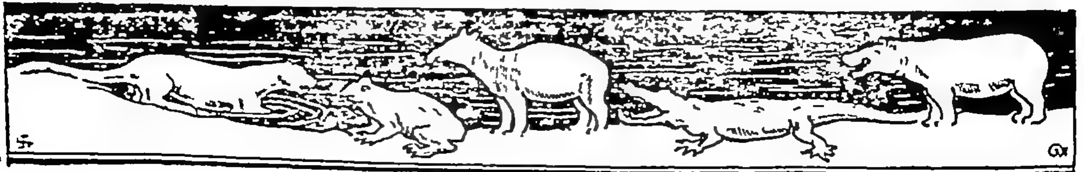


चमगादड तो तुमलोगो ने जरूर देखा होगा। गर्मी के दिनो में शाम होने पर जब तारे आसमान में चमकने लगते हैं और दिन-भर के थके-माँदे सब पक्षी अपने घोंसलो में आराम करने के लिये चले जाते हैं उस समय कुछ काली-सी चीज घर की छत या छज्जे के ऊपर या उसके आसपास उड़ती हुई दीख पड़ती है वह क्या है? तुम फौरन् कह उठोगे कि यह कोई रात की चिड़िया है। लेकिन यह चिड़िया नही है, चमगादड़ है जो अँधेरे मे शिकार करने निकला है। उड़ते हुए देखकर लोग इसे एक किस्म की चिड़िया समझते हैं। लेकिन, असल मे यह चिड़िया न होकर जानवर है। और, जानवर भी उसी तरह का जिस तरह के बन्दर, घोड़ा वगैरह हैं। चिड़िया अंडा देती है और उसमे से बच्चा निकलने पर उसे कीड़े-मकोड़े खिलाती है। लेकिन चमगादड़ अंडा नहीं देता और अपने बच्चे को उसी तरह दूध पिलाता है जिस तरह भेड़ या बकरी। चमगादड़ के बारे में तुमलोग कितनी ही तरह की बातें सुनोगे।



चमगादड की एक दूसरी जाति

घर में चमगादड का रहना अशुभ समझा जाता है; लेकिन है यह बहुत सीधा जानवर। यह फलों और कीडो-मकोडों को खाकर जीता है और पेड़ की डाली मे पैर लटकाकर सिर को झुलाते हुए बडे आराम से सोता है। फिर भी लोग इसे बुरा समझते हैं। क्यों? शायद इसलिये



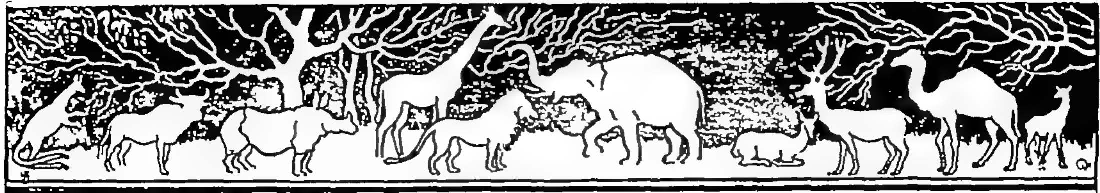


कि यह देखने में वड़ा कुरूप होता है और इसकी तरह सिर नीचे लटकाकर और कोई भी प्राणी नहीं सोता। दूसरी वात यह है कि यह अँधेरी रात मे वाहर निकलनेवाला जानवर है। सारा दिन सोने में विताता है और रात मे झुण्ड वाँधकर शिकार की खोज में निकलता है।

राक्षस चमगादड

चमगादड़ के डैनों को अगर तुम देखो तो अचरज किये विना नहीं रहोगे। ये डैने पतले-पतले धागों से वड़े ही सुन्दर ढंग से जालीदार वुने हुए होते हैं जिससे छाते की तरह मालूम होते हैं।

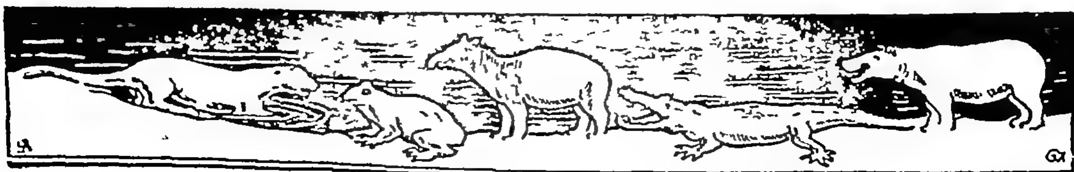




अगर इस जालीदार छाते को हटा दो तो तुम्हे एक नन्हा-सा जानवर दीख पड़ेगा जिसके दो हाथ और दो पाँव होते हैं। हाथों में अँगुलियाँ भी होती हैं, लेकिन और ही ढंग से बनी हुई रहती हैं। अँगूठा बहुत छोटा होता है और उसमें नाखून के बदले चंगुल होता है। जब यह उड़ता नहीं रहता तब इसी चंगुल के बल पर चलता है या किसी चीज में चंगुल अटकाकर लटक जाता है। इसके कद को देखते हुए इसके डैने काफी चौडे होते हैं। इसकी आँखें इस तरह बनी हुई होती हैं कि दिन के उजाले को यह सह नहीं सकता, लेकिन रात में बहुत अच्छी तरह देख सकता है। अँधेरे में भी इसे इस बात का पता चल जाता है कि दूसरी तरफ से कोई आ रहा है या नहीं। आकाश में उड़ते हुए किसी के साथ इसका धक्का नहीं लगता। संसार में जितने जीवजन्तु होते हैं सब रहने के लिये अपना-अपना घर बनाते हैं, लेकिन चमगादड़ को इसकी जरूरत नहीं होती। कहीं कोई भी चीज चंगुल से पकड़ने के लिये मिल जाय बस उससे ही लटककर अपना काम चला लेता है। एक-एक पेड़ पर हजारों चमगादड अपना अड्डा जमा लेते हैं। ये दिन-भर सोते हैं और रात में घूम-फिरकर अपना पेट भरते हैं। सिर्फ कीडे-मकोडे खाकर ही ये नहीं रहते, बल्कि बाग-बगीचों के फलों को भी खा डालते हैं। इसलिये चमगादड हमलोगों का नुकसान भी कम नहीं करते।

पचासों किस्म के चमगादड़ होते हैं। उत्तर और दक्खिन अमेरिका में एक किस्म का चमगादड़ होता है जो पंख फैलाने पर आरपार पाँच फीट होता है। यह 'उड़नेवाली-लोमड़ी' कहलाता है, क्योंकि इसकी देह पर लाल और भूरे रंग के रोयें होते हैं और इसका सिर लोमड़ी की तरह होता है। यह बड़ा पेटू होता है और फसलों को बहुत नुकसान पहुँचाता है।

एक तरह का चमगादड ऐसा होता है जो आदमी का खून चूस लेता है। इसे Vampire यानी 'राक्षस चमगादड़' कहते हैं। यह सोते हुए घोडे, गाय, बैल और पालतू चिड़िये पर भी हमला करता है। अपने तेज दाँतो से यह अपने शिकार के मास में एक छोटा-सा सूराख कर देता है और उससे होकर बहुत-सा खून चूस लेता है। यह देखने मे बहुत छोटा होता है—कुल तीन इंच; लेकिन पंख पसारने पर बारह इंच तक होता है। किसी जमाने मे यह समझा जाता था कि चमगादड का काटा





हुआ आदमी मर जाता है, लेकिन यह बात ठीक नहीं है। हाँ, सोते हुए मनुष्य पर यह कभी-कभी चोट कर बैठता है। और, यह भी उस हालत में जब उसके पाँवों की अँगुलियाँ चादर या रजाई से बाहर निकली रहती हैं। इसी जगह पर काटकर यह खून चूस लेता है। इसके पेट में एक थैली होती है जिसमें यह कई दिनों के लिये खाना भर लेता है। इसलिये यह जितना खून चूसता है, वह बहुत थोडा नहीं होता। एक बार मे यह दवा पीने के छोटे गिलास मे जितना अँट सके, उतना खून चूस लेता है। यूरोप और अमेरिका के चिड़ियाखाने में इस जाति के जो चमगादड़ हैं उन्हें रोज दो गिलास खून पीने के लिये दिया जाता है। जब यह छोटी-छोटी चिड़ियो का खून चूसता है तब वे फौरन् मर जाती हैं। गाय-घोड़े भी कमजोर हो जाते हैं। आदमी को अगर बार-बार यह चमगादड़ काट खाये तो उसकी क्या दशा होगी, यह कौन कह सकता है?

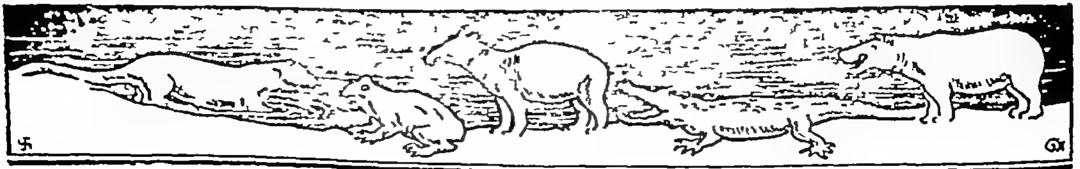




मेढक

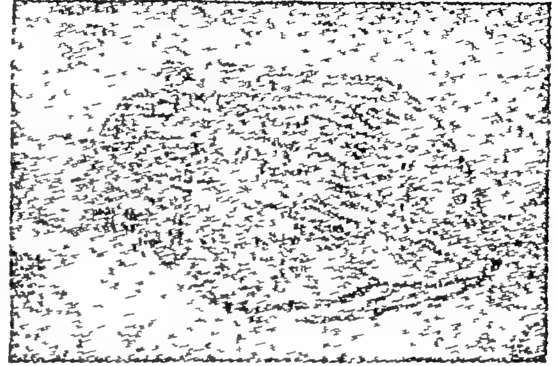
किसी समय यूरोप के लोगों में यह विश्वास फैला हुआ था कि मेढक के माथे पर कहीं एक मणि छिपी हुई रहती है। इस विश्वास के कारण न मालूम वहाँ कितने मेढको की जानें गई होंगी। इतना ही नहीं, बल्कि अब भी संसार के बहुत-से देशो में लोग यह समझते हैं कि मेढक देखने में जिस तरह बदसूरत होता है उसी तरह उसका थूक भी जहरीला होता है; लेकिन असल में न तो मेढक के सिर पर मणि ही होती है और न इसके थूक में विष। इस सयम तो यूरोप और अमेरिका के देशों में वहाँ के अमीर लोग बड़े शौक से मेढक का मास खाते हैं।

आम तौर से मेढक दो से ढाई इंच तक लंबे होते हैं। मगर कहीं-कहीं इनसे बडे मेढक भी पाये जाते हैं। सबसे बडा मेढक पच्छिम अफ्रिका मे देखा जाता है। यह बारह इंच से कम लंबा नहीं होता। कुछ दिन पहले लन्दन के चिडियाखाने के लिये इस जाति का एक मेढक एक पीपे में बंद करके जहाज पर लाया जा रहा था। पीपे के मुँह पर ढकन लगा हुआ था। लेकिन मेढक एक





दिन एकाएक उस ढक्कन को ठेलकर बाहर निकल आया और एक छलाँग में ही कूदकर समुद्र में पहुँच गया। इसके बाद इस जाति के मेढक का फिर पता नहीं चला।



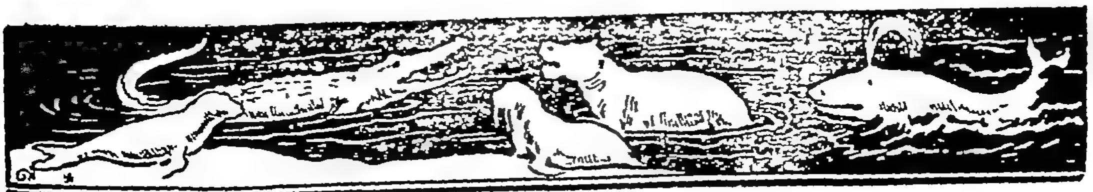
चितकबरा मेढक

गर्चे आम तौर से मेढक दो-ढाई इंच तक लंबे होते हैं, लेकिन भरपेट खाना मिलने पर ये आकार में बढ़ भी सकते हैं। दक्षिण यूरोप में ज्यादातर ६ इंच तक के मेढक देखे जाते हैं। एक और खास बात यह है कि नर मेढक से मादा मेढ़क कद में बड़ी होती है।



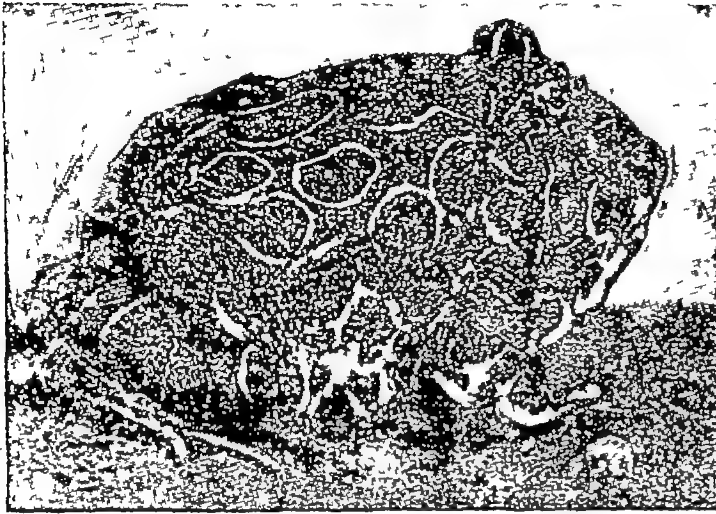
मेढक की एक उपजाति

मेढक कितने दिनों तक जिन्दा रह सकता है, यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। लेकिन ब ु त तरह के मेढको को बक्स मे रखकर और वहाँ उनके लिये खाने-पीने का काफी सामान देकर जाँच करने से पता चला है कि अमूमन् मेढक पन्द्रह वर्ष या इससे कुछ अधिक समय तक जिन्दा रह सकते हैं। इसके सिवा जाँच से यह भी मालूम हुआ है कि बिना खाये-पिये मेढक एक या डेढ़ साल से ज्यादा दिनों तक नहीं रह सकता। मेढक को कभी-कभी छोटी चिड़ियो का शिकार





करते भी देखा गया है।बड़े आकार का मेढक अकसर छोटे कद के मेढक को पकड़कर खा जाता है।



दक्षिण अमेरिका का मेढक

ब्राजिल (अमेरिका) में एक किस्म का मेढक होता है जिसके सिर पर दो सींग होते हैं। इसकी देह पर हरे, काले, लाल, सादे और कत्थई रंग के दाग होते हैं जिससे यह देखने में बहुत चटकीला मालूम पड़ता है। यह लंबाई में पाँच इंच से कम नहीं होता। यह दूसरी किस्म के मेढकों को तो खाता ही है, अपनी जाति वालो को भी नहीं छोड़ता !

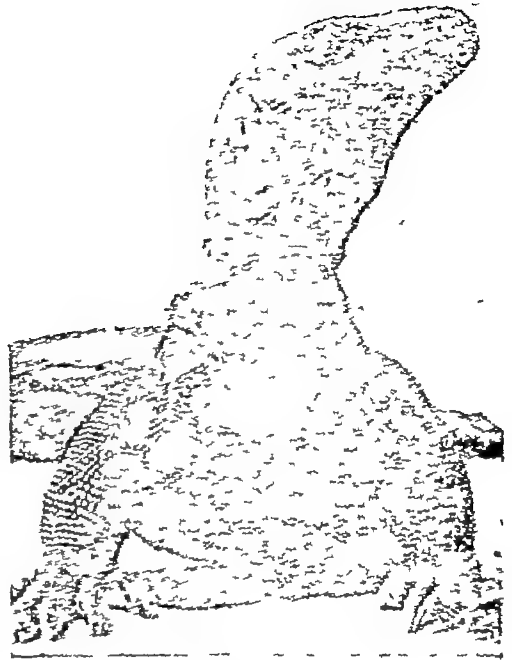
उत्तर अमेरिका का मर्द मेढक भी बड़े आकार का होता है। यह सात इंच तक लंबा होता है। इसका मुँह बहुत बड़ा होता है। यह सब कुछ खाता है—मछली से लेकर कीड़ों-मकोड़ों और चिड़ियों के बच्चों तक को नहीं छोड़ता।



सींगोवाला मेढक

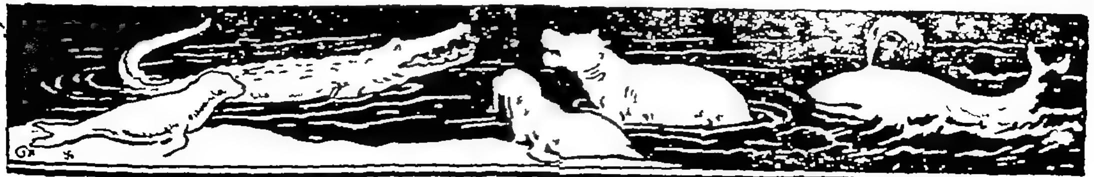
बरसात मे किसी नाले, चहबच्चे, गढे या तालाब के किनारे सैकडों की तादाद में इकट्ठे होकर जब मेढक कौन्सर्ट पार्टी का समाँ बाँधते हैं उस समय इनकी आवाज आधी मील तक सुनाई पड़ती है। दूर से मालूम होता है, जैसे संस्कृत के छात्र पाठ याद कर रहे हों—"वेद पढहि जिमि बटु समुदाई।"

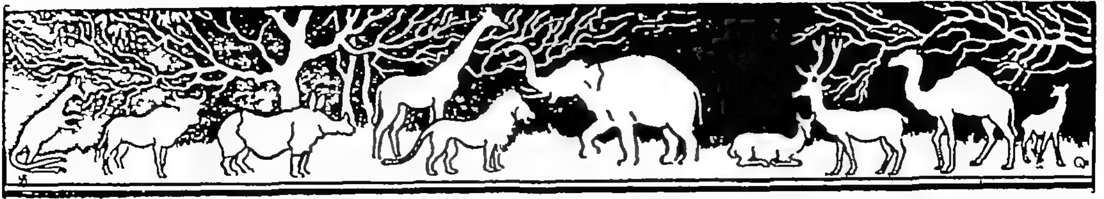
गिरगिट


राक्षस गिरगिट

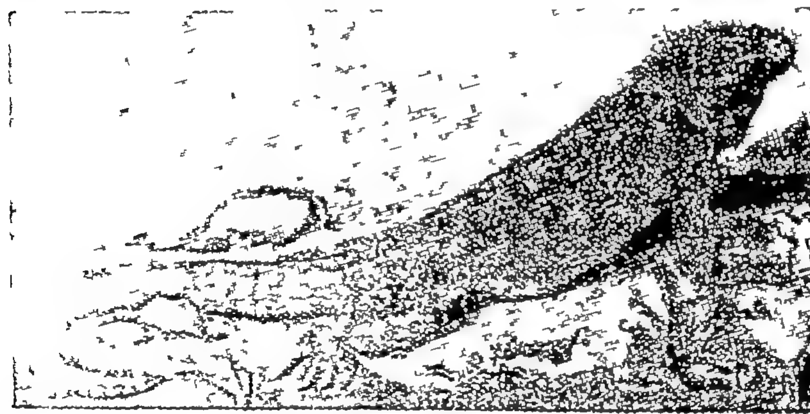
कुछ जीवजन्तु ऐसे होते हैं जो छाती और पेट के बल रेंगते हुए चलते हैं। अँगरेजी मे इस जाति के जानवरों को Reptile यानी जमीन पर रेंग कर चलनेवाले जीव कहते हैं। साँप, घड़ियाल, मगर, विच्छू, गिरगिट, सनगोह वगैरह इसी तरह के जानवर हैं। इनमे साँप और गिरगिट को अगर तुम गौर से देखो तो दोनो के बीच जो भेद है वह साफ-साफ दिखाई पड़ेगा। गिरगिट के पाँव साफ-साफ देखे जा सकते हैं, उसकी दुम और धड़ अलग-अलग होती है। मगर साँप के पाँव नहीं मालूम पड़ते, सिर के बाद उसके शरीर का और कोई हिस्सा अलग-अलग नहीं दिखाई पड़ता। सनगोह भी गिरगिट की जाति का ही एक जानवर है। घड़ियाल या मगर से यह बहुत-कुछ मिलता है।

सैकड़ों किस्म के गिरगिट पाये जाते हैं। सिर्फ ऐसे देशो को छोड़कर जहाँ बर्फ बराबर जमी रहती है कभी पिघलती नहीं; गिरगिट और सभी जगह पाये जाते हैं। जिन देशों मे काफी गर्मी पड़ती है वहाँ के गिरगिट कद में बड़े होते हैं। घडियाल या मगर से भी बडा गिरगिट देखा जाता है।





हमारे देश से बहुत पूरब डच ईस्ट इंडीज के कोमोडो टापू में एक किस्म का गिरगिट पाया जाता है जो पन्द्रह फीट तक लंबा होता है। यों आमतौर से यह नौ-दस फीट तक लंबा होता है। गिरगिट की जितनी जातियाँ हैं उनमें यह सबसे बढकर जबरदस्त होता है। साँप की तरह ही इसकी जीभ दो हिस्सों में बँटी हुई रहती है। दाँत बहुत जोरदार होते हैं। यह कोमोडो द्वीप के सिवा और कहीं नहीं देखा जाता। वहाँ यह धूप से झुलसी हुई पत्थर की चट्टानों पर सारा दिन लेटा रहता है और रात में खोह में जाकर सोता है। अपने लिये खोह यह खुद तैयार करता है। चूहा, मुर्गा या इसी तरह जो छोटे-छोटे पशु-पक्षी पास में आ जाते हैं उन्हीं को पकडकर यह खा जाता है। लंदन के चिड़ियाखाने में एक जोड़ा यह गिरगिट है जिसके लिये खोह तैयार कर दी गई है। बिजली से गर्म करके पत्थर की चट्टान रख दी गई है। तैरने के लिये तालाब और चढने के लिये लम्बे ताड़ के पेड हैं। ठीक कोमोडो टापू की तरह यह जगह बना दी गई है। इसकी देह में बडा जोर होता है। एक बार चिड़ियाखाने में एक आदमी चम्मच से इसे अंडा खिला रहा था। अडे को जोर से पकडते हुए इसने चम्मच तक को तोड़ डाला। लेकिन इससे यह नहीं समझो कि यह गर्म मिजाज का होता है। यह इतना सीधा होता है कि छोटे बच्चे भी इसकी देह पर हाथ सहला सकते हैं।



'मनिटर' गिरगिट

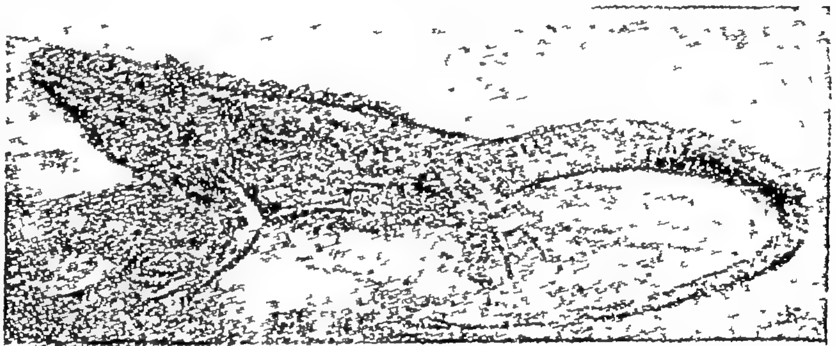
कोमोडो टापू में पाये जानेवाले इस गिरगिट को मनिटर जाति का गिरगिट कहते हैं।





इस जाति के दूसरे गिरगिट हिन्दुस्तान और अफ्रिका की नदियो में पाये जाते हैं। यह भी छः-सात फीट तक लंबा होता है। इसके रंगबिरंगे चेहरे को देखकर आश्चर्य होता है। यह छोटे से बड़े कद तक का होता है। यह घड़ियाल के अंडों और उनके छोटे-छोटे बच्चो को खाता है। लेकिन बड़े-बड़े घड़ियाल इसे पकड़कर निगल जाते हैं।

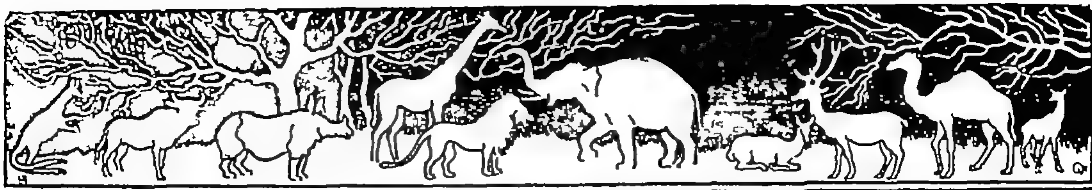
आम तौर से घरों की दीवार और छतों में जो गिरगिट देखे जाते हैं वे कद मे सब से छोटे होते हैं। दीवारों और छतो पर मक्खियो की तरह इन्हे दौड़-धूप करते हुए देखकर अचंभा होता है। मक्खियों की तरह ही यह दीवारो पर दौड सकता है, छतो को आरपार कर सकता है और ऊपर से नीचे की तरफ चल सकता है। इसके पॉव ही इस तरह बने हुए होते हैं जिससे यह चिकनी दीवारो या दूसरी सतहो पर आसानी से दौड़ सकता है। सबसे बड़े अचंभे की बात उस समय मालूम पड़ती है जब यह किसी चिकने पेड़ पर चढ़ जाता है और सिर को नीचे करके चलता है। कुछ लोग यह समझते हैं कि इसके पॉव मे एक किस्म का जहर होता है जिससे यह आदमी के खाने की चीजों पर चलकर उन्हें जहरीला बना देता है। लेकिन यह बात सच नहीं है।



इगुयाना

गिरगिट की जाति का एक दूसरा जानवर 'इगुयाना' या सनगोह है। यह दक्षिण और मध्य अमेरिका मे पाया जाता है। वहाँ के लोग इसे खाते भी हैं। यह तीन से पाँच फीट तक लंबा होता है और खास कर पेड़ों पर रहता है। इसका रंग हरा होता है जिससे यह पेड़ की हरी पत्तियों मे





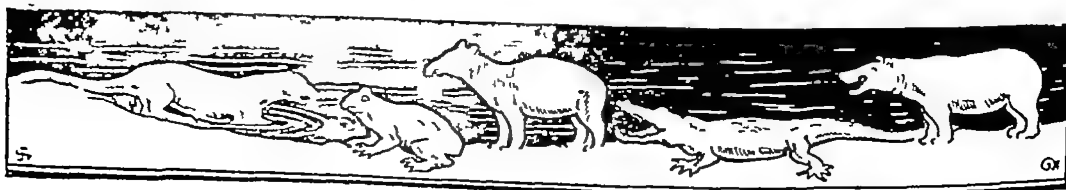
छिप जाता है। प्रशान्त महासागर के गलापेगस टापू में जो इगुयाना पाया जाता है वह अमेरिका के गिरगिटो मे सब से बडा होता है। यह पानी में भी पैर सकता है। पहले लोग इसे समुद्र-जल मे तैरते हुए देखकर यह समझते थे कि यह छोटी-छोटी मछलियों को पकड़कर खाता है। लेकिन बात ऐसी नहीं है। यह समुद्री घासो को छोडकर और कुछ नहीं खाता। तैरने की सुविधा के लिये इसकी पूँछ चिपटी होती है और सिर पर काँटे होते हैं। यह काफी देर तक पानी मे डुबकी लगाये रह सकता है।

गलापेगस टापू का इगुयाना किसी चिडियाखाने मे नहीं देखा जाता। बन्दी दशा मे यह कुछ भी नहीं खाता। बिना खाय यह बहुत दिना तक रह सकता है। अमेरिका के प्राफेसर विलियम बीब कई जिन्दा इगुयाना पकडकर न्यूयार्क ले आये थे। एक हजार मील के सफर मे जहाज पर इसने समुद्र का खारा जल और हवा के सिवा और कुछ नही खाया। इसके बाद भी दो महीने तक कुछ नहीं खाया। फिर भी इसकी फुर्ती में कुछ भी कमी नहीं देखी गई।



लाखो वर्ष पहले का गिरगिट

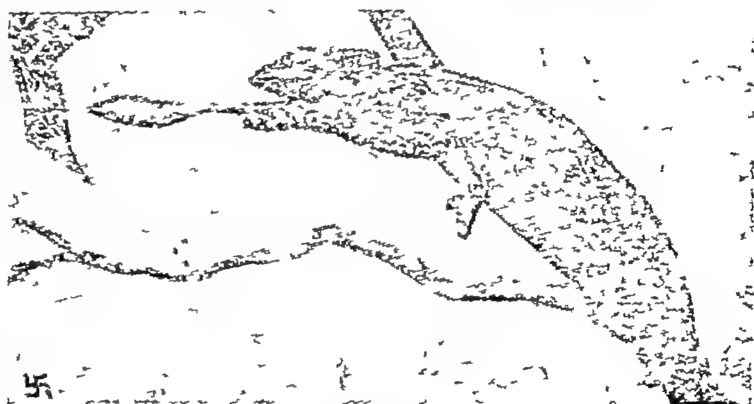
एक किस्म का इगुयाना होता है जिसे सींगोंवाला इगुयाना कहते हैं। यह वेस्ट इंडीज के हाइती और पोर्टोरिको द्वीपो मे पाया जाता है। इसका शरीर मजबूत होता है। रंग मटमैला, माथा चौड़ा और गले के पास एक थैली लटकती रहती है। पीठ के ऊपर काँटे होते हैं। नाक के ऊपर तीन सींग निकले रहते है। इसे पकडना आसान नहीं है। यह मिट्टी के नीचे बहुत





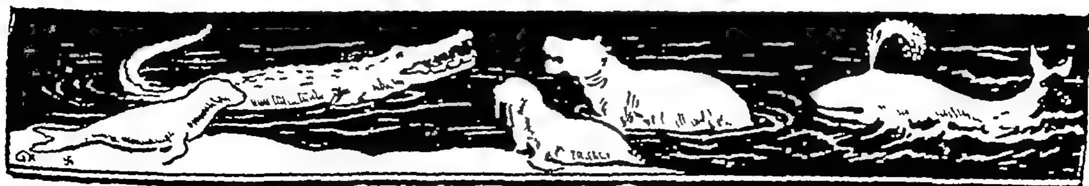
गहरी सुरंग खोदकर रहता है। पत्थर के बीच भी चालीस फीट तक इसकी सुरंग पाई जाती है। उस सुरंग में से इसे बाहर करना भी आसान नहीं है; क्योंकि इसका स्वभाव कुछ खूँखार भी होता है।

अब तुम्हें उस गिरगिट का हाल बताता हूँ जो अपने को चाहे जब जिस रंग में बदल सकता है। इसका नाम चमेलियन है। "गिरगिट की तरह रंग बदलना"—यह मुहावरा जो तुम सुनते हो और पढ़ते हो वह इसी चमेलियन गिरगिट के बारे में कहा जाता है। यह बड़ा सुस्त होता है और लंबाई में एक फुट से ज्यादा नहीं होता। इसकी जीभ ६ इंच लंबी होती है जिससे यह मक्खियों को पकड़ लेता है। यों इसका रंग भूरापन लिये हुए काला होता है, लेकिन इसके चमड़े के नीचे दो परतें होती हैं—एक चमकीले पीले रंग की और दूसरी गाढ़े बादामी रंग की। इन्हीं रंगो की मिलावट से चमेलियन अपने-को कितने ही रंगों में बदल सकता है। कभी इसका रंग जेब्रा की तरह धारीदार और कभी चीता-बाघ की तरह चितकबरा हो जाता है। कभी इसका रंग बिलकुल हरा हो जाता है। जब यह अपने रंग को बिलकुल बदलना चाहता है यह जोर से साँस लेता है जिससे इसकी देह बहुत फूल जाती है और तब इसके बाद ही इसका रंग बदल जाता है।



चमेलियन

चमेलियन गिरगिट इस तरह रंग बदलता है, इसकी क्या वजह है, जानते हो? बात यह है कि पेड़ पर इधर-उधर चलता-फिरता रहता है, यह नहीं चाहता कि पेड़ों पर चढ़ने वाले साँप इसे देख सकें। इसीसे यह अपना रंग बदल लेता है; ताकि धूप में पेड़ की टहनियों और





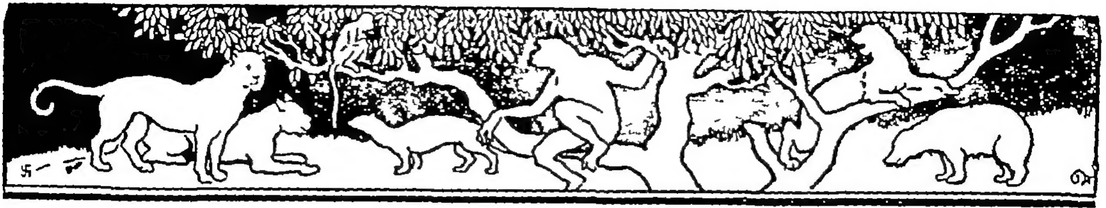
पत्तियों के बीच इसकी देह पर के धब्बे और लकीरें भी उसी रंग मे दिखाई पड़ें। इसी तरह सूरज के छिप जाने पर इसका असली रंग हरी पत्तियों में छिप जाता है। चमेलियन की आँखें भी बड़ी



तुआतरा

विचित्र ढंग से बनी हुई होती हैं। यह अपनी आँखों को किसी भी दिशा मे घुमा फिरा सकता है। इतना ही नहीं, वल्कि एक आँख से यह ऊपर की ओर देखता है और दूसरी आँख से नीचे की ओर। एक आँख से सामने की ओर देख सकता है और दूसरी आँख से पीछे की ओर। यह गिरगिट लंबाई





में सिर्फ एक फुट होता है; लेकिन इसकी जीभ ६ इंच लंबी होती है। जब कोई मक्खी या कीड़ा इसके पास पहुँचता है यह झट अपनी जीभ निकालकर उसे पकड़ लेता है और अगर मक्खियाँ या कीड़े इसके पास नहीं आवें तो भी यह परवा नहीं करती। क्योंकि यह महीनों तक विना कुछ खाये रह सकता है।

साँप, कछुए, मगर और गिरगिट की जाति का ही एक जानवर है तुआतरा, जो सिर्फ न्यूजीलैंड मे पाया जाता है। इनमे किसी के साथ भी यह इसकी बहुत ज्यादा समानता नहीं है; लेकिन बाहर से देखने में यह गिरगिट से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है। दो आँखों के सिवा इसे एक और आँख होती है जो चमड़े से ढँकी हुई होती है। इसके जबड़े की हड्डी से इसके तेज दाँत निकले हुए होते हैं जो और जानवरों की तरह अलग नहीं किये जा सकते। इसकी औसत लंबाई २ फीट होती है जिसमें एक तिहाई इसकी पूँछ होती है। यह ज्यादातर चलना-फिरना पसंद नहीं करता। समुद्र के किनारे एक प्रकार के जलपक्षी के साथ एक ही विल में यह रहता है। गर्मी में दोनों मिलकर उसमें रहते हैं और जाड़े में सिर्फ तुआतरा ही रहता है। कभी-कभी दोनों विल की एक ही कोठरी में इस तरह रहते हैं मानो एक को दूसरे की कोई खबर ही नहीं हो। दिन में दोनो सोते हैं और रात में तुआतरा अपने आहार—कीड़े-मकोड़ो की खोज में निकलता है। जाड़े मे सब पक्षी अपने बाल-बच्चों के साथ देश छोड़कर चले जाते हैं तुआतरा विल को और भी गहरा खोदकर अपने लिये सोने की सुरंग बना लेता है जहाँ यह जाड़े भर सोया रहता है। गर्मी में इसकी भूख खूब जगती है, लेकिन उस समय भी यह बहुत ज्यादा नहीं खाता। कहते हैं कि लाखों वर्ष पहले यह आकार मे बहुत बड़ा होता था और उस समय पानी में तैर सकता था।





मुद्रक—
शिवनाथ प्रसाद, यादव
कैलाश प्रिंटिंग वर्क्स, हरतीरथ, वाराणसी ।